प्रकाशकोनुं निवेदन

सन १९६४ मां गुजरात साहित्य सभाने स्थपाये ६० वर्ष पूरां थयां होई सस्थानो हीरक महोत्सव ऊजववानो निर्णय करवामा आव्यो छे, ए अगे विविध प्रकाशनो पण करवानी योजना विचारवामा आवी छे. जणावतां अमने आनन्द थाय छे के आ योजनाना प्रथम फळ तरीके, न्यू स्वदेशी मिल्स, लि० ना व्यवस्थापक श्री श्रीकृष्ण अग्रवालजी नी सपूर्ण द्रव्यसहायथी "**नरसैं महेतानां पद**" आ ग्रन्थनु प्रकाशन '**हीरक महोत्सव ग्रन्थमाळा**" ना ग्रन्थांक १ ला तरीके प्रसिद्ध करवानो सुयोग प्राप्त थयो छे.

जणावता अमने एनो पण आनन्द थाय छे के नरसैं महेताना पदोनु जूनी हाथप्रतने आधारे आ पहेलु ज शास्त्रीय सपादन छे अने ए रीते '. हारमाळा " " राससहस्रपदीनो समुद्धार " अने "चातुरीओ ' पछीनु आ चोथु प्रामाणिक सपादन छे आ पद-सग्रहनी एक विशिष्टता ए पण छे के एमा २०८ पदो एवा छे के जे प्रथम वार ज जाणवामा आव्या छे. आम आ प्रकाशन एकथी वधु रीते महत्त्व धरावी रहेशे एवी अमने श्रद्धा छे.

आ प्रकाशन पाछळ नाणानी सहाय आपवा बदल अमे श्री श्रीकृष्ण अग्रवालजीना पूर्ण आभारी छिये.

वेलेन्टाइननी हवेली,
त्रण दरवाजा,
अमदावाद
ता. १-१-१९६५

चैतन्यप्रसाद मो. दीवान
केशवराम का. शास्त्री
धीरजलाल ध. शाह
मन्त्रीओ : गुजरात साहित्य सभा

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना

गुजरात विद्यासभाना हस्तलिखित ग्रन्थसंग्रहना संचालननी जवाबदारी मळी त्यारथी एक भावना थई प्रदीप्त थनी के गुजराती जूना साहित्यना अग्रगण्य सर्जकोनी रचनाओनी प्रामाणिक वाचनाओ तैयार करवी तेमज करावी अने एनुं प्रकाशन कराववुं. गुजरात विद्यासभाना संशोधन विद्याभवनथी ए रीते 'हंसाउलि'नुं प्रकाशन थयुं. प्रो. डॉ. भोगीलाल ज. सांडेसराए संपादित सत्तरमा शतकनां गुजराती काव्योनुं प्रकाशन गुजरात विद्यासभा द्वारा, 'नरसिंहनी चातुरीओ'नुं कु. चैतन्यबाळा ज. दिवेटियाथी संपादित थये फार्बस गुजराती सभा द्वारा, प्रेमानन्दनां चंद्रहास-सुधन्वा-अभिमन्युनां आख्यानोनुं कु. चैतन्यबहेनने सहायमां लईने गुजराती साहित्य परिषद द्वारा, प्रकाशन थयुं. प्रेमानन्दनो 'विराट' 'हूंडी' अने 'श्राद्ध' छपायां, पण हजी प्रकाशित थयां नथी; 'मामेरु' कु. चैतन्यबहेन द्वारा फार्बस गुजराती सभा माटे प्रेसमां गयुं छे. भो जे. विद्याभवनने प्रो. रसिकलाल छो. परीखनी सहायमां 'भागदासनी गरबीओ'नी वाचना छापवा माटे तैयारमां आवी छे आ पूर्वे भक्तकवि दयारामना 'रसिकवल्लभ'नी प्रामाणिक वाचना 'गुर्जर ग्रन्थरत्न कार्यालय' – अमदावाद द्वारा प्रसिद्ध थई चूकेली छे अने दयारामना अद्भुत आत्मप्रसंगोने निरूपती व्रजभाषामां रचायेली 'अनुभवमंजरी' अत्यारे छपाये जाय छे

गुजराती भाषाना क्रमिक अभ्यासमां उपयोगी थाय ए दृष्टिए आ शास्त्रीय वाचनाओ जूना ग्रंथोनी प्रसिद्ध करवानो एक मात्र शुभ उद्देश छे.

अहीं प्रसिद्ध थतां नरसिंह महेतानां पदोमांनां लगभग अर्धां जेटलां पदो तो आ पूर्वे, सार करीने स्व. इच्छाराम सूर्यराम देसाईए मुंबई-

गुजराती प्रि. प्रेस द्वारा 'बृहत्काव्यदोहन'ना विविध भागोमां छपावेलां अने एमणे ज एना उपरथी तारवी, व्यवस्थित संकलित करी तैयार करेली वाचनाना रूपमां एमना आत्मज स्व. मणिलाले प्रसिद्ध करेला "नरसैं महेताना पदसंग्रह" मां आवी जाय छे. कयुं पद ए संग्रहमां कया शीर्षक नीचे मळ्यां छे एनो निर्देश पदोना मथाळे जमणी बाजुए कारखूणिया कौंसमां करवामां आव्यो छे. ज्यां एवो निर्देश नथी ते पदो पहेली वार ज मळ्यां छे अने प्रसिद्ध थाय छे. ग्रन्थान्ते आपेला "परिशिष्ट १" मां पदोना अकारादि क्रममां आवां नवां २०८ पद * फूदडीथी बताववामां आव्यां छे.

वाचनानुं संपादन अने हाथप्रतो

प्रसिद्ध थती वाचनामांनां प्रथमनां १५ पदो गु. वि. सभाना ह. लि. ग्रं. सं. नं. ६९ नी सं. १६६८ जेटली जूनी प्रतमांथी लीधां छे. आमांनुं १३ मुं पद जुदा हाथे अने तेथी थोडुं मोडुं पण लखायेलुं संभवे. नरसिंह महेतानां पदोना संग्रहोनी मळती जूनामां जूनी हाथप्रत अत्यारे तो आ ज छे. आ पछीनी 'हारसमे'नां ७ पदो आपती सं. १६७५ नी एक प्रत गु. वि. सभा ह. लि. ग्रं. सं. नं. १८९नी मळे छे, जेनो उपयोग मारा तरफथी थयेला 'हारसमेनां पद अने हारमाळा'ना संपादनमां करी लेवामां आव्यो छे.

अंक १६ थी ३९० सुधीनां ३७५ पद गु. वि सभा ह. लि. ग्रं. सं. नं. १६४ नी लगभग सं. १७०० आसपासनी एकमात्र प्रत उपरथी संपादित करी रजू करवामां आव्यां छे. आ ए ज प्रत छे के जेनो उपयोग कु. चैतन्यबहेने मुख्य प्रत तरीके राखीने नरसिंह महेतानी 'चातुरीओ'ना संपादनमां कर्यो हतो. आ प्रतमां आरंभमां आदि त्रूटक दशामां पा. १२(अ)थी १३(अ) सुधीमां नारायणदासनो 'नवरस', पा. १३(अ)थी १६(अ) सुधीमां "विष्णुपद" ना अंतिम निर्देश साथे नरसिंह महेतानी प्रायः रागवार मळती रागमाळानां ३७५ पदो,

पा. १६४(ब)थी १६६(ब) द्वारसमेनां झूलणानां ९ पदो, पा. १६७(अ)थी १७२(अ) सुधीमां 'चातुरीओ' नां ९ पदो, पा. १७२(ब)थी १७४(ब) सुधीमां त्रणेक हाथे गुज. सं. तूटक पदो—श्लोको, पा. १७५(अ)थी १८२(ब) सुधीमा 'चातुरीओ' (२५ पदोनो क्रम)नी १४२ कडीओ, अने पछीनां १२ पानांओमां छूटक पदो बारमासी वगेरे (तद्दन जीर्ण दशामां) छे

. . नरसिंह महेतानां आ पदोनी **पुष्पिकामां इति श्रीविष्णुपद समाप्त** एवुं विधान छे, एटले आ ३७५ पदो 'विष्णुपद' तरीके जाणीतां हशे एम समझाय छे आ ३७५ पदोमां एक मात्र नं. २३९ नुं पद कोई 'पीतांबर'नु दाखल थई गयु छे, बाकीनां बधां ज पद नरसिंह महेतानी छाप धरावे छे. आरंभमां मुद्रित १५ पदोमांनां न. १, २, ६, ७, ८, ९, १२ अने १३ नां ८ पद आ ३७५ ना संग्रहमां अनुक्रमे ११७ ११३, ११४, ११५, ११६, १३६, ११९ अने २४० तरीके मळे ज छे; पाठांतर ठीक ठीक होई एने त्या त्यां जतां कर्यां नथी. ए रीते नरसिंह महेतानां ३८२ पद आ संग्रहमां संगृहीत थयां छे

अहीं मुद्रित थतां पद प्रतमां शरूमां तो विषयवार, पछी तो रागवार आपवामां आव्यां छे, अने त्या त्यां हांसियामां पण मथाळे या बाजुमां पूरां थतां अने शरू थता ते ते विषय के रागना पदोनी संख्या पानाना निर्देश साथे आपवामां आवी छे; जेमके

"पा. १३(अ) [हवे हींडोलाना पद] पाना २६ शुधी कीरतन २५
पा. २६(ब) अने २७(अ) बेउ स्थळे हींडोलाना क्रिरतन २५
पा. २७(अ) [सरद उछव] पांने ४० शुधी क्रितेन २७
पा. ४१(अ) शरदरूतनां कीरतन २७
ई श्रीशरद शंपुरण पांन २६ थी
पा. ४२(अ) [राग वसंत] पाने ४८ शुधी
पा. ४९(अ) वशतनां क्रितेन १९ पाने ४१ थी
,, [राग प्रभाती] पान ७१ शुधी

पा ७१(ब) राग श्रीप्रभातीना क्रितंन ५५ पाने ४८ थी
पा. ७२(अ) [राग वेलावल] पाना ७३ शुधी
पा. ७४(अ) राग वेलावलना क्रितंन ७ पाने ७१ थी
,, [राग टोडी] पाना ७७ शुधी
पा ७८(ब) राग टोडीना क्रितंन १० पाने ७३ थी
पा ७९(अ) [राग आशावरी] पान ८६ शुधी
पा. ८७(अ) राग आशावरीना क्रितंन १९ पाने ७८ थी
,, [राग श्रीराग] पाना ९६ शुधी
पा ९७(अ) राग श्रीरागना क्रितंन २९ पाने ८७ थी
पा ९८(अ) [राग मारु] पाना १०० शुधी
पा. १०१(अ) राग मारूना क्रितन ८ पाने ९७ थी
,, [राग कालेरो] पान १०६ शुधी
पा १०७(अ) राग कालेराना क्रितंन १७ पाने १०० थी
पा. १०८(अ) [राग मलार] पाना ११० शुधी
पा १०९(अ) राग मलारना क्रितंन ७ पाने १०७ थी
,, [राग सामेरी] पाना १२४ शुधी
पा. १२५(अ) राग शामेरीना क्रितंन ३९ पाने ११० थी
,, [राग रामग्री] पाना १५४ शुधी
पा १५४(ब) राग रामग्रीना क्रितंन ८० पाने १२५ थी
पा १५५(अ) [राग केदारो] पाना १६३ शुधी
पा १६४(अ) राग केदाराना क्रितंन २२ पाने १५४ थी"

आ प्रमाणे २५+२७+१९+५५+७+१०+१९+२९+८+१७+७+३९+८०+२२=३६४ नी सख्या आपवामा आवी छे, परंतु पदसख्या ३७५ छे, जेमाथी पीताम्बरतुं १ पद बाद जता पद ३७४ चोक्खा छे लहियानी पदसख्यानी भूल छे; जेमके

नाना थीवांमां छपायेल आवृत्तिओथी तद्दिनानी भूल स्पष्ट थई जाय छे.

नागरी लिपिमां छपायेली आ प्रत सुवाच्य छे; अशुद्ध अक्षर छे; तेथी ज जेमनानु धोरण सांचवीने वाचनानुं संपादन करवामां आव्युं छे, तेमां प्रतनी लेखनपद्धतिने ध्यानमां लेवामां आवी छे. ज्यां ज्यां पाठमां कांई पण संपादकीय फेरफार करवामां आव्यो छे तेनु प्रत्येक स्थान नीचे पादटीपोमां आदेश आपवामां आव्युं छे. अर्थनो फेरफार थवानो भय न होय तेवा शब्दोनी जोडणी प्रचलित रूपमां आग्रह राखवामां आव्यो ज छे.

पदोनी मुद्रित भाषा

भाषाभूमिका प्रतमा जे काई मळी छे ते यथावत् राखवामा आवी छे; नानुसूनु चापल पण करवामा नथी आव्युं आजनी उच्चरित भाषाथी आ प्रत जुदी भाषा आपती नथी विशेषता मात्र एटली छे के नोंधायेला उच्चारणोमा जोडणीनो विकल्प मळे छे, लघुप्रयत्न 'य' खास करीने विकल्पे प्रयोजायेलो छे, सातमीना रूपोमा पण, जेमके

(१) **लघुप्रयत्न 'य'** : नित्य नित्य (= निति निति) – पधारय (२९-३), वागेवारय (२३१-३) शोकल्यडी (२७२-२), नारी जातिना — मोहोरय (१९७-३), रान्य (२००-४), घंटवल्य (२१४-२) वगेरे

(२) **सातमी विभक्ति** : मुख्य (= मुखि ४७-२), महावन्य (९२-१), कुन्य – गाल्य (१५८-१), मोडामोडय (१८६-३), पारय (१९२-३) शीरय (२१७-२), वन्य (२१८-४), मस्तक्य — पेहेरण्य (२२२-३) पेरण्य (२२२-६), ओटण्य (२४४-२) वदन्य (२६०-१) वगेरे

बहुवचनमा मात्र नारीजातिए ज सौराष्ट्रिय 'उ' प्रत्यय 'शहिरुं' (१६२-१ = सहियरो) मा प्रयोजायेलो छे

विभक्तिना रूपाख्यानोनी दृष्टिए छट्ठी विभक्तिना अनुगनो लोप 'परनारी' (१५३-३), सा वि. नो मोह' (२०३-३) जेवा प्रयोगोमा मळे छे; बाकी छ. वि मा 'मानिनिआ' (१६६-४), 'मानिनिया' (१७१-४), नारसिया (१९६-७), नयणा (२०६-३) वगेरे रूपो मळे छे ते पण अनुगना लोपना ज समजाय छे

छट्ठी विभक्तिनो अर्थ आपवा व्यापक रीते तो 'नो' अनुग मळे छे; परंतु मराठी जेवा लागता 'चो' अनुगनो प्रयोग पण छूटे हाथे करवामा आव्यो छे : बोलडाचे (११५-१), जनमचो (११५-२), चोलियाचा

—उरचा (२१९–२), मेगलची (२२०–२) वगेरे. पदोमां नरसिंहे ज्यां छेल्ली कडीमां छाप आपी छे त्यां सर्वत्र 'नारसियाचा' के 'नारसियाचो' ज मळे छे.

ध्यान खेंचे छे ते तो मारवाडी 'रो' अनुग : 'मह्डिा-रो' (२१८–१, २४५–१) अने 'गोकुलियारो' (३०२–१). 'दाडमहूला'मांनो 'ला' २०४–२) अनुग पजाबीनो भ्रांति करावे छे. सातमी विभक्तिमां उपर लघुप्रयत्न य' बतावबामा आव्यो छे; बाकी तो मोटे भागे 'माहि' के एना विकासना अनुगरूपो प्रयोजायेला छे; एक स्थळे हिन्दी प्रकारनो अने अत्यारे गुजरातनी पूर्व सरहदना तेमज चरोतरना प्रदेशमा अने उत्तर गुजरातमा लोकबोलीमां जाणीतो 'जमलमें' (२०६–१) एम 'में' अनुग मळे छे.

क्रियापदोमा अर्वाचीन रूपो स्पष्ट सारी रीते सिद्ध स्वरूपे मळे छे; अने 'आण छ' (= आणे छे) अने 'जाण छ' (= जाणे छे, वेउ ३०१–१) जेवो प्रयोग पग मळे छे. पहेला पुरुष बहुवचनना कर्तरि अर्थे 'रमिये' 'नोगमिये' (वेउ ३६३–२) ए जूना त्रीजा पुरुष ए. व. नां रूप पग मळे छे एवा ज 'होईजे–वरोजे–कीजे' (३२७–५) पग पहेला पुरुष ब. व. ना अर्थमा कर्तरि प्रयोगे वपरायां छे, जे मूळमां तो त्रो पु ए व. नां कर्मणि रूपो छे 'लीजे-पामीजे' (१५६–४), कीजिये–कीजे-मेलीजे-रमीजे (२५५–२), दीज्ये-लीजे (३५६–३) कर्मणि रूपो छतां कर्तरि अर्थे बीजा पु. ब. व. नो भाव आपी रह्या छे.

भविष्यकाळना प. पु. व. व. नां 'करेशु-देशु' (३१९–२) मात्र बची रह्या छे; तो 'गमीशे' पग एवु ज त्री. पु. ए. व नु प. पु. व. व नु 'वलाशु' (२८९–२) रूप 'वलिशुं'नुं वैकल्पिक एक मात्र रूप छे; बाकी तो स्पष्ट अर्वाचीन थई चूक्या छे.

कृदन्तो अर्वाचीन थई चूक्यां छे; मात्र 'रिशाव्य' (२४२–१)

८ 'रिसावीने 'मा ' इ 'नो लघुप्रयत्न 'य ' थयेलो मळे छे. गुजराती प्रकारना कर्मणि भूतकृदन्तना 'लपटाणी ' (२१०–३), बधाणो (३४३–२), भराणी (३६३–१) ए मध्यकालना व्यापक रूपो (पछीथी सौराष्ट्रमां मात्र सीमित) ध्यान खेंचे छे परंपरित पद्धतिना 'कीध ' ऊभ ' ना स्वार्थे ' ल ' प्रत्ययवाळा रूप पण क्वचित् मळे छे : 'कीधला ' (२२९–२), 'ऊभलो ' (३०१-१), परंतु ध्यान, विपुलताथी, खेंचे छे ते तो मराठी शुद्ध प्रकारना भूतकृदन्तो, जेवा के पढीला (८४-३, २०३ ३, किउला (३१२–२), कियुला (१०१–१ १६६ ३, २०६–३), वेधीला (११८–१, २०३–३)-ला २०८–१, हरीला (११८-२), आगीला १२२–३), –ल्ल (३२५-३), आवीला (१५०–३) पियुला (१९६–३)

'हारसमे 'ना पदोमाना 'देवा अमचो वार का बधिर होईला, आपुला भक्त का विसरि गेला ' जेवा प्रयोगने ध्यानमां राखता मराठी सतोना प्रभावने आपणे अवगणी शकवानी स्थितिमा नथी

'जोइये 'ना अर्थनु 'जोयें ' (३४६–१) रूप एक ज वार वपरायेलु मळे छे

हेत्वर्थ कृदन्तना अर्थे मारवाडी प्रकारनो पूछण (= पूछवाने, १४६–२), 'ओढण ' (= ओढवाने, २३३–२), तो कर्तृवाचक अर्थ 'निरखणहार ' (२००–३), 'चारणहार-पीवणहार ' (२१६–१) अने 'शींचणहार ' (२२०–२) नोंधी शकाय तो 'शोहावण ' (२२०–२) पण कर्तृवाचक अर्थ आपे छे

'कशाथी ' ए अर्थनु अपभ्रशानुगत जूनु 'किंचे ' (२०६–३) पण लक्ष्यमा राखवा जेवुं छे

तुलनात्मक 'रूडेरुं ' (२५५–१) अने 'घणेरो ' (२६५–१) ए आजना सौराष्ट्रिय विशेषणरूपो पण ध्यान खेंचे छे

प्रेरकनां रूपो चारेक मळ्या छे : 'भवाड्या ' (३५८–२), चालवे (१८६–२), वलोवाडी (२४१–१) अने 'पधराव्या ' (३११–४)

स्वार्थे 'ल' अने 'ड' प्रत्ययनो प्रयोग नरसिंह करे छे एमां "ड" नो तो एने खास शोख होय एम ज लागे छे. नाम विशेषण कृदंत जेवां रूपोमां ए कुशलताथी 'ड' ने वणी ले छे; जेमके निरखतडां (१९९-१), मरकलडा-एकलडा-कीकलडा (२०४-१) बोलडा (२१५-१), बहुवारडा (२१६-४), धुतारडा (२१८-१), जूथडा (२२४-८), कनकवेल्यडी (२२६-२), वांछतडां (२२९-२), मारगडा (२३१-१), लटकतडी-आहीरडी (२३०-१) वाहोडी (२३१-२) लाडक्डुं (२६८-३), हकलावतडा (२८८-२), बापडो (२८८-२)

'ल' नां : 'कीधला' 'उमला' उपरांत 'कीकलो' (२८८-२); परंतु 'ल' अने 'ड' बेउ पण मेळवी वापरे छे; जेमके बांहोलडी' (२३१-२), 'शोक्यल्डी' (२७२-२) 'वातलडी' (३५९-२), वगेरे

मध्यकालीन भूमिकानां तो 'नि' (=ने, १७२-४) अने 'तेनु' (=तेनो, २२३-१) ए बेज रूप सचवायां छे.

अरबी-शब्दो

आ पदसंग्रहमां 'रबाब' (५४-१), 'अशाबो' (१८७-३), 'जंबीर' (२१६-२), 'पुकारे' (२४३-२) 'दिल' (३२८-३) 'बदले' (३३३-२), गमाई (=गुमावी, ३५७-२), 'दुलारां' (=वहालां, ३६०-३)

रूढिप्रयोग

नीचेना रूढिप्रयोग नजरमां आव्या छे : लाबरडुं कीधी (९३-३), जोवन मारो लेरे जाय (१२२-२), मांडयां रे बहु (२६३-३), ज्योवन लेहेरे जाय (१२२-२), कडल वाली (२२७-३), लेहेणूं लामे (२४१-३), तेलिये आवे (२५८-३), शरा लगे (२७४-३), चोपडा वराशे एठु (३२६-३)

गुजराती साहित्यना इतिहासमा पोतानी आगवी प्रतिष्ठा धरावता आ कविना जीवन तेमज कवनना विषयमां थोडो परिचय अहीं ठीक थई पडशे

महान ज्योतिर्धर

ગુજરાતી साहित्यने जूना युगमां जे उच्च प्रतिभा धरावनारा कविओ मळ्या छे तेओमां जूनागढना आ नागर भक्तकवि नरसिंह महेतानुं नाम अग्र कोटिमां शोभी रह्युं छे अत्यारे ए सुविदित थई चूक्युं छे के एणे मुख्यत्वे त्रण प्रकारनो साहित्यप्रवाह वहाव्यो हतो : (१) आत्मचरित्रने लगतां काव्यो, (२) आख्यानकोटिनां काव्यो, अने (३) ऊर्मिथी छलकता मोटा भागनां आत्मलक्षी पदो (जेमां मुख्यत्वे भगवान कृष्णनी लीला गावामां आवी छे; उपरांत ज्ञानभक्ति अने उपदेशादिकने लगतां तत्त्वचिंतनात्मक वगेरे पदो).

गुजराती साहित्यनो आरंभ

गुजराती साहित्यनो आरंभ क्यारथी थयो ए विषयमां हवे आजे कोई मतभेद खास रह्यो नथी. साहित्ययुगोनी दृष्टिए विचारतां आचार्य हेमचंद्रे विक्रमनी तेरमी सदीना आरंभमां तो निश्चित रीते एना सिद्धहेम व्याकरणना छेल्ला आठमा अध्यायना छेल्ला चोथा पादने अंते पोताना समयनो अपभ्रंश भाषानुं लोकमांथी उपाडेलां उदाहरणो साथे व्याकरण निश्चित करी आप्युं एना अनुसंधानमां ज सं. १२४१ (ई. स ११८५) मां रचायेला जाणवामां आवेला शालिभद्रसूरिना 'भरतेश्वर-बाहुबलिरास' मां गुजराती शुद्ध संस्कारोनो आरंभ थयेलो जोवा मळे छे. त्यारथी ज गुजराती साहित्यनो 'रासयुग' शरू थाय छे जे नरसिंहना जन्म सुधीना समयमां मध्यकालीन गुजराती भाषा किंवा भालणे जे नाम स्वीकार्युं छे ते 'गुजर भाखा 'नी शृंखला साधी आपे छे. भाषामांना अपभ्रंश अने अपभ्रंशाभासी संस्कारो घसाई जतां स्पष्ट गुजराती संस्कारो आ समय सुधीमां मूर्तता धारण करे छे 'रासयुग'मां मुख्यत्वे जैन साहित्यकारोने हाथे खीलेलां ते १, रास. २, फागु, ३ लौकिक कथाओ ४ वृत्तबद्ध के छंदोबद्ध काव्यो. ५. मातृका अने कक्का, ६ प्रकीर्ण पद-साहित्य, अने ७. गद्यात्मक टबा अने बालावबोधो. संपूर्ण जैनेतर

छता जैन असर नीचेना लौकिक-कथाकारो असाईत नायक (स १४१७ः ई. स. १३६१ : 'हसाउलि'नी रचना) अने भीम (स १४६६ : ई. स १४१० 'सदयवत्सकथा'नी रचना) जाणवामा आव्या छे; जैन असरनो लेश पण जेमनामा नथी तेवाओमा अजमेरनो नाल्ह कवि (सं. १२७२ : ई स १२१६-'विसलदे-रासो'नी रचना) सौथी जूनो छे, तो ईडरनो श्रीधर व्यास (स १४५४ लगभग : ई. स १३९८ 'रणमलछंद' अने 'ईश्वरीछंद के कवित्त भागवत'नी रचनाओ - 'रणमल्लछंद'मा तैमूरनी सवारी [हिजरी ८०० : ई. स. १३९८]नो स्पष्ट निर्देश छे) मात्रामेळ छंदोनी रचनाथी जाणवामा आव्यो छे.

साहित्यना विविध प्रकारो

आम गुजराती साहित्ये सारो एवो विकास नरसिंहना जन्म सुधीमा-एने हाथे आदिमक्तियुगनी स्थापना थई ते पहेला-साधी लीधो हतो. साहित्यना जे विविध प्रकारो खीलया हता तेमा वृत्तबद्ध के छंदोबद्ध काव्योना अपवादे रास-फागुओ वगेरे भिन्न भिन्न प्रकारनी गेय देशीओमा रचाया हता, रचाये जता हता आ देशीबंधनो विकास सस्कृत भाषामा 'गीतगोविंद'नी अष्टपदीओना रचनार कवि जयदेव (वि तेरमा शतकनो आरंभ लगभग) ने हाथे सिद्ध स्वरूपमा थई चूक्यो हतो ए महत्त्वनी वस्तु छे के जयदेवनी पूर्वे पण गुजरात-मारवाडनी भूमिमा स्वतत्र रीते पण गेय देशीओ विकसी हती, नरसिंह पहेलाना जैन अने जैनेतर साहित्यकारोनु एमा स्वातन्त्र्य ज हतु, तो महाराष्ट्रना महानुभाव पथना भक्तो अने पछीना पढरपुरना वारकरी संप्रदायना नामदेव, ता उत्तरना कबीर, वगेरेनी रचनाओमा पण देशीबध स्वतत्र रीते ज विकस्यो हतो. समव छे के एना मूळमा एकसूत्रता होय कालिदासना 'विक्रमोर्वशीय-'ना चोथा अकमांनी पुरूरवाना मुखमा मुकायेली अपभ्रंश-पद्यरचनाओ-ध्रुवाओ आवा ज कोई अने कोई देशीबधमा छे. ए खरु के आ बधी ध्रुवाओना मूळ भरत-नाट्यशास्त्रमा छे, परंतु एनु जे त्या वैविध्य छे ते वैविध्य आ देशीबधमा विकसेला प्रांतीय भाषाओना साहित्यमा नथी

देशीबंधनो प्रयोग

नरसिंहना ऊगम वखते एनी सामे गुजरात–सौराष्ट्रनी भूमिमा विकसेला विविध देशीबंधो हता ए भक्त होईने एनी पासे नामदेव जेवा भक्तनी रचनाओनो परिचय होवानी पण स्पष्ट संभावना छे ज, अने जयदेव तो एने मन एनो एक प्रेरणादायक भक्तकवि छे एवु एना तरफना एना 'एक आणो छो व्रजनी गोपी में रस जयदेवे पीधो रे' वगेरे प्रकारना समादरथी स्पष्ट छे : नरसिंह महेताने प्रिय झूलणा छंद जयदेवनी एक अष्टपदीमा वपरायो छे (त्या ३७ ने बदले ३४ मात्रा छे एटलो फेर छ वाकी नामदेवना अभग साथे नरसिंहना झूलणाने वधु निकटनु साम्य छे, बेशक, स १३७१ना 'समरारासु' मा ३७ मात्रानो झूलणा वपरायेलो छे एटले गुजरातने ए बंध अजाण्यो तो नहोतो ज) नरसिंहे एनी 'चातुरीओ' मा 'फागु' ने अनुरूप बंधनो पण क्वचित् प्रयोग कर्यो छे आरंभनो कडवाबध पण त्या एने परिचित छे, एटले एना व्यापक अनुभवमा आवेला बहारना तेमज गुजरात–सौराष्ट्रमा जाणीता देशीबंधोनो प्रयोग एनी प्रतिभाने तद्दन सहज थयो छे.

नरसिंह महेतानो समय

नरसिंह महेतानो समय आम तो विक्रमनी पदरमी–सोळमी सदीना संधिनो छे ए एना हारसमेनां पदोना अंतमां आवता एक पदमाना स. १५१२ (ई स १४५६) ना उल्लेखथी निरपवाद रीते स्वीकारवामा आव्यु हतु स्व नर्मदाशंकर कवि, स्व दल्पतराम कवि स्व प डाह्याभाई स्व हरगोविंददास द्वा कांटावाळा, स्व इच्छाराम देसाई, स्व कृष्णलाल मो झवेरी वगेरे संशोधक विद्वानोए उपर्युक्त संधिनां आगळ पाछळना ३०–३० वर्ष गणी अंदाजे स १४७०–१५३० (ई स १४१६–७४) नो गाळो स्वीकार्यो हतो ज स्व आचार्यश्री आनदशंकर बा ध्रुवे 'वसन्त' मा (स १९६१ ई स १९०५ मा) नरसिंहनी भक्तिज्वाळानी पाछळ चैतन्य सप्रदायनी असर होवानी

संभावना करी अने 'सुरतसंग्राम' मां आवती राधानी सखीओनां नाम अने चैतन्य महाप्रभुना एक शिष्य रूप गोस्वामीना 'विदग्धमाधव नाटक' (वि. सं. १५८० आसपास) ना टीकाकार बीजा शिष्य जीव गोस्वामीए करेला मथुरा प्रदेशमां आवेला ब्रह्मकुंड उपरना गोपीश्वर महादेवना निर्देशने लई (तळाजामां पण 'ब्रह्मकुंड' अने 'गोपनाथ' महादेवना साम्यने लई) नरसिंहने एना वृद्धमान्य काळथी खसेडवानो प्रश्न रजू कर्यो; जोके एम न होय तो 'भविष्यपुराण' ना आधारने मान्य राखी समयच्युत न करवानु पण सूचव्यु (वसंत : ४-८). स्व. गोवर्धनराम मा. त्रिपाठीए पहेली साहित्य परिषदना प्रमुखस्थानेथी आपेला व्याख्यानमां सूचना करी के 'आ मूळ दीवाओमां कोई पण अन्य ज्योतिना प्रभावथी ज्वालाओ प्रकटी होवी जोईए;" बेशक, एमणे नरसिंहने समयच्युत करवानो प्रयत्न न कर्यो. परंतु सने १९२४ आसपास श्री. कनैयालाल मा. मुनशीए समयच्युत करवाने १६ मुद्दा ऊभा कर्या; अने पछी 'नरसैयो—भक्त हरिनो' ए ग्रंथनी प्रस्तावनामां वधु ८ मुद्दा उमेरी सं. १५१२ नहि, पण हारसमेनां पद सं. १५७२ मां मानी नरसिंहने साठेक वर्ष आ बाजु मूकवानो भगीरथ प्रयत्न कर्यो. सं. १६०० (ई स १५४४ अंदाजे) सुधी कोई पण समकालीन पुरावो गुजराती साहित्यमां मळतो नथो ए प्रकारना मुद्दा उपर एमनी मुख्य मदार रही छे. बंधनी दृष्टिए एमणे नरसिंहनां आख्यानोने मोडेनां मनाववा प्रयत्नो कर्या, परतु भालणनो कडवाबद्ध आख्यानप्रकार एमनी नजरमा ज आव्यो नहि. भालणने एना मनायेला जूना समयमां एभो मूके छे अने नरसिंहने समयच्युत करे छे. परिस्थिति एनाथी ऊलटी छे के काव्यबंधनी दृष्टिए नरसिंह एना जूना समयमांथी च्युत नथी थतो, ज्यारे भालण एना व्रजभाषानां 'दशमस्कंध' मांनां पदोने लई श्रीवल्लभाचार्यजीना अष्टछापीय अनुयायी, व्रजभाषाना समर्थ वैष्णव कविओ सूरदास (वि. १६मी सदीनो उत्तरार्ध) वगेरेनो समकालीन थई रहे छे. 'हरिलीलाषोडशकला' अने 'प्रबोध-प्रकाश' ना कर्ता, प्रभासपाटण—सिद्धपुरमां रहेला भीम (वि. १६ मी

सदीनो पूर्वार्ध)नो नामनिर्देश विनानो श्रपि गुह भालग ज हतो ए मत पण भीम-भालण वच्चे काव्यरचना साम्यने अभावे निरर्थक नीवड्यो छे अने वि. नी १६ मी सदीनी चोथी पचीशी अने १७ मी सदीनी पहेली पचीशीमां सिद्ध रीते साहित्यसेवा आपी चूकेला नाकरनो पूर्वसमकालीन तरीके आवी रह्यो छे नरसिंहनी 'चातुरीआ नो वध अने जूनागढना श्रीधर अडालजाना 'गौरीचरित्र' (वि स १५६५ ई स १५०९) नो वध मरग्वावता श्रीधरना वधनी सुगठितता जोतामा आवे छे ते ज नरसिंहने एना मनायेला जूना समयथी च्युत थवा देती नथी

स्व नरसिंहराव दिवेटियाए शरूमा 'वसत'मा अने पछी ठा वसनजी माधवजी भापणो (ई स १९३०) मा श्री. मुनशीनी दलीलोने पापण आपता एक नवा मुद्दो नरसिंहना काका पर्वत महेताना वश-वृक्ष'नो रजू कर्यो अने एना बळ उपर साठेक वर्ष आ बाजु र्खेचवानो प्रयत्न कर्यो उपरात 'पच्या' अवटंक अने नरसिंहे एनी रचनाओमां विपुलताथी वापरेल 'विठ्ठल शब्दने लगती बे दलीलो पण मूकी, छठ्ठी विभक्तिनो अर्थ आपनारा 'ना' अनुगने पण पोतानी दलीलोमा उमेर्यो पेढीनामु दरेक प्रश्नमा सहायक न थई शके कारण के मोटां सतानोने गणिये तो एक सैकडामा पाच पेढी पण थाय अने छेक नाना सतानोने गणिये तो एक सैकडामा त्रण पेढी पण थाय 'पच्या' अवटक विशेनी अरुचि पण निरर्थक छ, जो के ऐतिहासिक दृष्टिए आनु समाधान विकट नथी सोलकीओना सुप्रसिद्ध राजपुरोहित पडित सोमेश्वरनु गोत्र, नरसिंह महेता अने पर्वत महेतानु गोत्र अने हाळ-गुजरातना 'दिवेटिया' नागरोनु गोत्र एक ज छे, सोलकी युग पछी केटलाक नागरो धीमे धीमे दक्षिण बाजु वधता सौराष्ट्रमा पण जई वस्या हता ए जोतां नरसिंह-पर्वतकुळनी अवटक 'पच्या' (सं पण्डित) होय तो एमां आश्चर्य नथी. नागरोमा 'याचक' अने 'गृहस्थ' एवा प्रकार - खास करीने वडनगराओमा ज - नरसिंह महेताना समयथी वधु जूना नथी.

'विठ्ठल' शब्दनो प्रयोग तो नरसिंह मांडण भीम वगेरेने वारकरी सप्रदायना नामदेव वगेरेनी पासेथी मळ्यो छे. छठ्ठीना अनुग दरज्जे 'चा-' नो उपयोग आपणे त्या मात्र नरसिंहनी कवितामा छे एवु नथी माडण वगेरे उपरात जैन कविओमा विपुलताथी मळे छे, एटले वस्तुस्थितिए तो पाछळथी ज ए मराठीमा सीमित थयो छे

आ बधुं विचारता नरसिंहने एना वृद्धमान्य समयथी खसेडी शकाय एम नथी.

नरसिंह महेतानुं जीवन

नरसिंह महेतानु जीवन केवा प्रकारनु नीवडयु हतुं ए बतावनारा सख्याबंध चरितो जूना आख्यानकारोए गाया छे आ ज मात्र एक गुजराती भक्तकवि छे के जेना चरित्र मात्र गुजरातीओए ज नहि, पण *राजस्थानना मीरा रतनो वगेरेए* पण गाया छे, [*अरे, मारवाडमा* – मेवाडमा मीराना पदोनी जेम नरसिंह महेताना पदो – मारवाडी थई चूकेला पण – विपुलताथी गवाय छे जूनी गुजराती प्रतोमा छठ्ठीनो अर्थ आपनारा मराठी प्रकारना 'चा' अनुगनी जेम क्वचित् मारवाडी प्रकारनो 'रा' अनुग पण वपरायेलो मळे छे] ए बधा ज चरितकारोने पोताना जीवन विशेनी माहिती पूरी पाडनार खुद नरसिंह महेतो ज छे नरसिंहे १. झारी २ (पुत्रीनु) मामेरु ३ (पुत्रनो) विवाह, ४ हूडी, अने ५ हार – आ प्रसगोमा भगवाने भागेली भीडने लगता चमत्कार-मूलक काव्यो गाया हता तेनो सहारो ए सौने मळ्यो छे. पोताना पिताना श्राद्ध विशे नरसिंहे क्याय सूचन कर्यु मळ्यु नथी, चरितकारोए ए सभव छे के, प्रचलित दतकथा उपरथी बाध्यु हशे

नरसिंहे उपरना पाच प्रसग चमत्कारमूलक निरूप्या छे. दरेक वखते भगवाने जुदे जुदे स्वरूपे एनी भीड भागी छे एम ए निरूपे छे. आ प्रसगो शब्दश. साचा छे के ए एनो *आध्यात्मिक* अनुभव ज छे अने एनु निरूपण ए सजीव होय तेम स्वप्रतिभाथी करे छे ए

विचारणीय रहे छे आनी चावी नरसिंहनी कृतिओमांथी ज मळी आवे छे हरचरितने लगती एना मोटा भागनी कृतिओमा एणे भगवान गोपनाथ शिवनी कृपाथी कृष्णनी लीलाओना साक्षात्कार अने ए द्वारा मळेला प्रसादथी पोताना पादसाहित्यनो विकास साधवानुं सूचन कर्युं छे आमाना रास करीने शामळदासना विवाह मा एणे वधु विस्तारथी कह्यु छे :

"मरम वचन कह्यां मुजने भामीए ते मारा मनमा रह्यां वळगी,
शिवजी आगळ जई एक मनोरथ स्तुत्य कीधी दिवस सात सूधी. १
हरजीए घरी दीन जाणी करी, प्रगट दरशण दीधुं शूल्पाणी,
तारी भक्ति उपर हु ज प्रसन्न थयो माग रे माग मुखे वदत वाणी २
गदगद कंठे हु बोली शकु नहीं, मस्तक कर धर्यो मुग्ध जाणी,
अचेतन चेतन थयो, भव तणो अघ गयो, स्तुति ऊठी मारी आद वाणी ३
तमने जे वल्लभ होय जे दुर्लभ, आपो रे प्रभुजी मुने दया आणी,
गोपनाथे मुने अभेपद आपीयु, नरसैं हरिरस रह्यो वखाणी ४"
(पद १ लु)

ए पछी पद २ थी ५ मा शिवजीए श्रीकृष्णनी धर्मसभा (द्वारका)-ना दर्शन कराव्या – ए एक मास त्यां रह्यो – श्रीकृष्णनी अनेकविध लीलाना एने त्यां प्रत्यक्ष दर्शन करवानो लाभ मळ्यो, अने

"मुहूर्ते एकमां भूतल आवियो, भाभि आव्या नारसहींयो जाणी ३१"

नरसिंह आ पछी एक वात जणावे छे के

"पुष्प आप्युं मुने नाथ लक्ष्मी तणे, **साचु सुपन** मे दृष्ट दीठु,
लक्ष सवा तणा नाम कीर्तन करो, नरसहींयाने मन लाग्यु मीठु ३५"

आ साचु सुपन नु एनी स्पष्टता 'हारमाळा' ना पदोमां जोवा मळे छे :

"गोपेश्वरे कर्युं **स्वप्न माहि** माग्य ते आपु तुहनि,
मि माग्यु स्वामी तमनि वहालु ते किपा करीनि दीजे मुने.

मोला चकवत्य प्रसन्न हुआ नि आवी मस्तक्य दीजि हाथ;
सोल सहस्र गोपीवृन्द रमतां रास देखाड्यो वैकुंठनाथ.
हित जाणी पोताना माटि महादेव बोल्या वचर्न ते वारि;
नरसिंआ, तुं लीला गाजे, ये कीधी कृष्ण-अवतार."

(पद ३ जुं)

भगवान कृष्णनी लीलाओ जोवानी एने केवी रीते अनुकूळता थई एनो खुलासो ए एनी 'चातुरीओ'मा पण एक स्थळे आपी दे छे (९ मी चातुरी):

" सुन्दरी पामी अतिउल्लास करता कामभोग-विलास,
अति आणंदे लीलविलास; हूतो नारसिंहो तिहां पास. १

ढाळ

पासे रहीने पेखियो, अनुभवे रस जेह,
जेहवी लीला नयणे दीठी में, मुख गायो तेह. २

दीवी माहरे करे दीधी; नरसिया, निध जोई,
विलास गोकुलनाथनो भूतळे गाजे सोई. ३

वळी अधकी करुणा करी, आपियां करताळ;
हूं सुखे लागो गान करवा; प्रसन्न थया गोपाळ. ४

भामनी मांहे भळी गयो जेम सागर माहे रतन.
माहारस माहे झीलियो; प्रभुजी थया रे प्रसन्न. ५

भाव जणावे नयणमां ते ऊजे मनमांहि;
मननी रूठी ते मनावो; हूं दूती थईने ताहि. ६

जे रसकणका कोई न पामे, हूं झीलियो ते माहिं;
माहारस माहे महालियो सभूजी केरी बाहे. ७

अनाथ टाळीने सनाथ कीधो, गुने पार्वतीने नाथ;
दिव्यचक्षु आप्यां मुझने, मुस्तक मेहल्यो हाथ. ८"

स्वाप्निक अनुभव

उपरनी पंक्तिओ तद्दन स्पष्ट छे. नरसिंहना हृदयनी भावनाने कारणे, ए तकलीफमां मुकायो ते वखतनी जे कोई साधना – तन्मयता तेमां एने थयेलो स्वाप्निक अनुभव एनी कवितासाधनानो नियामक छे. ए स्वप्नमां एने भगवान शिवे **दिव्यचक्षु** आप्यां ते ज एनी असाधारण प्रतिभा. नरसिंह पासे मम्मटे जणावेला काव्यना त्रण हेतुओमांना "शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्रकाव्याद्यवेक्षणात्, काव्यज्ञशिक्षयाभ्यासात्–" आम शक्ति = प्रतिभा, एनी सामे रहेला समाज अने जयदेवनु गीतगोविंद भागवत पद्मपुराण वगेरे शास्त्रोनुं परिशीलन = व्युत्पत्ति, अने जयदेव तेमज वारकरी संतो – नामदेव जेवानां भक्तिरबोळ काव्योनो सतत अभ्यास – ए त्रणे एने सुलभ हतां, जेने परिणामे एणे विपुल साहित्यनी रचना सिद्ध करी आपी. एना जीवनमां अचिंत्य रीते ज्यारे ज्यारे सहायो आवी मळी त्यारे त्यारे ए बधी सहायोने प्रभु तरफथी मळेली एणे मानी, श्रद्धा अने भक्तिभावथी मानी, अने एने पोतानी प्रतिभाना बळे सजीव अने स्वाभाविक होय तेवी बनावी. एना "**अवर बीजुं कोई दृष्टे देखे नहीं,** नरसहींयो निरखे सारंगपाणी, १६८ '(सामळदासनो विवाह) जेवी पंक्तिओ आ रहस्यने खुल्लुं करी आपे छे.

चरित

चमत्कारोनी साथोसाथ एणे पोतानु स्वाभाविक चरित एनी कृतिओमां व्यक्त करी आप्यु छे. एनो चकासणी करवाथी एनु सुरेख चरित आपणे मेळवी शकवानी स्थितिमां छिये. ए ज्ञातिए नागर हतो. केमके ए भाई भोजाई साथे जूनागढ (= जीरणघड = जीर्णगढ सा. वि ८)-मां आवी रह्यो त्यारे "मंदिर लीधु ज्हां नात छे नागरी" (सा. वि. ६) अने 'नागर नारसियो वखाणे रे" (न. प. २७७). एमां पण ए वडनगरो नागर हतो ए एना वेवाई "मदन महेतो वडनगरमां रहे" (सा. वि. ८) थी समजी शकाय एम छे. एनो, ए कहे छे तेम, "गाम तळाजामां जन्म मारो थयो" एम

तळाजामां जन्म थयो हतो अने त्यां ज " भामीए मूरख कही महेणुं दीधु " अने " वचन वाग्युं, एक अपूज शिवलिंगनु वन मांहे जई पूजन कीधु " (मामेरुं १). नरसिंहनां मा – बाप भाई – भोजाई वगेरे कोण हतां ए विशे एनां काव्योमांथी कांई पण मळतुं नथी; जे कांई मळे छे ते एटलुं ज के ' आखा वाढानो रली रुपी आव्यो, भामीइ मूक्यु न पाणी " (हार. १). एणे–

" चैत्र सुदी सप्तमी सोमवार नरसिंह मन्य कीधु व्यचार,
तप मांडयू महा उग्र मोहू, हूं रह्यो वन मोझार. " (हार. ३)

आवु जणावी घर छोडयानां मास–पक्ष–तिथि–वार आप्यां छे. चोक्स संगति मेळवतां आ वर्ष वि. सं. १४८४ (ई स १४२८; ता. २२–३–१४२८) नुं पकडाय छे. आ वखते ए १४–१५ वर्षनो होय तो एना जन्मनुं वर्ष १४६९–७० आवी शके, १७–१८ नो होय तो सं. १४६५–६७ आवी शके.

अने कविता क्यारे स्फुरी ए जाणवानुं साधन नथी. पण भक्तो अने विद्वानोना सतत संपर्कने लई वीसेक वर्षनी एनी ऊगती जुवानीमां एणे रचनाओ शरू करी होय. एनु भक्तहृदय केवु स्पष्ट छे के ए खुल्ला दिले गाय छे : (सा. वि) :

" धन्य भाभी तमे, धन्य मातापिता,
कष्ट जाणी मने दया रे कीधी.
तमारी कृपा थकी हरिहर भेटिया,
कृष्णजीए मारी सार लीधी. ३२"

अने एनु नित्यकर्म पण : (सा. वि.) :

" लक्ष्मीनाथनी नित्य सेवा करु,
साधुना साथ ज्हां आवे धाई.
आणी दया मन भावशुं वीनवु,
लेय प्रसाद कीरतन गाई. ३४"

अने ए परिणीत हतो : (सा. त्रि.) :

‘ घेर दारा एक सुन्दर साधवी,
हरिअंश तो एने अधिक वहालो
नहीं काई वेग विचार मनमां धरे,
न लहे परपच स्त्रीनो चालो. ३७”

एनुं अने एना संतानोनु नाम जणावता : (सा वि)

“ घेर अबळा तेनु नाम माणक वदे
पुत्री कुवरबाई कही बोले;
सामळदास छे नाम कुंवर तणु,
जोड जोता कोई न आवे तोले. ३९”

पुत्रीनु नाम क्वचित् ‘ सुरसेना ’ पण मळे छे, जे कदाच हुलामणानु नाम हशे (हार. २३).

पहेलो प्रसंग

एना जीवननो पहेलो प्रसंग, एने कीर्तन–भजन करतां मधराते तरस लागी हती त्यारे भगवाने आवी जल पायु – ए प्रकारनो छे :

“ आ जोने कोई ऊभी रे, आळस मोडे.

* * *

सोव्रण झारी ते अति रे समारी, मांही नीर गगोदक तोले.
नरसींयाने पाणी पावाने कारण हरिजी पधार्या कोडे.”

(न. का. सं. : पद ८, पृ. ४९८)

पाणी लावनार रतनबाईने एणे साक्षात् मोहिनीस्वरूप प्रभु तरीके वर्णित करी छे (पद १०).

अज्ञान आख्यानकारे रचेला “ नरसैं महेताना आख्यान ” प्रबध १२ मा) मां आ प्रसंग मांगरोळमां एना काका पर्वतदास उपर

श्रीरणछोडरायजीनु दशांगुल श्यामस्वरूप उत्तरने दरवाजे आवेली गोमती-वाव्मांथी पधार्युं ए प्रसंगना उत्सवनी (के पछीना वर्षोमांना कोई उत्सवनी) रात्रिना भजन–कीर्तननो छे श्रीठाकोरजी पधार्यानो दिवस निश्चितपणे स १५०१ ना मागसर सुदि ६ ने सोमवार (ता १६–११–१४४४) छे आम आ प्रसंग सभरत मागरोळनो छे

कुंवरबाईनुं सीमंत

नरसिंहना जीवनमा एवो महत्त्वनी भीड भंगायानो बीजो प्रसंग तो एनो पुत्री कुंवरबाईना सीमंतनो छे 'तेनु मामेरु पूर्युं लक्ष्मीनाथे' (सा वि ७ ३८) निधन पिताने पुत्रीना सीमंतना प्रसंगे पुत्रीना सासरे जवानु थयु ए आगले दिवसे गयो अने त्या एनी भारे मश्करी थई ए दिवस ए "चैत्र सुदि द्वादशी" नो कहे छे (हार २४) सीमंत त्रयोदशीनु हतु (हार २८) वार आप्यो नथी तेथी चोकस वर्ष आपवु मुश्केल छे, छता अदाजे ए वि स १५०४–५ (ई स १४४८–४९) होई शके जे वखते नरसिंह महेतानो उमर ३५–३६ वर्षनी अने कुंवरबाईनी उमर पदरेक वर्षनी होई शके

सामळदासनो विवाह

आ पछीनो त्रीजो प्रसंग ते पुत्र सामळदासना विवाहनो छे वडनगरथी मदन महेताए मोकलेलो दीक्षित गोर जूनागढमा मुरतियानी तपासमा आव्यो त्या टीखळी नागरोए नरसिंह महेतानु घर चींध्यु दीक्षितने तो नरसिंहने जोइने आनद थयो अने सगपण सिद्ध थयु पछी तो (स १५०, ई स १४५०) ना "**वईशाख शुद** दिन शुभ छे **पचमी**, वार **गुरु** लग्न निरधार कीधु" अने गोर कंकोतरी लईने नरसिंहने त्या जूनागढ आव्यो (सा वि पद १५-१६) आ वखते सामळदासनी उमर १४–१५ वर्षथी वधु नहि होय माणेकबाई मूआई गया परंतु नरसिंहने मन तो परम शांति हती (सा वि)

" शेठ मम सामळो सरवथी छे भलो,
राग विश्वास ते देशे आणी.
नरसहीयो नागर रंक छे बापडो,
करशे संभाळ पोतानो जाणी. ११०"

अने नरसिंह द्वारकानी यात्राए चाल्यो गयो. "विवाह"मां एणे (पद १९ थी २३ मां) आ स्पष्ट कर्युं छे. ए जणावे छे. ते प्रमाणे ठाठमाठथी एणे लग्ननी तैयारी करी ने जान जोडीने ए तेर दिवसनी मजल खेडी वडनगर पहोंच्यो; पूरा दबदबाथी लग्न थयां; सात दिवस रोकाई जान पाछी वळी. नरसिंहे "सामळदासना विवाह" मा पूरती सावचेती राखी भगवानने सौने प्रत्यक्ष थवा दीधा नथी; एनां दिव्यचक्षु ज प्रभुने मात्र निहाळे छे.

हूंडी

नरसिंहनी भीड भांग्यानो चोथो प्रसंग "हूंडी" नो छे जात्राळु ओने टीपळी नागरोए नरसिंह पासे मोकल्या. अने प्रभु उपरना विश्वासे रू. ७०० रोकडा लई नरसिंहे "हूंडी" लखी आपी, जे द्वारका जई वटाववामां आवी; पैसा जात्राळुओने मळी गया. आ प्रसंग बन्यो त्यारे हजी कुंवरबाई रंडाई नहोती, केमके "हूंडी"मां श्रीरंग महेताने त्यांथी कुशळ समाचार मळता एनो निर्देश छे (पद ३).

आकरी कसोटी

पाचमो प्रसंग मंडलिकना दरबारमां थयेली नरसिंह महेतानी आकरी कसोटीनो छे. आमा अचिंत्य रीते एना गळामां हार आवी पडे छे एवुं नरसिंह महेताए निरूपण कर्युं छे. एणे "हारसमे"नां मुख्यत्वे जे पद गाया छे तेओनी सख्या २९ थी वधु नथी; पछी एमां एने हाथे उमेरो थयो होय एना करता अन्य सकलनकारे उमेरो कर्यानी संभावना वधु छे, जेमा नरसिंहे जुदा जुदा प्रसंगे गायेलां पदो पण

आमेज थया कर्या छे उक्त 'हारसमेना पदो' उपरथी कोईए ५० पदोनी पहेली सकलना करी छे. पछी तो क्रमो वधता वधता २०८ पदोथी पण आगळ वध्या छे "हारसमेना पदो" माना छेल्ला पदमा हार पूर्यानो दिवस नोंधायो छे, बेशक, जुदी जुदी प्रतोमा 'महिनो' तेमज 'वार' ना पाठातर मळे छे; सगत बे पाठ

'सवत पनर बारोतर सपतमी अने **सोमवार** रे,
वैशाख अजुआलि पखे नरसिंनि आप्यो हार रे'
'सवत पनर' बारोतरो सपतमि अने **रविवार** रे,
मागशर अजुआलि पक्षे नरसिंने आप्यो हार रे'

वि स १५१२ वैशाख सुदि ७ ने सोमवार (ता १२-४-१४५६) अने वि सं १५१२ मागशर सुदि ७ ने रविवार (ता १६-११-१४५५) ए बेउ साचा दिवसो छे अज्ञात सकलनकारे 'अरुण उदयो ने दृणली आथमी तोहे तुनि करुणा न आवे रे' एवो निर्देश कर्यो छे, तेथी एना मनमा वि स १५१२ मागशर सुदि रविवारनो दिवस लागे छ, पण वैशाख सुदि ७ सोमवारने पण टाळी शकाय नहि तात्पर्य एटलु ज के आ प्रसगनी शक्यता वि स १५१२ नी ज छे नरसिंह क्यासुधी जीव्यो ए कहेवु मुश्केल छे "गोविंदगमन" मा 'वळिया पडिया अगे, त्यारे तो में लखियु रे' (पद ३३) आम वृद्धावस्थामा ए काव्यनी रचना कर्यानो निर्देश छे. पण नरसिंहनो ज 'गोविंद गमन" उपरात "सुरतसग्राम' पण प्रामाणिक रचनाओ छे ए कहेवु असभवित बन्यु छे बने रचनाओनी कोई प्रामाणिक हाथप्रतो नथी तेमज एमानु एक पण पद कोई हाथप्रतमाथी मळेलु जाणवामा आव्यु नथी १५१२ पछी ए जीव्यो होय तो मडलिकनी हयाती सुधी जूनागढमा अने पछी मुस्लिम शासन थता सभवत ए मागरोळ नई रह्यो होय, कारण के त्या एना काकार वैनदासनो स्थायी निवास हतो गुजरात पाण्णमा आ हेमचद्रना अग्निदाहना स्थाननी 'हेमखाड' तरीके

ख्याति छे तेवी मांगरोळना मक्तुपुर दरवाजाथी पश्चिमने मार्गे दरिया-काठे आवेला जूना स्मशान (अत्यारे रबारीओना स्मशान तरीके जाणीता) नो 'नरसी मसाण' तरीके ख्याति छे. आ मात्र संभावना छे; एने हकीकत तरीके न गणाय.

नरसिंहना जीवनना तबक्कानी तारवणी करिये तो :

स. १४६६-६७ (ई. स १४१०-११) स. १४६९-७० (ई. स १४१३-१४)	नरसिंह महेतानो जन्म
सं. १४८३-८४ (ई स १४२७-२८)	नरसिंह महेतानुं लग्न
स १४८४ (ई. स. १४२८)	नरसिंहनु तप माटे जवु
सं. १४८९-९० (ई. स १४३३-३४)	पुत्री कुंवरबाईनो जन्म
सं. १४९४ (ई. स. १४३८)	पुत्र सामळदासनो जन्म
सं. १५०१ (ई. स. १४४४)	पर्वत काकाने त्या श्रीरणछोड-रायजीनु पधारवु अने झारीनो प्रसंग (संभवित)
स. १५०४-५ (ई. स. १४४८-४९)	कुंवरबाईनु मामेरु
सं. १५०६-७ (ई. स. १४५०-५१)	सामळदासनु लग्न
सं १५०६-७ (ई स. १४५०-५१)	हूंडीनो प्रसग
स. १५१२ (ई. स. १४५५-५६)	हारनो प्रसग

साहित्यसर्जन

ए पोते जणावे छे ते प्रमाणे एनुं जीवन सतो अने भक्तोना सत्संगमा भगवद्भजनमां अने विशाळ साहित्यरचनामा पसार थयु हतु. गुजराती साहित्यना इतिहासना तबक्काओनो ख्याल करवामा आवे तो स्पष्ट गुजराती कही शकाय तेवी उच्चरित मध्यकालीन गुजराती भाषामां विशिष्ट साहित्यप्रकारोनो आरंभ करी ए नवुं प्रस्थान शरू करनारो ज्योतिर्धर छे. आपणा जूना विद्वानोए एने गुजराती भाषानो आदिकवि

कह्यो 'हतो,' ए स्थान एणे शरु करेला नव 'प्रस्थानने कारणे नवेसरथी आवी मळे छे ए ज नरसिंहनी विशिष्ट साहित्योपासनानी चमत्कृति छे

आवा उच्च कक्षाना आत्मलक्षी प्रकारनी कवितार्थी गुजराती भाषानु गौरव वधारनार भक्तराज—भक्तकविए साधेली 'साहित्यसृष्टिनो थोडो ख्याल अहीं अस्थाने नहि थई पडे.

आरंभमां ज बताववामां आव्यु छे ते प्रमाणेना एणे खेडेला त्रणे साहित्यप्रवाहोमानो 'आत्मचरितने लगता काव्यो'नो प्रवाह गुजराती साहित्यमां ए रीते ध्यान खेंचनारो थई पड्यो छे के आ प्रकारनी रचना भारतीय भगिनीभाषाओमा भाग्येज थवा पामी छे. उपरांत ए रचनाओने आधारे मात्र गुजरातमा ज नहि राजस्थान वगेरेमा पण नरसिंह महेताना जीवनना चमत्कारिक प्रसंगो उपर महत्त्वनी रचनाओ थई छे. एना त्रणे प्रकारना साहित्यप्रवाहोनुं वाहन तो 'पदप्रकार' ज छे. मुख्यत्वे दोहरानी अने झूलणानी देशीओनो ए उपयोग करे छे. ए बधी देशीओ जुदा जुदा रागोमा अने तालोमां गवाती हती नरसिंह सगीतनो पण ज्ञाता हतो ए ऐणे "केदारो" राग गिरो मूक्यो हतो एवी आख्यायिका 'हारमाळा'मा नोंधायेली छे ए उपरथी समजी शकाय एम छे. एणे पसद करेला रागो पण उच्च अने कठिन कोटिना छे : केदारो प्रभाती रामग्री सामेरी सारंग वसंत मल्हार वगेरे. आत्मचरितना पदो पण देशीओनी तेमज रागोनी विशिष्टताथी रचायेलां छे. 'आमां "मामेरु" "विवाह" अने 'हारममेना पद" तो सळग झूलणा बधमा छे; 'झारी' अने "हूंडी"मां अन्य प्रकारनी देशीओ छे.

अद्‌भुत रस

आत्मचरितने लगती कृतिओमा, रसनी दृष्टिए विचार करवामा आवे तो, "अद्‌भुत" रस छे; परंतु आ कृतिओनी विशेषता तो एमा भक्तना भीड आवी पडेली छे तेना समयना चित्रणना अने प्रसंगने बहलावती कावलूदीना छे. भक्तनो भगवान प्रत्येनो अनन्यभाव—अनन्या-

थय अने गमे तेवा प्रकारनां दुःख आवी पडे तेवी स्थितिमां पण चित्तमां जरा जेटलो पण सांसारिक विक्षेप नहि—ए बे वस्तु आ काव्योमां स्पष्ट तरी आवे छे (सा वि.) :

" तू मारो प्राणजीवन घनश्यामळा,
लक्ष्मीना नाथ शिरनाथ माहारा.
भक्तथी कांई अधिक नथी ताहरे,
दासने अधिक छे गुण ताहरा. १६१
वईकुंठ धाममां साद श्रवणे सुणी,
द्रुपदसुता तणी लाज राखी.
भगत त्रिलोचन-घेर कावड भरी,
व्याध तार्यो तेनो वेद साखी. १६२
भक्तकारण पर्यंकने परहरी,
गज उगारियो हाथ झाली." वगेरे

" हारसमेनां पदो "मां तो " देवा, हमची वार कां बधिर होईला, आपुला भक्त कां विसरि गेला" जेवा शब्द कहेवामां पण संकोच थतो नथी. एनुं चरित विशुद्ध छे अने तेथी एने आत्मविश्वास छे के परमात्मा मने कशे पण मूझावा देशे नहि. आ जातनी अनन्य-भावना आजना बुद्धिवादी—भौतिकवादी जमानामां मळवी दुर्लभ छे; पण जगतना बधा ज धर्मोमां आवी अनन्यभावनावाळा संतो अने भक्तोनी गाथाओ नोंधायेली छे; स्वानुभवनो पण आ विषय छे.

आख्यानकोटिनां काव्यो

एणे वहावेलो बीजो प्रवाह आख्यानकोटिनां काव्योनो छे. आमां "दाणलीला" ३९ कडीनुं सवैयानी देशीनुं नानुं काव्य छे. एमां विशेष कोई चमत्कृति नथी, परंतु महत्त्वनुं तो "सुदामाचरित्र" छे. झूलणानां नव पदोनु—५२ कडीओनुं आ काव्य भक्त सुदामानी भगवाने

अर्चित्य रीते केवो मीठ भागो एनु भागवतानुकूल छता निरूपणनी दृष्टिए स्वतंत्र चरित आपे छे आ जातनी पद्धतिए भक्तचरित वारकरी संप्रदायना नामदेवे पण आप्या छ एटले एवी कोई प्रणाली नरसिंहनी सामे अवश्य छे (एणे पसंद करेली झूलणानी देशीने पण नामदेवना अभंगोनी साथे घणु साम्य छे) नरसिंह महेताना प्रकारनी एक फाकलुदी नामदेवना शब्दोमा :

"विठ्ठल माउली कृपेची कोंवळी, आठविता घाली प्रेमपान्हा.
मज का मोकलिलें करुणा निरविलें, कठिण कैंमें झाले हृदय तुझें
तुज विण जिव लग दुजें कोण होईल, जे माझे साहील जड लादी
तू माझी माउली मी वी तुझा वत्स, परतों परतों वाट पाहें तुझी
माता मोहें तैसी न विसपे सर्वथा, अतरीची व्यथा कोण जाणे
नाम म्हणे विठ्ठले यागे सलो सी, केव्हा सामळिसी अनाथनाथे"

पाठ करवाथी आ अभगना यधु अन नामदेवनी भगवानने विनति करवानी पद्धतिनु नरसिंहना झूलणा अन विननि साथ मळतापणु स्पष्ट समयाशे नरसिंह पोताना पदोमा 'नामदेव' नो नाम पाडी निर्देश करे छ, 'कबीर' नो पण, आम ए बनेनी रचनाओनो एनो गाढ परिचय होवानु अछतु रहेतु नथी तेथी ज नरसिंह महेताने साक्षात्कारना रूपमा मळेला भगवान शिव एने द्वारका लइ गया अन त्या भगवाननी अनेकविध लीलाना दर्शन कराव्या ए स्वाप्निक रूपकनी पाछळ कोइ उच्च काटिना मराठी संतनु अस्तित्व यदाच नकारी शकाशे नहि.

नरसैयाना प्रभातिया

नरसिंह महेतानी काव्यरचनानो त्रीजो महत्त्वनो अने एने उच्च प्रकारना भक्तकवि तेमज गुजरातीना आदिकवि थवान पात्र बनावतो साहित्यप्रवाह ते तो एना सैंकडानी संख्यामां मळता दोहरा–सवैया–झूलणा वगेरे बधोना विविध रागोमा अन तालोमा गवाता पदो छे. खूब ज जाणीतु छे के नरसिंह पोतानां 'प्रभातिया'थी मशहूर छे आ

' प्रभातिया ' एटले ' प्रभाती ' राग (' रामगरी ने खूब ज निकट छे तेवा)ना सैंकडो पदो–कीर्तनो छे. पचासेक वर्षो पछी श्रीवल्लभाचार्यजीना अष्टछापीय सुरदास वगेरे चार भक्तकविओए व्रजभाषामां कृष्णलीलाना हजारोनी संख्यामां पदो–कीर्तनो गाया तेओने जे प्रवाहमांथी परंपरा मळी हशे तेवा ज कोई प्रवाहमांथी नरसिंहने पण मळी हशे ज. मराठी साहित्यना एना परिचयने कारणे महानुभावपंथना भक्तकविओनी परंपरामां नरसिंहे स्वतंत्र रीते भारे प्रगति साधी तो एनी ' चातुरीओ ' तो जयदेवना ' गीतगोविंद 'नी अष्टपदीओनो प्रकार ज मूर्त करी आपे छे. एनी पासे ' भागवत ' पण छे ज एनी ' राससहस्रपदी 'ना सख्याबंध पदो तो ' भागवत 'ना ' दशमस्कंध 'नी रासपंचाध्यायीना केटलाक श्लोकोनो सीधो पद्यानुवाद ज छे, जेमके

पदानि व्यक्तमेतानि नन्दसूनोर्महात्मनः ।
लक्ष्यन्ते हि ध्वजाम्भोजवज्राङ्कुशयवादिभिः ॥२५॥
तैस्तैः पदैस्तत्पदवीमन्विच्छन्त्योऽग्रतोऽबलाः ।
वध्वाः पदैः सुपृक्तानि विलोक्यार्ताः समब्रुवन् ॥२६॥
कस्याः पदानि चैतानि याताया नन्दसूनुना ।
असन्यस्तप्रकोष्ठाया करेणोः करिणा यथा ॥२७॥
[भा १०–३१]

" आ जोनी आ केनु पगलु, पगले पद्म तणु एंधाण;
पगला पासे बीजुं पगलुं, ते रे सोहागण नौतम जाण १
पूरण भाग्य ते जुवती केरु, जे गई वहालाने सगे,
एकलडी अधररस पीशे, रजनी ते रमशे रंगे. २" वगेरे

' भागवत 'ना शब्दोनो–वाक्योनो मुक्त अनुवाद होवा विशे कशी शका नथी (स्व दु के शास्त्रीना ' ऐति सशोधन ' ए लेखसग्रहमा ' नरसिंह महेताना कोयडानो विचार ' ए लेख (पृ १२४–१३७)मा अने मारा ' राससहस्रपदीना समुद्धार मा आ साम्यो विपुल प्रमाणमा स्पष्ट करवामा आव्यां छे) आम सीधु लीधेलु, भावदृष्टिए अपनावेलुं

કે સ્વતંત્ર રીતે આપેલું એનું પદસાહિત્ય. આમ છતાં, એની આગવી પ્રતિભાથી વિશિષ્ટ ભાત પાડી આપે છે.

બાલલીલાનાં પદોમાં એ વાત્સલ્યરસ ગાય છે:

"જસોદાજી ઝમવાને તેડે, નાચતા હરિ આવે રે;
બોલે મીઠડા બોલડિયા, ને અંગોઅંગ નચાવે રે. જ૦
મુખની શોભા શી કહું, જાણે પૂનમચંદ વિરાજે રે;
નેત્રકમળના ચાળા જોઈ જોઈ મન્મથ મનમાં લાજે રે. જ૦
અંજન વેઉએ નયણે સાર્યાં, ઉર લટકે ગજમોતી રે;
તિલક તણી રેખા અતિ સુંદર, માતા હરખે જોતી રે. જ૦
સ્નેહ જણાવીને પુત્રને માર્યો, આવીને કોટે વળગ્યો રે;
લાડકડો અતિ લાડ કરે છે, ક્ષણુ ના મેહેલુ અળગો રે. જ૦
ખોળે બેસાડીને ભોજન કરતાં માતા આનંદ પામી રે;
ભક્તવચ્છલ ભૂધરજી મળ્યા, મેહેતા નરસૈંયાનો સ્વામી રે. જ૦"

(ન. કા. સ.: પૃ. ૪૬૧, પદ ૧૩)

"માતા રે જસોદા હરિને ઘૂમણ ઘાલે;
આનંદે ઉલટે ઝમી વદન નિહાલે ૧
ઘમ ઘમ ઘમકે ઘુઘરિ હુંકારા કરે;
જોઈ જોઈ જનુનીનું મનડું ઠરે. ૨
જેહને કાજે મહામુનિ દેહ રે દમે,
તે તો કૃષ્ણજી પારણામાં રંગે રે રમે. ૩
સુંદર વદન જોઈ ચુંબન દીધું;
નરસૈંયાનો સ્વામી જોતાં કારજ સીધુ." ૪

(એજ, પૃ. ૪૬૫)

નરસિંહે વસંત હીંડોળા શરદ વગેરેનાં સેંકડો પદો ગાયા છે તેમાં સ્પષ્ટ રીતે શૃંગારરસ છે. સંયોગ તેમજ વિપ્રલંભ બંને પ્રકારનો શૃંગાર એ ગાય છે:

"हींडोले हींचे रे हेली शामलियाने संगे रे
मांहोमांहे हाम करीने केलि रे करे बहु रंगे रे. १
आलिंगन लई रदयामा मीडे, चरण चहोदिश थाए रे.
रागोनी लज्या हु पामु, त्यम त्यम वाद भराए रे २
वाजा वाजे, झाझर नेपुर, लटके उर पर हार रे.
अंतर थकी इंद्रादिक मोह्या, मुख बोले जेजेकार रे. ३
रंग रच्यो वृंदावन माहे, मधुरें वेण वजाडी रे;
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, गोपी प्रेमें झाडी रे ४"
(नरसं महेतानां पद : १९)

नरसिंह आलंबन विभाव साथे उद्दीपक विभाव पण साधी, अनुभाव पण कुशळताथी वर्णी ले छे स्थायी भाव तो व्यापक रूपे स्पष्ट छे. संयोग शृंगारनां सेंकडो पदो छे तो विप्रलंभना पण, प्रमाणमा ओछां, छे :

"सजनी रे, चो दीशे वेण्य वाजे.
रह्या भीतर वेधीला, वाई रे, कामव्हेहेरें अंग जागे. १
शुं कीजे? जो, पेला दुरिजन देखे, नणदि आल चटावे.
शही न शके पेली शरडी सासु, ज्यहा तिहा केडे आवे. २
ज्ये कहेशे ते शेहेशुं सरवे, आपण, चालो, जोवा जइये.
नारसियाचा स्वामीने संगे शही अपराणी थइये. ३"

अने — (एज पद : २०८)

"वारो रे ओल्या पंखीने, मारी आगत्य पडियो.
म्हेंने बाणे मारवा विधाताए घडियो. १
पखीनो शबद शोहामणो, आधी रात्य पुकारे.
बापैयो नहि, पापैयो, मरतीनें मारे. २
एक अंधारी रात्यडी, बीजी वीज झबूके.
कंथ-विछोही कामिनी तेनुं ह्रयडु अबूके. ३
बापईडो 'पियु, पियु' करे, रजनी क्यम जाए?
नारसियाचा स्वामी विना रखे वेणु वाये! ४"
(एज : पद २४३)

एक एकथी एक एक चडियाता एवा पदो विरहिणी नायिकानी स्थितिना दर्शन आपता मळे छे एनी 'चातुरीओ' तो द्विविध प्रकारना शृंगारनी श्रेष्ठ रचना छे एमा जेम नायकनी विरहवेदना निरूपाई छे तेवी ज नायिकानी प्रबळ विरहवेदना पण निरूपाइ छे ललितानी उक्तिमा 'कृष्ण'नु स्वरूप

"सुणोजी, सलुणडा रे रेण रास रम्या ने भरो छो तम्हे नेण,
सु दुःख छे रे तम्हने नाथ, वल्हहा, कहोने सुन्दने वात १
ढाळ – वात कहोने वल्हहा का थई रह्या छो उदास ?
सियाने ते काजे स्यामजी मूको छो सुख निसास ? २
वदन ताहरु वाल्हमा करमाणुं केहेने स्ये माटे ?
कपोले कर का देई रह्या ? उपनो स्यो रे उचाट ? ३

° ° °

सुद्धबुद्ध नाहरी सामळा सुणे हरी, केहे साम
नयणे ते आसु का पडे, वैष्णवना विसराम ? ६"

(चातुरी – १)

'चातुरीओ'मा नायक – नायिकाभेदना दर्शन जयदेवना 'गीत गोविंद'नी पद्धतिए जोवा मळे छे 'चातुरीओ' आख्यानकोटिमा जई शके एवी छे, छता नरसिंहनु एमा पोताने मात्र एक पात्र तरीकेनु चित्रण एने 'आत्मलक्षी कविता'नी कोटिमा लई जाय छे

उपदेशात्मक पदो

एणे केटलाक उपदेशात्मक पदो पण रच्या छे 'रात्य रहे ज्याहरे पाछली खट घडी' 'ध्यान धर ध्यान धर नंदना कुवरनु' वगेरे गण्य सख्याना आ छे, तो भक्ति अने ज्ञाननु निरूपण करनारा पण गण्य सख्याना छे आदर्श भक्तनु स्वरूप व्यक्त करनारा 'वैष्णव जन तो तेने र कहिये' जेवा पद पण मळे छे, भक्तिना माहात्म्यना पण 'भक्ति विना जे जन जीवे' 'वास नहि ज्या वैष्णव केरो' 'नारायणनु नाम ज लेता'

वगेरे पण थोडी संख्यामां मळे छे. तत्त्वज्ञानने लगतां तो खूब ज थोडां छे, परंतु जे मळे छे तेमां एना ज्ञाननी उत्कृष्टता अछती रहेती नथी; त्यां ए मात्र ज्ञानी ज नथी, उच्च कोटिनो प्रतिभाशाळी कवि पण छे : " सर्वं खल्विदं ब्रह्म " अने ' स द्वितीयमैच्छत्–स ह एतावानास " जेवा उपनिषत्सिद्धांत एनी वाणीमां सूचक छतां मार्मिक रीते रजू थाय छे :

" जागीने जोउ तो जगत दीसे नहि,
ऊंघमां अटपटा भोग भासे.
चित्त चैतन्य विलास तद्रूप छे,
ब्रह्म लटकां करे ब्रह्म पासे.
पंच महाभूत परिब्रह्म विषे उपनां,
अणु अणु माहि रह्यां रे वळगी.
फूल ने फळ ते तो वृक्षनां जाणवां,
थड थकी डाळ ते नहि रे अळगी.
वेद तो एम वदे, श्रुति स्मृति शाख दे,
कनक कुंडळ विषे भेद न्होये
घाट घडिया पछी नामरूप जूजवां,
अंते तो हेमनुं हेम होये.
जीव ने शिव तो आप–इच्छाए थया,
रची परपंच चौद लोक कीधा.
भणे नरसैंयो : ते ज तुं ते ज तुं
एने समर्याथी कई संत सीध्या. "
(न. का. सं. : पृ. ४८६, ४३)

काव्यगुणथी भरेलुं :

" निरख ने गगनमां कोण घूमी रह्यो,
ते ज हुं ते ज हुं शब्द बोले.
श्यामना चरणमां इच्छुं छु मरण हु,
अहींयां कोई नथी कृष्ण — तोले.

શ્યામશોભા ઘણી, બુદ્ધિ ના શકે કળી,
અનત ઓચ્છવમા પય ભૂલી
જડ ને ચૈતન રસ કરી જાણવો,
પકડી પ્રેમે સજીવન મૂળી
ઝળહળ જ્યોત ઉદ્યોત રવિ કોટમા
હેમની કોર જ્યાં નિસરે તોલે
સચ્ચિદાનદ આનંદ ક્રીડા કરે,
સોનાના પારણાં માહિ ઝૂલે
બત્તી વિણ તેલ વિણ સૂત્ર વિણ જો વળી,
અચળ ઝળકે સદા અનલ દીવો.
નેત્ર વિણ પરખવો, રૂપ વિણ નિરખવો,
વણ – જિહ્વાએ રસ સરસ પીવો.
અકળ અવિનાશી એ નવ જ જાએ કળ્યો,
અરઘ ઉરધની માહે મહાલે.
નરસૈંયાચો સ્વામી સકળ વ્યાપી રહ્યો,
પ્રેમના તતમા સત ઝાલે.''

(ए ज पृ ૪૮૫, ૪)

શ્રીવલ્લભાચાર્યના અવિકૃત પરિણામવાદ – વિશુદ્ધ બ્રહ્મવાદ કિંવા શુદ્ધાદ્વૈત સિદ્ધાતના બીજરૂપે અને ઉપનિષદના મહાવાક્ય ' ઐતદાત્મ્યમિદ સર્વં, સ આત્મા તત્ત્વમસિ ''ના તેમજ સમગ્ર સૃષ્ટિ ભગવાનની ઇચ્છાસૃષ્ટિ છે એ ઉપનિષદિસિદ્ધાતનાં દર્શન નરસિંહના ઉક્ત પદોમા સુલભ છે શ્રીશંકરાચાર્ય પછી તરતમા જ થયેલ ભર્તૃપ્રપચના સિદ્ધાતમા આનો થોડો પણ વિકાસ દેખાય છે લગભગ એની નજીકમા જ થયેલ દ્રવિડ દેશના નૃસિંહોપાસક વિષ્ણુસ્વામીના સિદ્ધાતમા તો ' શુદ્ધાદ્વૈત નો ઝાખી થાય છે જ નરસિંહ આ પરંપરામા હોવાની ઓછી સભાવના નથી અને ' જ્ઞાનેશ્વરી ભગવદ્ગીતા '

३.　　[शृं १३१]

हजी न धाओ रंग रमतां,
प्यार पोहोर निशा निठुर नीगमतां
अधरसुधारस पीडी पीडी पीधी रे,
केसरी कामने में पुठटी न दीधी रे. १
पीन पयोधर पाख्खर कीधी रे,
सुरतसंग्रामे हुं वढती सुधी रे. २
नखशिखा लागे ताकी ताकी मूकी रे,
केसरी काम-सुं वढतां न चूकी रे. ३
उदयो दिवाकर, रजनी वीती रे,
नारसहिंआचो स्वामी सगम जीती रे. ४

३. १. धाओ नीशा. पीधि. कामने. २ पाषर. ३. शीखा मुकी - काम. ४. दीवाकर. स्वामी.

४.　　[शृ. १३२]

नित नित लाड्यवर लक्षण रूडां,
मोटेरां थइए रे त्यम त्यम बोलिए कूडां. १
मात यशोदा जाणे रे माह्यरो लाडयको पुत्र,
वाहालेजिए ठाम ठाम मांड्यां घरसूत्र. २
जेहनूं ब्रह्मादिक ध्यान धरे, सुर मुनि गाए,
द्रिष्टे पटी नारद्य विना रमी न जाए. ३
सीप देअंतां दूवासो मा, शामला काहान,
नारसहिंआचि स्वामिए नारद्यने दीधुं सनमान. ४

४. १. थईए बोलीने. २. पूत्र. वाहालेजीए.–सुत्र. ३. जेहनू ब्रह्मादीक ध्यान. मुनी. वीना. ४. सीप. काहांन. स्वामीए. दीधु सनमान.

५. [शृ. १३३]

वाहालाजी, तमो रे नाहानटिआ, अमो रे नाहानडली,
सरखे सरखी जोड मली.
पेहेलुं आलिंगन दो, माहारा वाहाला;
पछे अमो देशुं ललीअ लली. १
सुंदरिआंचा सेहेज अईसा
पिउने मलवा हींडे घणुं;
आलिंगन एणी पर दो, माहारा वाहाला,
रखे अम देखे एक जणुं. २
तले नाहना, हुंअ ज नाहानी,
नणदी आघापाछा करे.
सासुने घेर ए लाडकडी रे,
ते अम वारी क्यम वरे? ३
शुं करे सासु, शुं करे नणदी,
जेहना हृदेमां हुं रे वसो.
नारसहिंआचा स्वामी शुं रमतां
संसारमां तेहने भेय करशो? ४

५ १ नाहानडीआ नाहानडली सरषे सरषी. पेहेलू आलीघन. देशु २ सुंदरीआचा पीउने. ३. घणु. आलिघन जणु नाहना नाहानी. ४. स्वामीशु. समारमा.

६. [सृ. १३४]

पाछली रात पाओधारिआ नाथजी, घूमते लोचन अंग डोले,
व्योह पासे सुंदरी बांह कंठ धर्ग; शोभित भवन को नहि रे तोले. १
हुं रे संमुख हुई, रीस मननी गई, उभी रही चकित-गति प्रेम निरखुं.
प्रभुअने रसभरी सुख दान सर्वरी,
नारच सौभाग्य तां जोइ रे हरखुं. २
सोक तणा च्यार चरण मुस्तकि धरी
प्रभुअ पधराविआ पलंग पूठे.
भोग संजोगथी अधिक सुख भोगवू,
ए रे मूरत एणी पेर डीठे. ३
भणे नारसहिंओ : नित नेह ते नित नवा,
जहां रे गोविंदगुण-गण-समाधि.
सुं जाणो ब्रह्म सुर स्नेहनी वारता ?
भरा अधिकारनी आध व्याधे. ४

६. १. पाओधारीआ. घुमते. नहीं २. समुप चकीत –दान. ता.
३. पधरावीआ. अधीक सुप भोगवू मुरत. ४. सु ब्रह्म

७. [सृ १३५]

पलंग पाए तने कुसुममाला वडे
वेहु कर बांधोस लाज लोपी.
माहरे मंदिर थको कोण मूकावशे ?
शुं करसे सहु सोकं कोपी ? १

तुं वनमाली काहावे, हुं कुसुमवन-वेलडी,
नीर नित शींचतो कां अरोपी ?
भमर जाए फूल फूल मकरंद-वश,
कमल-माहे तन रह्यो रे रोपी. २
प्रीतनो करनार प्रेमना पात्र—शुं
तन मन प्राण तांहां मेहेले सोंपी.
भणे नारसहिंओ : जम रीस ऊनरे,
त्यम तुं शीख सें न दे रे, गोपी ! ३

७. १. मदीर. २. निव ३. ताहा. उतर.

८ [पृ १२६]

सांभलो, कामनी, क्रिष्ण काभर कहे,
ताहारा मंदिर थकी नहि रे जाउं.
अवर को नारच नहि तुझ सरखी,
जेहने फूल कर्गी हुं बंधाउं. १
तुं वन—वेलडी, हुं वनमाली,
सींचवे समर्थ द्रिष्ट करी.
प्रेमनी वाड करूं तुझ पाखले,
राखुं सीतल पाणि धरी.
सांभलो, सुंदरी, एम कहे श्रीहरि,
जेहेनी फूलमाला करी हुं रे बाधो.
चौद भुवन तणां बंधन छोडवूं,
में जाणुं तें मोहनी-मंत्र साधो. ३

मान तुं, माननी, मान मागी कहुं,
नहि तजुं मंदिर, बोल दीधो.
नारसहिंआचो स्वामी सर्व रस ल्हो,
सुरतसंग्राम–आधीन कीधो. ४

८. १. कीण्ण. मदीर. नही रे जाउ. नही. वंधाउ. २. हु. करू. पापले. रागु ३. तणा. छोडावू. मे. ते ४. मांन. मांननी. मांन. व्हु. नही तजी मदीर. घोघा.

९. [शृं. १३७]

मेहेल, पीतांबर, अंबर माहारूं,
सूर ऊग्यो, सुई क्यम रहिए ?
अम घर सासु नणद जूठी विसे,
कंथ पूछे त्यारे सुं रे कहिए ? १
साविज शब्द करे अतिसुंदर,
दीपक-तेज तां खीण थाए.
कंठथी कुसुमचा हार करमाइया,
बाहेर राग पंचम गाए. २
तूं ताहारे मंदिर प्रेम-शुं पोढिओ,
माहारे मंदिर दूर जावूं.
लोकनी लाज लोपी रे लक्ष्मीवर,
हुं रे वलती हवे नहि रे आवूं. ३
धेन दोहोवी घेर, वाछरू विलवले,
मही रे विरोलवूं आज माहारे.

कंठथी बांहोडी काढि, कमलापति,
कालि आवे हवे कोण ताहारे ? ४

सुरतसग्रामनी सात्य ज हुई,
रही रे उजागरी शीस नामी.

नारसहिं[आ]चो स्वामी सुखसागर,
विरहची वेदना तांह रे वामी. ५

९. १ माहारू मुर उग्यो रहीअे सु रे कहीअे २. पीण. ३. मंदीर. शु पोढीओ मदीर दुर जावू नही. ४. वीलत्रले वीरोलवृ कमलापती. ५ सुनी सग्रामनी. नामी. सुपसागर. वामी.

१०. [शृं. १३८]

अम-शुं कपट तणी वात ज छांड,
माहारे घेर आवां तो कांई उफांड म मांड. १

जोडां जुगम बोलीस, जाणुं ताहारी वात.
निशा वगी रमी नाहाशी आव्यो छे प्रभात. २

अंग चेहेन ताहारे दीशे छे घणां.
जोइने विमाशी बोले चतुर सुजाण. ३

घेर आव्यो रे, से न दीजे मान [१]
नारसहिंआचो स्वामी सुखनुं निधान. ४

१० १. कांई २ बोलीस जाणु. नीशा. ३ जोईने वीमासी. सुजाण ४. स्वामी सुखनु नीधान

११. [शृं. ११९]

सर्मी रे सांजनां सोटमां सूतां, नणदिर साद कीधो रे.
हवुं प्रभात, पिउ थओ गेहेलो, ऊंघरटो जइ सूतो रे. १
हरिनुं पीतांबर मेंजे रहुं रे, पाल्टीने पटकोल गओ.
कयम फरी वन जाऊं रे मही वेचवा, दुरिजन लोक दोहेला रे. २
अणघटतां मुंने आळ ज बोले ते कोहोने न केहेवाए रे.
डीटडे डाढ गले, अहो सनिआ, तो अभिमान शुं करिए रे! ३
नारसहिंआचो स्वामी भले मलिओ, भवसागर ऊतरिए रे. ४

११. १. सांजना सोटमा सुता. नणदलीए. हवु. पीउ. उंघरटो जई. सुतो. २. हरिनु रहु. शकु. दुरीजन. ३. सहीआ. शु करीअे. ४. मलीओ. उतरीए.

१२. [परि १ १४]

टलतो टलतो हींरिस मा रे, आलिंगन दीधा व्यना क्यम सरे!
आगे अम घर नणदर जूठी ऊठीने अदेखी हेरे रे. १
सासु ससरो मात पिता रे जे बोले ते सहिए रे.
पूरवे ए-शुं अनुभव छे रे, तो मूकी कयम जइए रे! २
ए रस जाणे जवरलो रे जोगी, केवली मुनिवर जाणे रे.
शुक सनकादिक नारद जाणे, जेहने वेद वखाणे रे. ३
के रस जाणे व्रजनी रे नारी के जेदेवे पीधो रे.
ऊगरतो रस ढलतो हुतो, नारसहिंए झोटीने लीधो रे. ४

१२. १. हींडीस. आलीघन. उठीने. २. पीता सहीअे मुकी ३. जाणे. मुनीवर जाणे सनकादीक जांण वखाणे. जाण. येदेवे

१३. [शृं. १४०]

*केसरभीना काहानजी, कसुंभे भीनी नार,
लोचनभीनां भाव-सुं ऊभां नंदद्वार. (१)
वेहू माहा सुंदर, कोहो न हुइए, वनिता ने त्रिजनाथ,
परखी परखी घसो; तमने माणकडां वेहू हाथ. (२)
वेगे कुंज पधारिआ तो लचके थई झगझोल.
नारसहिंआचो स्वामी भले मलिओ, रंग तणा वहु रोल. (३)

* [गु वि. स.–द. इ. लि. पु. न ६९ मांनां १२ पदो सं. १६६८ मां लखायेलां छे, ज्यारे छेल्लुं जुदा हाथे पछीथी लखायेलु छे–पद जूनु ज छे.]

१३. १.–भीना भावसु उभा. २. व्रना ने व्रीजनाथ माणकडा. ३. कूञ पधारीआ मलीओ बहू.

१४. राग रामग्री

सुरत-शोभागी शामला, सहु को यश गाए.
अंग थोडो तुं........थकी वलवंता बांहाए. १
दिवस मधी श्रम कां करां ? जो तुं वन्य न जाए,
तो अंगोअंग साख रे सेजे न समाए. २
आलिंगन अंतर रहां, अंबोडलो साहे;
अधर अमृत यम सींचिए त्यम मोटेरडो थाए. ३
बोलवाल अति मोद-शुं सहियर समदाए.
नारसहिंओ तांहां सांभळे उमानाथ–पसाए. ४

१४. रामग्रि २ दिवश. साख. ३ आलीघन रहा. अम्रित. सींचीए.
(आ १४ अने १५ मां पदो पण आ ज पोथीमांथी लीधा छे; स. १६६८ मां ज लखायेलां छे)

१५. [पृ. ३५१]

सुंदरीरत्न-मुखचंद्र अविलोकवा शामले सनमुख दृष्ट कीधी.
नयण नयणां मळां, विरह-आतुर टळां,
अंक भरी नाथ अर्धांग लीधी. १
बांहो कंठ धरी सुमुखी-गुण उच्चरे,
' त्वमसि मम जीवनं ' नाथ बोले.
' त्वमसि शृंगार मम, हार उर–भूषणा
त्वमसि मम' मग्न चित संग डोले. २
तन मन प्राण धन सर्व तां सुंदरी,
मान्य, मृगलोचना, वचन माहारूं.
यद्यिप मुख थिका वीसरो, वल्लभ;
हृदेमां रहे ध्यान ताहरूं. ३
धन्य कुलकाम्यनी, क्रिष्णु गुणस्तुति करे,
जेहनूं भव-विरंचादिक ध्यान धरता.
नारसहिंयाचो स्वामी सुखसागर,
एहनी गुणस्तुति एह करता. ४

१५. १ सनमुप. २. सुमीखी – भुपणा. तुमसी (त्रणे स्थळे) चीत. ३ मांन्य म्रिग-. माहारू. मुप थीका. ध्यान ताहारू ४ धन्य क्रीष्णु. –वीरंचादीक ध्यांन स्वांमी

हींडोलानां पद

१६. राग धन्याशरी

विचित्र रस नें नव[ली] लीला, नंदकुंअर रग रचियो रे.
मानवतीनुं कोड पूरवा सुंदर शणगार सजियो रे. विचित्र० १
हींटोले हींचे मारो वालो, हींटोळ नंग-खचियो रे.
मुखडुं जूए सरव सुहागण, आडो घुंघट खंचियो रे. विचित्र० २
केसर घोळीनें अंगें रोली, वेश अनोपम दीशे रे.
नकवेसर ल्टके गजमोती अधुरबंब परि दीशे रे. विचित्र० ३
पीतांबर प्रेमें-शुं पेरी श्यामवरणी शाडी रे.
नेपुरियां रणके नर-नरतां, पेहेरण कंचुकी गाढी रे. विचित्र० ४
अळते पाए रंग्या रे पनोती, रतनजडित-सी कांबी रे.
कंकण चूडी कनक तणी रे, लेहेकाने वेणी लांबी रे. विचित्र० ५
कुसुम तणा हार माथे घाल्या, आजी आएय अगियाळी रे.
नारसिया[चो] सामी भलें मल्यो, शी शोभा कहुं वाली रे? विचित्र० ६

हवे हींडोलाना बधे हींडो० जोडणी. १६. रे हींचे -पचियो पचिया
५. लाबी. ६. नारसीया सामी कहु

१७ राग धन्याशरी

सुंदरीनें मुख मनगमतुं मनगमतुं गोविंदजिये कीधुं रे.
कुंअरीनें कुंअर-पद आप्यूं, भावतुं भूषण दीधुं रे. सुंदरी० १
हींडोले आव्यां कशमशतां, हरि हींडोले बेठां रे.
जोवा सरखो जस हींडोलो, भाग होए तेणें डीठां रे. सुंदरी० २

ज्ये रस छे ब्रह्मादिक-दुल्लभ ते हरिजननें सुल्लभ रे.
नानाभात्य रमे महारसियो ते नारसियानो वल्लभ रे. हीं० ३

२०. १. हीच सीचे. मीचे. २. पसरो श्रम. ३. ब्रह्मादिक-दुलभ. हरिजनने सुलभ रे. वलभ रे

२१ राग सामेरी [परि २ ६३]

सजनी, आ शोभा रूडी, सामलियो नें शामा जोडी. १
ते तो हरखें हींडोले हींचे रे, वालो प्रेमचा रस सींचे रे. २
घूमणडी ते घाले गोपी रे, मरजादा सघली लोपी रे. ३
पीली पलवट सुंदर शोहे रे, तेनें तेजें त्रिभोवन मोहे रे. ४
वालो कंठ वाहोडी देतो रे, आलिंगन वनमाली लेतो रे. ५
त्यांहा विविध वाजां वाजे रे, तेम मेघघटा घन गाजे रे. ६
नीलां पीलां अंबर झलके रे, नाचंतां नेपुर खलके रे. ७
श्यामा लेहेके मुग[ता]हार रे. श्यामा सजी सकल शणगार रे. ८
जोवनमां ज्युवती माती रे, ते तो मधुरे मधुरे गाती रे. ९
गोपीवर गेन्य करावे रे, ज्यमुनांत्रट सुंदर भावे रे. १०
त्यांहां मोर कोकिला बोले रे, जोतां नहि को एनें तोले रे. ११
श्रीवंदावन विलसे नाथ रे, एणें मोह्या सुरिनर साथ रे. १२
ब्रह्मादिक भेद न जाणे रे, ते तो निसदिन गोपी माणे रे. १३
नारसिया केरी वाणी रे, कृष्णे आपी ते करुणा आणी रे. १४
चलि पोते पोतानो कीधो रे, महारसमां ताणी लीधो रे. १५

२१. १ रुडी २. हरषें. सीचे. ३. शघली ४. त्रीभोवन ५ आलिंगन. ते तो. ७. पीला. पलके. ८. शकल. ११ नहीं. शाथ. १३ ब्रह्मादिक नीसादिन. नारसीयां १५. ताणी.

२२　　राग सामेरी　　[परि २ ६९]

सजनी, जुओ नाथ निहाली, वालो वाहे छे वेण रसाली. सज० १
घुमणडी ते हळवें घाले, सुखसागर मोहन माले रे. २
शिरमुगट महामणि सार रे, कानें कुंडल-ज्योत्य अपार रे. सज० ३
वनमाला उर पर लेहेके रे, तिम चूआ चदन वेहेके रे. ४
शामळडी ते शोहे अंगें रे, अति ऊलट वाध्यो रंगे रे. ५
वालो हसी रदया भीडे रे, व्यहा कामनी-कामने पीडे रे. ६
श्यामा सनमुख्य सर्वे ऊभी रे, शणगार सकल श्यामा शोभी रे. ७
श्यामा सान करी करी जोए रे, ज्युवती जनना मन मोहे रे. ८
ताली ताल पखाज घुघरडी रे, आगल नाचे नारी रूडी रे. ९
उमग्यो रस, कौतक भारी रे, आनंद्या अबला नारी रे. १०
घुमणडी ते घाली लाबी रे, पाए खलके कनकमे काबी रे. ११
तेनें नादें नेपुर वाजे रे, पडछदे धरा एम गाजे रे. १२
वालो मरकलडो करी बोले रे, तेम आवी हींडोलो लोले रे. १३
वालानें वाली लागे रे, मान मूकी घणु पाए लागे रे १४
नारसियो रसमा मातो रे, गोपीवरना गुण गातो रे. १५
तो पाम्यो महाफल मोटो रे, तो चरणरेणमा लोटचो रे. १६

२२ २ सुपसागर ३ –योत्य ४ चुआ. ५ उलट ६ कामनी ७ उभी शोभि ८ शान ९ पखाज. रुडी १०. आनद्या ११ पलके कावी १२. नेपूर पडछदे १४. मुकी १५ नारसीयो

२३ राग सामेरी

सजनी, झिरमर झिरमर वरशे रे तिम नाथनें नारी विलशे रे. १
लपटाणां अंबर अंगे रे, घुमगडी ते घाली रंगे रे. २
अबलाए अंबोडो वाल्यो रे, उर अंबर अंतर टाल्यो रे. ३
चतुरानें चोळी चमके रे, नकवेशर मोती लटके रे. ४
तेम वादे ते वीज झबूके रे, मध्य मोर मधुरा टहूके रे. ५
वांसलडी ते वालो वाहे रे, तेम नाचे ने गोपी गाये रे. ६
कामा कामगेहेलडी डोले रे, मनमोहन शुं हशि बोले रे. ७
गोफणडे घुघरडी घमके रे, ताली देतां झांझर झमके रे. ८
हींचे हींचोळे वनमाळी रे, वारे वारगां वाळी वाळी रे. ९
घाले कंठ मुगताहार रे, मोह्या मरकलडे नंदकुमार रे. १०
एक ऊभी नाथ नेहाळे रे, एक चाली चमर ढाळे रे. ११
एक फूली अंग न माए रे, एक भीडे रदया मांहे रे. १२
करे देव दुंदुभि-नाद रे, श्रवणे शुणी श्यामा शाद रे. १३
करे कुसुमनी वृष्टि अपार रे, मुख बोले जेजेकार रे. १४
नारसियो प्रेम-भराणो रे, श्यामा सत्ते मांहे प्रमाणो रे. १५
लीला जोतो तृपत्य न थाउं रे, ताल लेईने पाछल्य गाउं रे. १६

२३. १. झीरमर झीरमर. ८. झाझर. ११. उभी. १२. फुली. माहे. १४. मष्टी १५. नारसीयो. १६. थाउ. गाउ.

२४. राग सामेरी

सजनी, शामलियो वालो, श्रीराधा गोरी, कान कालो.
तमें नयण भरी भरी निहालो, रसपूरण छे रढियालो. सजनी० १

ऊपटाणी अवला अंगे रे, मनमोहन वाध्यो रंगे रे. स० २
भुज भींडी भामिनी वाले रे, श्यामा सवल घुमरडी घाले रे. स० ३
नीली पीली पलवट झलके रे, मुख जोईनें मानिनी मरके रे. स० ४
शोहे शीश राखडी रूडी रे, वली फरके फुंमक जोडी रे. स० ५
इम विलसे नंदकुमार रे, प्रेमदानो प्राणआधार रे. स० ६
एनी मांटें मोहन-वेन्य रे, परमावधि रगनी रेल्य रे. स० ७
वृंदावन फूल्युं अपार रे, त्यांहां पमरचो प्रेमल सार रे. स० ८
वलि त्रिविध पवन अति वाये रे, त्याहा घन गरजी घटा थाए रे. स० ९
घूघरडी ते घमके पाए रे, माहे नेपुरनाद शुहाये रे. स० १०
गोपी करती मधुरुं गान रे, कोहोने रही न शुध्य बुध्य सान रे. स० ११
कंठ बांह परसपर घाले रे, सुखसागर श्यामा माले रे. स० १२
ते शोभा कही न जाए रे, वश कीधा ज्यादवराय रे. स० १३
कृष्ण कामिनियें उर लीधा रे, एणे प्रेम प्रबल रस पीधा रे. स० १४
नारसिया-मनोरथ सीधो रे, लीला देखी प्रेमरस पीधो रे. स० १५

२४. १. ल्पटाणी अवला ३. भामनी शबल ४ जोईनें माननी. ५. रुडी ६. ईम ७ परमावीध. ८ फुल्यु त्याहा पशरयो. १०. नेपूर–. ११. शान १२ बाह. १४. कामिनीयें १५. नारसीया–.

२५ राग सामेरी [परि. २, ६४]

सजनी, जइयें रे यमुनां, वृंदावन केलि करे काना. स० १
हींडोलो बांध्यो हीर दोरी रे, शामलियो नें शामा गोरी रे. स० २
हींचवा बेहु जण बेठां रे, हुलरावे सखीजन हेठां रे. स० ३

लेहेरी ल्ये ललिता रस आची रे, हींडोले हींचे शोभागी रे. स० ४
तेनी क्रीडा कलि नव्य जाए रे, कंठ लाई अधुरस पाए रे. स० ५
घुमणटी घाले तेम नारी रे, मांहे विलमे लाठ लठारी रे. स० ६
कुच ग्रहिनें अंगोअंग भीडे रे, मानिनीने मनमथ पीडे. स० ७
निजरूप रसाइं गाए रे, विच वेण मधुरो वाहे रे. स० ८
त्यांहां ताल म्रदग झल वागी रे, रति रमण रमे वडभागी. स० ९
एम पुलिन पुरण शुहावे रे, सहु नंदनदनने हुलरावे रे. स० १०
नारसियो नित्य नित्य नाचे रे, सोभा देखी मुनिजन राचे रे. स० ११

२५. शामेरी. १. जईयें. २. वाध्यो ३ हूलरावे ५. क्रीडा. लाई. ७. ग्रहीनें माननोना. ८ रुप वीच. ९ त्याहा रती वहु. १० शहु ११. नारसीयो. मुनीजन.

२६. राग आशावरी [परि. २. ६५]

नानकडी नानकडी गोपी ठमठमती ठमकाली रे,
प्रगट पयोधर कांइक दीशे, पल्वटली [त्यांहां] वाली रे. ना० १
श्रावण मास मध्यें श्रवणी आगलि काजल राणी रे.
को लावें हींडोलो वांध्यो, हींचे शहिय शमाणी रे. ना० २
एक पाग एक ऊपरच बाहु, सनमुख्य रहिनें खेले रे.
नाथ बाथ भेरे नारीनें, नारी हरिनें न मेले रे. ना० ३
वालोजी हींडोले हींचे, पुष्पवृष्टि तिहां होए रे.
नारसियाचा स्वामीनुं कउतक निरखी सुरिनर मोहे रे. ना० ४

२६. १. नानक्डी नाटक्डी कांईक २. आगली. रांणी. वाध्यो शहीय. ३. पल्यग. उपरच. बाहु. ४ तिहा. नारसीयाचो. निरखि सुरी-.

२७.　　　राग आशावरी　　　[हिं. ३४]

परम चतुर झुले नाथ अमारो श्रीश्यामाजीनें संगे रे.
श्रवण शुणी शुगि अंगनी शोभा वारूं कोटि अनंगे रे. प० १
सखि, में डीठुं एक अदभुत, हींचंतां हरि हशिया रे.
श्यामा सनमुख्य द्रष्टि करीनें पीत्रा छे बहु रसिया रे. प० २
श्रावण मास परम सुखकारी, रमझम वरशे मेह रे,
दादुर मोर बपैया बोले, उपजे अधिक सनेह रे. प० ३
शाम सुरंग, राधा तन गोरी, सुरंग हींडोले झूले रे.
ज्येम ज्येम घूमरडी घाले नारसिओ त्यांहां फूले रे. प० ४

२७. १. शुणि – २. हशीया. बेहु ३ शनेह ४ झुले. नारसीओ त्याहा फुले.

२८.　　　राग मालव　　　[हिं. १६]

हींडोले हींचंतां रंगे संगे श्रीवनमाली रे.
घूमरडी घाले गजगामिनी देती परसपर ताली रे. हीं० १
शामलडी नें शामलियो सनमुख्य मरकलडो करती रे.
सणगटडो वालीनें जूए, जाचा भाव धरंती रे. हीं० २
मध्य छे मनगमती मोहननें शशिवदनी सकुमारी रे.
रंग–भरि रमती गाए गोपी, रीझी रह्या मुरारि रे. हीं० ३
हास करीनें वाहाले विनता काहानजिए कर शाही रे.
मनगमतुं कीधूं सुंदरवर, लीधुं चुंबन धाई रे. हीं० ४
पूरण प्रेम–प्रवाहें झीले, को केहनें नव्य जाणे रे.
भगे नारसियो : रंगरस वाध्यो क्रष्ण कामिनी माणे रे. हीं० ५

२८. १. हीचतां. घुमरडी. २. शामलीयो. जग. ३. –भरी. मुरारी. ४. काहानजीए. लीधी. सुंदरवर ५. जाणे. नारसीयो. कामिनि.

२९ राग मालव [हिं. १५]

माणे रे मोहन-शुं मानिनि, जुगती जोडी दीशे रे.
प्रेम धरी भुज भरी भामिनी हींचंतां मन हीशे रे. माणे० १
नीलांबर तारुणि-तन ओढे, पीतांबर पातलियो रे.
सघळी मांहे थइ सपराणी, जो वाहालो उर धरियो रे. माणे० २
एक नाचे, एक गान करे रे, एक घुमरडी घाले रे,
एक विधि विधिनां कुसुम वधावे, एक रहि वदन निहाले रे.
माणे० ३
ताल पखाज वेणुरस वाजे, झांझर नेपुर-नादे रे.
पार न पामे मुनिजन मोटा सुरिनर ब्रह्मा आदे रे. माणे० ४
प्रेम-मगन ऊलट अति वाध्यो, सुखसागरनी सीमा रे.
भणे नारसियो : धन्य ए नारी, वाळो विलशे वनमां रे. माणे० ५

२९. १.-शु मानिनि २. तारुणी- सघली. थई ३. घुमरटि. -विधिना. रही. ४. पखाज वेणु-. पामे. झाझर पामे ब्रंह्मा. ५ उलट. नारसीयो. वना

पीतांबर ते पियुजी केरुं अंगथी अळगुं थाए रे.
त्यम रमतां, तारुणि, मन मारुं ऊलट अंग न माए रे. हीं० ४
सतोखी खरवे सुंदरी फरती फरती हींचे रे,
नारसियाचो स्वामी वहाल धरीनें अधुर-सुधारस शींचे रे. हीं० ५

३० १. हिचन्ता रुडु २ कहु काइ. कोपी. शाही. ४. पीयुजी. अगथी. उलट शीचे.

३१.　　　　मालव　　　　[हिं. ३६]

हींडोले हींचे मारो वालो, हींचंना रग लागो रे.
श्यामा शामलियानें शाथें लाज तणो मे भागो रे. हीं० १
शोभाए सोहागें दंपत्य, रशिया-शुं रंग वाध्यो रे.
लेहेरी लेतां अंग-समागम वांछतडां वर लाधो रे. हीं० २
गिरधरलाल हींडोले हींचे प्रेम-मगन मदमातो रे.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो युवति योवन रग रातो रे. हीं० ३

३१. २. रंग लागो रे. वाछतडा. ३. नारसीयाचो. युवती.

३२.　　　　श्री राग　　　　[हिं. १९]

हींडोले तो हींचुं, मारा वाला, अमनें घूमण घाल रे.
घूमणटी घालीनें, मारा वाला, प्रेमे-शुं बोलाव रे. हीं० १
हींडोले तो हींचुं, मारा वाला, घूमण घालो लांबी रे.
पडखो रे पडखो, मारा वाला, गंभारुं पगनी कांबी रे. हीं० २
पालव छूटे, चीर वछूटे, वेण उघाडी थाए रे,
पडखो रे पडखो, मारा वाला, हींडोले न रेहेवाये रे. हीं० ३

तमारे पीतांबर, अमारे चीर, व्हाला, आपण वेहु बांधेशुं रे.
तमे नानडिया, हुं नानकडी, नव नवा रंग रमेशुं रे. हीं० ४
आंबा-डाळें सरोवर-पाळें शहियर रमतां रंग लागो रे.
आवो रे आवो, शाहेली, कान कनें कांइ मागो रे. हीं० ५
चूआ चंदन ने कस्तूरी छंटावो लट अंगे रे.
आवो रे आवो, शाहेली, काहानसुं रमिये रंगे रे. हीं० ६
श्रावण केरी मध्य श्रवणी रे हींची हींची धाया रे.
नारसियाचो स्वामी भलें मळियो श्रीगोकुळ केरो राया रे. हीं० ७

३२. १. घुमण घाल. बोलावे २. घुमण पडपा रे पडपो. ३. छुटे-वछुटे. पडपो रे पडपो. ४. बांधेशुं. रमेशु ५. आबा-. शरो-. शहीहर काई ६ चुआ. कस्तुरी. लई रमीये ७. द्राया नारसीयाचो.

३३. राग केदारो [हिं. ४१]

हींडोळे हींचे शामळियो, शामलडी सोहंती रे.
नीलांबर पीतांबर शोहे, जाणे घनदामिनी-ज्योती रे. हीं० १
घूमणडी घमकती रे, घूमण घाले गरवगे[हे]ली रे.
चतुरपणे-शुं चित्त चालवे, नयण नयणां रह्यां मेळी रे. हीं० २
उर वर चोळी कशण-कशी रे, चुनडलीनो चटको रे.
सनमुख थइ खेलतां वाजे बीछीडानो रणको रे. हीं० ३
मदमाती गाती रति रामा झांझरियां तो जमलां रे.
भणे नारसियोः अंगोअंग फूल्यो निरखि नाथ नारी सबला रे. हीं० ४

३३. १. -दामनी-योति. २. घुमण. चित. ३. थई षेलंता. ४. झीझरियानो. जमला. फुल्यो. शबला

३४. राग केदारो [हिं ४२]

हींडोले हेत्य देतो शामानें संग शामलियो शोहोतो रे. १
अधुर-अम्रतरस पीनानें प्रीतें आलिंगन ले अवला रे.
उर पर राखिनें हींचके हरखें, मनगमता माणे सवला रे. २
झांझर झमके, घुघरडी रे घमके. हींडोलो रस वाध्यो रे.
यदिप बलियो छे शामलियो, ते कामिनिये वश कीधो रे. ३
भरयोवनमां घूमग घाले, निहाले माती नारय रे.
भणे नारसियो : शोभा शी कहुं एहनी,
धन्य धन्य लीला अपार रे. ४

३४. २. राखीनें. शवला. झाझर. ३ कामनीये. ४. घुमन नारसीयो.

[कृष्णजन्मनां पद]

३५ राग कालेरो [कृ. व. १]

आनं[द] वाध्यो अति घणो रे, हरख्यां सुरिनर लोक रे.
जादवकुल्मां न्यादव जायो, मातानो टलियो शोक रे. आनंद० १
वसुदेवनें मन्य विसमे थयो रे, कारग-कुंअर आव्यो रे.
दुष्टनिवारण संकट-टालग श्रीगोकुलमां पधराव्यो रे. आनंद० २
दुंदुभि-नाद अंत्रीक्षथी वाजे, पुश्पनी वृष्टि तिहां थाए रे.
नारसियाचो स्वामी जशोदानें खोळे वसुदेव मेल्ही जाए रे. आनंद० ३

३५. २. -कुअर. संकट-. ३. दुन्दुमी-. तिहा.

३६. राग कालेरो [कृ. व. ५]

जशोदाजीनें आंगणिये रे सुंदर शोभा दीशे रे.
मुगताफलनां तोरण बांध्यां, जोइ जोइ मन हीशे रे. जशोदा० १
मोहोल मांहे मानिनी हींडे, ऊल्ट अंग्य न माए रे.
कुंकम केसर चरच्यां अंगे, घेरच घेर ओछव थाए रे. जशोदा० २
धन धन नंदभुवननी लीला, ज्यांहां प्रगटचा परमानंद रे.
रंगेरेल नारसियो गाए, मन वाध्यो आनंद रे. जशोदा० ३

३६. १. बाध्या. जोई जोई २ माननी. उलट ३ ज्याहां. नारसीयो.

३७. कालेरो [कृ. व ६]

चालो, सखी, आपण शहु जइये नंदकुंअरनें जोवा रे,
मुगताथाल भरी ल्यो शाथें, मंगल गान करेवा रे. चालो० १
धन्य जशोदा जीवन जायो, पूरण माहा तप कीधां रे.
पूरण ब्र[ह्म] अवलोकी जोतां मनवांछित फ[ल] लीधां रे. चालो० २
भगत तणां सुख पुरण करेवा नारायण अवतरियो रे.
क्रिपा करी ए नारसियाने, गुण–गोविंद ओचरियो रे. चालो० ३

३७. १. सखी. जईये. २. ब्र. लीधा. ३ क्रीपा. नारसीयाने.

३८. राग कालेरो

आजुनो दिन रलियामणो रे, ज्यहां प्रगटचा देव मुरारि रे.
मोती-चोक पूरचा अति सुंदर, मंगल गान उचारी [रे]. आ० १
हरख्या नंद-भुवनमां लीला, बहुविध दान देवाए रे.
कुंकम कलस कामिनी करच लीधा, घेरेच घेरेच मंगल गाए रे. आ० २

कोटि ब्रह्मांडनो नाथ कहावे, श्रीगोकुलमां अवतरियो रे.
नारसियाचो स्वामी दुष्ट-विदारण, मुनिजननो भय हरियो रे. आ० ३

३८. १. आजूनो ज्यहा मुरारी. २. -मा ३. ब्रंह्मांडनो. नारसीयाचो स्वांमी दूष्ट-. जनना.

३९. राग कालेरो

आजु आनंद नंद तणे घर, मानिनिआं मलि मंगल गाए.
वाजे ताल मृदंग नफेरो, आंगण मोती–चोक पुराए. आ० १
कंचन-थाल भरी श्रीफल-शुं वधावे सव व्रजनी नारच.
कुंकम केसर आंगणे चर्च्यां, मोती–तोरण बांध्यां बारच. आ० २
श्रावण मास कृष्ण पखवाडे अष्टमी शुभ रोहिणी गुरुवार.
जेजेकार करे सुरमुनिजन, वरखे चंदन कुसुम अपार. आ० ३
हरखां नंद जशोदा [रा]णी, जाचक जनने आपे दान.
जियो, जशोदा, कुंअर तमारो, नारसियाचो स्वामी
भगत-निधान. आ० ४

३९. १. आजू. माननीआ. मृदग आगण. पूराए २ श्रव. आगणे. बाध्यां ३. पपवाडे. रोहीणी वरपे. ४ हरपां. जीयो नारसीयाचो. -निधांन.

४०. राग केदारो [कृ. व. ४]

नंद-आंगणे निर्घोष वाजे, पंच शबदनो पूरो नाद,
धवल-मंगल आलापे बाली, श्रीगोकुलमां पडियो शाद. नंद० १
घेरच घेरथी गोरसडां गोपी, सरखा-सरखी टोली रे.
दधि-कादव कीधो नंद-आंगण, शिरथी ढोले गोली रे. नंद० २

श्रावण मास, अष्टमी अंधारी, भाग रोहिणी लीधो रे.
नारसियाचो स्वामी मध्य रेणी समे जे जे सुरिनर कीधो रे. नंद० ३

४०. १ –आगणे २. गोरसडा सरषा–. दधी– –आगण. शीरथी ३ नारसीयाचो

४१.　　कालेरो　　[कृ व ७]
पारणे पोढ्या पुरुषोतम, माताजी हरख न माए रे.
आनंदां व्रजवासी सहु को, मानिनी मंगल गाए रे. पाल० १
साव सोनानुं पालणुं, माहे माणक मोती जडियुं रे.
चउदश रतननी कान्य विराजे, झाझे हीरे भरियुं रे. पाल० २
हींडोले ऊभा डहलाशे, घूघरडी घन घमके रे.
कुंअर कान अवलोकी जोतां मानिनीनां मन हरखे रे. पाल० ३
धन्य धन्य मात जशोमती, धन्य श्रीगोकुल गाम रे.
नारसियाचा स्वामी अवतरिया, पूरचा मनना काम रे. पाल० ४

४१. १. हरष. माननी २. झाड झालानु ३ उभा घुघरडी कुअर कान माननीना. ४. नारसीयाचा पूरया मनना —अहीं हांसियामां "हींडोलानां कीर्तन २५" सूचव्यां छे

शरद–उच्छवनां पद

४२.　　राग सामेरी　　[रा. १४६]
मधराते मधुरी मोरे वालेजिए वाशलडी वाही रे.
कामिनी काम गेहेली थई रे, शहु वृंदावन धाई रे. मध० १
शाशु नणंदनी लाज तजीने भूखण अंगे साजियां रे.
रजनी रास रमेवा [illegible] जड जा[illegible] [illegible]ं रे. मध० २

नयण भरी निरखो नंदनंदन, अबला आनंद पामी रे.
नरसइआचो स्वामी वृंदावन केल करे माहाकामी रे. मध० ३

४२. सरद उछव. सामेरी १. वालेजीए. वाशलडी. २. नणदनी. भुखण. शजीयां. जई. भजिया ३. नरसईआचो. छेल्लां त्रण चरण रही गयेलां नवा हाथे प्रतमां उमेरायां छे.

४३. सामेरी [रा. १७१]

श्या माटें, शामलिया वाला, शान करी वन्य तेडी रे.
व्याकुल विनता थइ शहु अंगें, वेण वजाडी रूडी रे. श्या० १
आणी वेला अधरात्यें, वाला, परवरिया परवार रे.
शामुं आल चडावो अमने, लीलज नंदकुमार रे. श्या० २
बोल विचारी बोलज्यो रे, अमें अबला, बल थोडुं रे.
नारसियाचा स्वामी, रस पूरो; दीन थई कर जोडुं रे. श्या० ३

४३ १. थई. रुडी रुडी ३. शुडु नारसीयाचा.

४४. सामेरी [रा. ६४]

सामलटीनें शान करीने वालो लइ वृंदावन चाल्या रे.
सरखा-सरखुं जुगतुं जोइनें हार कोटमां घाल्या रे. सामल० १
रास-मंडल रच्यो राई-वर, पीतांबर पल्वट वाली रे,
कांइ कामिनीनां कुच भीडी आप रह्यो जग जेठी रे. सामल० २
धूजी धरा, चरण नव्य चाले, भोयंग-भार नव्य सेहेवाणो रे.
गोप मांहे गोपवी आपोपूं केशव कोणे न कलाणो रे. सामल० ३
अति आनंद उलट-भरि रमतां एणी पर ऊछव कीधो रे.
नारसियाचा स्वामी-संग रमतां अमे अमरपद दीधुं रे. सामल० ४

४४ लई. १. सरषा-शरषु. जोईनें २ काछ -ना. ३. सेहेवाणो. माहे कलांणो ४. -भरी. उछव. नारसीयाचा.

४५. सामेरी [रा १५५]

मधरातें मोहनजी मोह्या [तिहां] मानिनी साथे रे,
नाना भात्य रमे मारो वालो भीडी रदया शाथे रे. मध० १
तरुणपणे तारुणि डग भरतीं, पाए नेपुरनो झमकार रे.
झांझर-नादें वाहोडी छोडावे, रीझविया मोरारच रे. मध० २
अधुर-अम्रतरस पान करेवा शामलडी संगम आवे रे.
नारसियाचा स्वामी-सग्य रमतां मामिनि भेद जणावे रे. मध० ३

४५. १. माननी नाना- २. नेपूरनो झांझर-. वाहोदी. ३. नारसीयाचा स्वामी

४६. सामेरी [परि १-५५]

आ जोनी, सखि, शामलियो रे रमे व्रंदावन मांहे रे.
शोल सहस्र परवरियो वालो ते वांसलडी वाहे रे. आ० १
गान करे गोकुलनो वालो, आलापे सव गोपी रे.
नादें नाचे नरोहरि त्यांहां, गगन रह्यो सव ओपी रे. आ० २
संगमचे कारण थइ पूरी अबला आनन जोती रे.
नारसियाचा स्वामीचे संगे कामिनि केल करंती रे. आ० ३

४६. शामेरी १. माहे. २. थव. नरोहरी त्याहां. थव ३ थइ. नारसीयाचा. कामिनी.

४७ सामेरी [रा. १५१]

झांझरनो झमको रे वाजे, माझम रूडी रयणी रे.
त्रीकमने ताली दिये तारुणि, चपल-नयण म्रगवयणी रे. झां. १
चींठलने वश करवा कारण नाना भाव धरंती रे.
नयणकटाक्ष करी अंग मोडे मुख्य मरकलडो करती रे. झां. २

जो पूज्यो में पारवती-पति, देवचक्षु मुने आपी रे.
भणे **नारसियो** : त्रिपत न पामुं जोतां गोविंद गोपी रे. श्रां. ३

४७ १. रुडी दीये २, मुष्य. ३ मे नारसीयो.

४८ सामेरी [रा १३६]

रास रमे राधावर रूडो, शोहे शामलडी सगे रे.
मान मूकवा कारण कामिनी ते अनंग घरि अंगे रे. रास० १
चिनताना वृंदल–मंडल माहें शोभे देव मुरारि रे.
एक नाचे, एक गान करे, त्यांहां उमगी व्रजनी नारी रे. रास० २
श्यामा–श्रवणे झाल्य झबूके, कुंडल झळके कानें रे.
झांझरियां–नेपुरने नादे वेणि वजाडे ताने रे. रास० ३
आलिंगन देतां दामोदर अबला–अंग उल्लास रे.
भणे **नारसियो** : मयंक मोह्यो मांहि रह्यो खट मास रे. रास० ४

४८. १. रुडो. मूक्वा धरी अगे. २ मुरारी. त्याहा ३. झबुके. झाझरिया ताने. ४ नारसीयो माहि. षट.

४९ सामेरी [रा १११]

सुंदर शामलियानें साथें नयणे नयण मिलावे रे.
भुज ऊपरच भुज धरी प्रेम–शुं नाचंता मन भावे रे. सुंदर० १
*कटिमेखला नेपुरने नादे झांझर नेपुर खलके रे.
फरतां फरतां मुगट मनोहर, शीश राखडी झलके रे. सुंदर० २
मधुरा मधुरा स्वर श्यामाना, गमतुं गोपी गाए रे,
त्यम त्यम वालो वेण्य वजाडे, ऊलट अंग्ये न माए रे. सुंदर० ३

* प्रतमा जुदा हाथे 'कवण ने नेपुरने नादे' नोंध्युं छे.

आनंदे आलिंगन देतां श्यामलियो नें शामा रे.
नारसियो रसमगन थियो, (त्यांहां) केम्र करतां कामा रे. सुंदर० ४

४९. १ सुदर. उपरय २. –मेघना. झाझर. पलके. फरतां परता. –रपटी. ३. उलट ४. नारसीयो थीयो त्याहा

५०. सामेरी [परि. १-५६]

रसिये रास रच्यो रढियालो ते पूरण रस वनमां रे.
सुखसागरनी लेहेरच झकोले, ते रूटी रंगे रामा रे. रसि० १
गरव-गेहेली गरवें चाले, मरकलडे मीट मोडे रे.
फरतां फरतां फुमक लटके नाचे नारी जोडे रे. रसि० २
मोर-मुगट कुंडलनी शोभा, मुख ते मोहन-वेन्य रे.
नाथ नारचनें बाथ भरे रे, त्यहां वाधी रंग-रेल्य रे. रसि० ३
सुंदर शामलियानें अर्थे मानिनि रसमां माती रे.
भणे नारसियो: वाहाल्य धरीने अधुर-सुधारस पाती रे. रसि० ४

५०. १ रढिये ४. सुदर माननी नारसीयो.

५१ सामेरी [परि १. ५९]

आज वेण्य वाजे रे, वेण्य वाजे,
नाचे नारी नाथ मली नित्य गान करी गाजे. आज० १
ताली ताल, झांझर झमके, नेपुरनाद अपार रे,
मध्यमध्यें मानिनी मनोहर घुघरीनो घमकार रे. आज० २
एक थयां, वीसरियुं सरवे, को केहेनें नव्य जाणे रे.
भणे नारसियो: नेह-झाड लागी, रास रमण तणो माणे रे. आज० ३

५१. २. झाझर. माननी. ३. नारसीयो.

५२. मलार [रा १]

कामिनि स[र]व टोले मली, मांड्यो वंदावन रास रे.
वावना चंदन–छांटणां, खेले आगू मास रे. काम० १
रासक्रीडा रमे मानिनी, गुण गाए गोविंद रे.
कंठ कोकिला स्वर करे, थिर थई रह्यो चंद. रास० २
काछ वाल्या सव कामिनी, शोहे सकल श्रंगार रे.
हार हइयाना ढलकता, झांझरनो झमकार रे. रास० ३
पलवट वाली पटोळडी, शोहे सकल श्रंगार रे.
कुंडलाकार करी रही वचे आगी मुरार रे. रास० ४
सबद को केना शुणे नहीं, बोले जूजवी वाण्य रे.
रयणी कहे: हुं थिर थई, खटमास विहाण रे. रास० ५
ब्रह्मसदन आदि देई देव देखे छे रंग रे.
नाद–निर्घोष वाजी रह्यो, ताली ताल म्रदंग रे. रास० ६
मुनिवर मन विचारी रह्या· घटे कृष्ण–अवतार रे.
नारसियाचो स्वामी प्रगट्यो, सखी, तेह निर्धार रे. रास० ७

५२. १. कामनी. माड्यो. आशु. २. माननी ३ श्रव. हईयाना. झाझरनो ५ नहो. पट ६. ब्रह्म– आदि देपे ८. नारसीयाचो

५३. राग रामग्री [रा १५४]

हरि वेण वाही रे, रामगरी गाई रे.
गोपी सरव सुत पत्य मेलीने जोवानें धाई. हरि० १
नेपुर काने रे, कुंडल पेहेर्यां पाए रे,
शेथो टीली नें टीलिए शेथो, अदभुत शोभा थाए रे. हरि० २

रजनी स[र]द तणी रास रमे वाली,
विच वनमाली दिए करताली, वांहोडली वाली- हरि० ३
मानिनीनें मान धर्युं, गोकुलनी व्रजनारच,
अंतरधान हवा हरि ततक्षण वृंदावन मझारच. हरि० ५
कामिनीने कृष्ण मला जारे मेन्यो अभिमान.
नारसियाचो स्वामी रास रमे त्यांहां सुरिपत वाहे निशाण. हरि० ५

५३. १. हरि. २ टीलीए ३ वीच. दीए ४. मानर्नीनें. धणु अंतरध्यान. व्रदावन ५. कामनीने. नारसीयाचो. त्याहा नीशाण.

५४ राग मालव [रा ७७]

वृंदावनमां रच्यो अखाडो, नाचे गोपी गोवाल.
ताल मृदंग रबाब झालरी, तान मेलावे नंदलाल. वृ० १
झलके कुंडल राखलडी, उर लेहेके मोतीनी माल रे.
रमझम रमझम नेपुर वाजे, मरकलडो करे बाल रे. वृ० २
हरख्या देव तिहां सुरिमुनिजन, वरखे पुष्प विमान चढियो.
जयो जयो श्रीजशोदानंदन, नारसिओ त्यांहां दीवटियो. वृ० ३

५४. १. अपाडो. मेलावे शामलिया २. कुडल रापलडि. नेपूर. ३. सुरीमुनिजन. विमान. नारसीओ त्याहा.

५५ मालव [रा. ११७]

वृंदावनमां वेण्य वजाडी, गोपीने व्याकुल कीधां रे.
वर आप्यो ते वचन पालवा, चित्त हरीनें लीधां रे. वृंदा० १
एक एकने मूकी चाली, बीजी मागे सिंदूर रे.
जुवती जूथ मलीने चाली, जाणे सागर-पूर रे. वृंदा० २

पीतांबर पटोळी पहेरी, कंठे एकावल्य हार रे.
चींछियानें ठमके चाले, घूघरनो घमकार रे. वंदा० ३
रतन-जडित राखलडी रूडी, झाल्य झबूके काने रे.
राता दांत अधुर-शुं ओपे, गोपी गोरे वाने रे. वंदा० ४
हरखे आव्यां हरजीने पाशे वंद्रावन मोझार रे.
नारसियाचा स्वामी-मुख डीठडे ऊलट अंग्य अपार रे वंदा० ५

५५. १. चित २. मुकी मागे ३. चीछिया. घुघरनो. ४. रापलडी. रुडी. झबुके काने. वांने ५. आव्या. नारसीयाचा स्वामी-. उलट.

५६. मालव [रा. १७०]

श्याने काजे आव्यां सरवे, शुं छे तमारुं काम रे ?
पतिव्रतानो धरम नहीं, तमे जाओ पोताने ठाम्य रे. श्याने० १
मोहन केरां वचन शांभली नीचुं जोयुं बाली रे.
मुख आंगली नें संन्य बिमांशे : शुं केहे छे वनमाली रे ? श्याने० २
गदगद कंठ ने वचन प्रकाशे : शुणज्यो, देव मुरारि रे.
भूदर, अमने नहीं भजो तो तजशुं देह अमारी रे. श्याने० ३
अंतर प्रीत्य जाणी हरि हशिया, रदया भीतर भीडी रे.
प्रेम धरी निरखे नारसियो शरखा-शरखी जोडी रे. श्याने० ४

५६. १. आव्या. शु नही. २ मोहन. आगली. शु ३ मुरारी. भुदर. नही. ४. जांणी. निरपे. नारसीयो.

५७ मालव [रा. ७८]

वंदावनमां रामत्य मांडी गोपी गोवंद शाथे रे.
हासविलास विविध्य परि करतां ताली दे छे हाथे रे. वं० १

पीतांबरनी पल्वट वाली, कंठ एकावन्य हार रे.
झांझर झमके, घूघर घमके, नेपु[र]नो ठमकार रे. ग्रं० २
शोल सहस्र गोपी ने माधव एक एक प्रत्ये नाचे रे.
अंमर आगिश द्रिये त्यांहां ऊभा, चरणरेणने जाचे रे. ग्रं० ३
नाना भात्य पटोली पेहेरी, चोली सुंदर दीशे रे.
मोहन-मस्तक मुगट विराजे, जोइ जोइने मन हीशे रे. ग्रं० ४
मस्तक शोहे राखलडी रे, कुंडल काने झलके रे.
खेल मच्यो, राधावर माता, मुनिजननां मन टलके रे. ग्रं० ५
धन्य श्रीकृष्ण लील् अवतरिया, पोहोप-वृष्टि त्यां होए रे.
उमया-ईश-प्रतापें ऊभो नारसियो त्यांहां जूए रे. ग्रं० ६

५७. १. वरि २. झाझर. घुघर ३. आशीश उभा. ४. चाली सुदर. जोई जोईने ५ कांनें. माता. मुनिजनना ६. धंन्य. ऊभो नारसीयो त्याहा

५८. मालव [रा १२९, १८८]

धन्य धन्य वृंदाव[न]नी शोभा, धन्य धन्य आशू मास रे.
धन्य धन्य कृष्ण तणी ते लीला, धन्य गोपी रमे रास रे. ध० १
शणगटडामां शान करंतां मानिनि मोह उपजावे रे.
अलवे अंग मोडे अति अबला, नयणे नेह जणावे रे. ध० २
कंठ कोकिला शब्द ऊचरे, मोहन मोह उपजावे रे.
मगन थईने मोहन पामी, जादव गान करावे रे. ध० ३
अंतर कोटि तेत्रीशे मलिया ब्रह्मा इंद्र सघाते रे.
जेजेकार करे त्यांहां ऊभा, पुष्पवृष्टि करे हाथे रे. ध० ४

धन्य श्रीकृष्ण, धन्य ए लीला, धन्य ए रसमां माहाले रे.
उमयावरनी बांहे वलगे, नारसिओ दीवी झाले रे. ध० ५

५८. १ आशु.-२. मांननी ३. उचरे मोहन मोहन पांमी गांन ४ भ्रमा. इन्द्र. त्याहा उभा. ५. धन्य धन्य नारसीओ

५९ राग मालव [रा. ८७]

व्रंदावनमां नाचे नरहरच, गोपी शुं परवरियो रे.
पीतांबरनो काछ वालिनें मोर मुगट शिर धरियो रे. व्रंदा० १
पीतांबर पटोली पेहेरी, कंठ एकावळ हार रे.
कटिमेखळा शोहे श्यामनें, घूघरनो घमकार रे. व्रंदा० २
झांझर नेपुर खळके कांवी, कंठ परसपर हाथे रे.
धाइ धाइ चुंबन दिये गाले, गोपी गोवंद साथे रे. व्रंदा० ३
ताल पखाज वेणा नें महुअर, विधि विधि वाजां वाजे रे.
थेइथेइकार करे त्यांहां ऊभां, नादें अंबर गाजे रे. व्रंदा० ४
प्रेम धर्गनें पालव ताणे, हरि-शु हास करंती रे.
निलवट टिलडी नयग शमारचां, नाके अनोपम मोती रे. व्रंदा० ५
नाद-निर्घोष उलट अति वाध्यो, पुष्पवृष्टि तिहां थाए रे.
लोटपोट तिहां थयो नारसियो शंभुनाथ-पशाय रे. व्रंदा० ६

५९. १. वालीनें. २ घुघरनो पेहेरि. ३ झाझर. पलके धाई धाई. ४. पखाज थेईथेई-. उभा. त्याहां. ५. ताणे. ६. नारसीयो.

६० राग केदारो [रा. १२१]

ज्यम ज्यम कामिनी कृष्ण साथे रमे,
तिम त्यम आनंद उर न माए.

घूघरी घमके नें राखडी झळके,
नेपुर वींछिया खळके पाए. जिम० १
ताल-शुं ताल ते मेळवे सुंदरी,
कर ग्राही कानजी संगे नाचे.
भणे नारसियो : निरखि सुख पामियो,
जेहनुं ध्यान सुग्देव जाचे. जिम० २

६० १ कामिनी आंनद घुघरी. रापडी नेपूर वींछीया. जीम. २. ध्यांन ३. नारसीयो. जीम

६१ राग केदारो [मरि १. ६७]

वेण वाहे नाथ वेण्य वाहे,
मळी मंडळी मधुरें गान गाए.
मस्तक मुगट धरी थेइ थेइ थेइ करे,
जुवति जन बांहांडी कंठ साहे. वेण० १
सकळ कळा करी वंन निरखया वली
रास रच्यो रस रमण रंगें.
सरद सुंदर शशी, रजनि रलियामणी,
भामिनी रमे रे संग सगे. वेण० २
ताल ताळी तान नेपुर रणझणे,
झमकते झांझरें नारद्य नाचे.
सुख तणो सागर श्याम श्यामा तणो,
निरखवा नारसियो एह जाचे. वेण० ४

६१. १. थेई थेई थेई. २. वलि शशि रजनी. रलियामणी. भामिनि. ३ तान नेपूर झाझरें. नारसीयो

६२. केदारो [रा ८३]

वागी वन वांशली, नाथ [अ]धुर धरी
प्रगट थया त्यारे को नेह जाणी.
अबला आनंद-शुं अंग फूली रही,
धन्य नाथ वदे वेदवाणी. वागी० १
ज्यम शशी घनमां वींटियों चांद्रणी,
तीम हरि वींटियो मलि रे गोपी.
वलि वली वारणे जाए जुवती जन,
तन मन धन त्यांहां रह्यो रे ओपी. वागी० २
काछ वाल्या वली कृष्ण कोडामणे,
सज थयां संग्य ते सवल श्यामा.
नारसिया-नाथ सनाथ करी सुंदरी,
वली वन्य विलसतां कृष्ण कामा. वागी० ३

६२. १. वाशली. फुली. धंन्य. वेदवांणी. २. शशि घनमां वीटियो चाद्रणी. वीटीयो. वलि वलि. जूवती. स्याहां. शोपी. ३. वलि. कोडांमणे. शवल. नारसीया-. वलि.

६३. केदारो [रा. १८२]

नाथ नाचे, शिर मुगट ते झलकतो,
अबला आलापे नें मधुर गाए.
नेपुर कंकण शबद शोहामणा,
कर धरी कामिनी ताल वाहे. नाथ० १
कुंडलाकारमां मलपती मानिनी,
हरखती नाथने वाथ भरती.

सरव सुखदायक पूर तो प्रेमदा,
सकल व्यापी रह्यो, रास रमती. नाथ० २
हार शणगार नें अंबर ओपतां,
कर तणां कंकण खल्के चूडी.
नारसिया—मन्न आनंद अति ऊलट्यो,
निरखतां निरखतां जुगम जोडी. नाथ० ३

६३. १. शोहामणा कामिनी २ माननी हरमती सुप— ३ पलके चूडी. नारसीया. उलटथो निरपता निरपतां.

६४. केदारो [रा. १८१]

नार नाचें अनें नाथ संग सुर करे,
ताल मृदंग रसवेण वाये.
सान सनकावती सामला सनमुखें,
मुख घणो मानिनी मछर छाजे. *नाथ० १*
चोलि उर चमकती, घमघमे घूमरी,
ठमके ठमकावती नेपुर नारी.
अलवे अंग मोडती, पीयु—मन रंजती,
जाणे घन—दामिनी हेरे भारी. नाथ० २
नाथनें वाथ भुज भरी रही भामिनी,
अबला आनंद उर अंग्य न माए.
भणे नारसियो : रंगेल्य झकझोल्तां
मानिनी मोहन मलिनें गाए. नाथ० ३

६४. १. माननी. २. चोली. घुघरी. देरे. ३. नारसीयो. माननी.

६५ केदारो [परि. १. ६८]

गरजे गजगामिनी रासमंडल मधें,
एक एक अंगना अधिक रंगे.
वाजे वाजां बहु, थेइ थेइ थेइ करे,
मेलवे तान ते नाथ-संगे. गर० १
मरकले मानिनी मंन मोहे घणुं,
मोहन मानिनी मंन मोहे.
एकरस थइ अंगोअंगने भेलतां,
कामिनी-कर कंठ-कृष्ण सोहे. गर० २
प्रेमदा प्रेम शुं पान अधिक करे,
अंक भरि नाथ उरमाहे राखे.
धन्य रे धन्य रे धन्य रे आ सुख,
नयण भरि नारसियो प्रगट पेखे. गर० ३

६५. १ थेई थेई थेई तान २. माननी. थई. कामनी. ३. भरी. राषे. भरी. -माहे नारसीयो. पेषे.

६६. राग केदारो [रा. ७२]

थेइ थेइ थेइ करे अगणित अंगना,
गोपी गोपी प्रत्यें शोहे कान.
झांझर नेपुर, कटि तणी कंकणी,
ताल म्रदंग रस एकतान. थेइ० १
नाचतां नाचतां छेहेल छंदे रमे,
समस्वर-धून्य ते गगन चाली.

लटके लटका करे, नाथने उर धरे,
श्रीकृष्ण कामिनी-कंठ बांहु घाली. थेइ० २
प्रगट भावें भजे पूर्ण पुरुषोतम,
ज्येहनुं सुरीनर धरे रे ध्यान,
भणे नारसियो : विहार-रस विस्तरे,
कृष्ण गोपी मली करे रे गान. थेइ० ३

६६ १ थेई थेई थेई. झाझर नेपूर. २. पुन्य कामनी-. बाह. ३ पूरण. ध्यान. नारसीयो वीसरे.

६७ केदारो [रा. ८८]

वदन शोहामणां श्याम श्यामा तणां, रास-रामत्य रमे वनमांहे.
नाथ बाथें भरे, अधुर-अम्रत करे, प्रगटियो प्रेमसुख कह्यो न जाए.
वदन० १

चरणने प्रा[हा]र-ते धरण द्रम द्रम रही, घूघरीना घमकार थाए.
ताल दे तारुणी, करतल कामिनी, मदभरी मानिनी गान गाए.
वदन० २

श्रम-जलबिंदु नें अंबर खशे शिर, कंचुकीबंध ते शिथिल थाए.
नारसियाचो स्वामी रंग रास ऊलट्यो, ऊपरें कुसुमची वृष्टि थाए.
वदन० ३

६७. १ तणे रांमत्य. प्रगटीयो २. घुघरीना. माननी. ३ खशे शीर. शिथल नारसीयाचो उलटयो उपरें.

६८. केदारो [परि १. ६९]

मोरमुगट शिर–शामला शोभतो,
झलकती राखडी श्यामा शोहे.
कर उपरच कर कृष्ण कामिनि तणो,
नाचतां नाचतां मंन मोहे. मोर० १
पीतपट शामलो, नीलपट सुंदरी,
नेहजल झीलतां नाथ नारी.
काछ वाल्या कटें, हार उर ओपता,
सबल श्यामा हरि दे रे भमरी. मोर० २
दे रे आलिंगन अंगना अंग-शुं,
बाथनें भीडती अबला वाली.
भणे नारसियो : गोपीपदरज सिर धरुं,
कृष्ण–कामिनी-रमण निरखूं निहाली. मोर० ३

६८. १. रापडी. –कामनी ३. आलिंगन. वालो. नारसीयो. सीर. –कामनी–. नीरपू.

६९. राग केदारो [परि. १ ७०]

आज रलियामणी रामत्य रसभरी,
विनता–वृंदमांहे नाथ माहाले.
अबलाने उर धरे, अधुर-अम्रत करे,
शान करि सुंदरी नयण चाले. आज० १
सकल कला सहित शोभतो शामलो,
सनमुख शोभती संग श्यामा.

कंठ बांहे धरी नाचतां रीझतां,
लटकतां अंबर कान-कामा. आज० २
वाजे वेणा वग्र ताल म्रदंग—शुं,
झांझरना झमकार थाए.
विव[ग]-थां विलशतां, नाथ मुख निरखतां,
भिडि रही भामिनी रदया माहे. आज० ३
हार-शुं हार, पट पीत-शुं पट भलां,
मरकला करिअ-नें मंन हरखे.
नारसिया-हाथ दीवी देखे [तदा]
धन्य आ मानवीदेह पेखे. आज० ४

६९. १. रलीयामणी. माहे. अंम्रत. २. सनमुप. माहे. ३ —शु. झाझरना. भोडी रही. विवयां. ४. करीअ—. हांरपट. नारसीया. पेपे.

७०. केदारो [परि. १. ७१]

धन्य आ धन्य आ धन्य रामत्य रमे,
रंगभरचो नाथ वल बाथ भीडे.
अवला आलिंगन अधुर-अंम्रत करे,
अलवें-शुं अगना अंग मोडे. धन्य० १
नाचतां वाजतां नेपुर घूघरी,
चपल चतुरा भले दे रे भमरी.
स्वर करे सहु मली, नाथनें अंग ली,
ताल दे तारुणी प्रेम—पूरी. धन्य० २

देव दुंदुभिनाद, कुसुम वरशी रह्यां,
हशे अज इंद्र नें अमर ऊभा.
भणे **नारसियो** : कोण वरणव करुं ?
एहनी एहनें एह शोभा. धन्य० ३

७०. १ अधूर- २ नेपूर ३. दुदुभि- इंद्र उभा नारसीयो

७१ केदारो [रा १८३]

नाचतां नाचतां नयण नयणां भर्यां,
मदभर्यां नाथने बाथ भरता.
झमकते झांझरे तालि दिये तारुणी,
कामिनी कृष्ण-शूं केल करता. नाच० १

प्रेमदा प्रेम-शुं अधरचुंबन करे,
पीयु-सग परवर्यां अबळा वाला.
ताल म्रदंग मध्य घमघमे घूघरी,
श्याम श्यामा करे चपल चाला. नाच० २

उर-शुं उर धरे, नाथ रगे रमे,
जेह-शुं ज्य[म] गमे त्यंम करतां.
भणे **नारसियो** : रगरेन्य झकझोलता,
रस ठरयो सप्त स्वर गान करतां. नाच० ३

७१. नाचता नाचता. -भरया भरता झांझरे ताली दीये कामनी. २. अवलां. घुघरी ३ नारसीयो. गान

७२ केदारो [रा ८१]

आज अजवालडुं परम शोहामणुं,
रंगभर्यो नाथ रंग रास रमतो.
कंठ बाहे करी स्वर करे सुंदरी,
मध्य रह्यो मोहन गान करतो. आज० १

पल्वटे द्रढ करी दे रे भमरी मली,
करतल कामिनी ग्रह्या रे कान.
जाणे शशि प्रगटिया, भमर सोहे सगे,
नाचतां वाजता नेपुर-तान. आज० २

मदभर्या मानिनी विलसतां जामनी,
भुज भरी नाथने बाथ भरती.
वदन निरखी रह्यां, प्रेम-आतुर थया,
अधुर-अम्रत-रसपान करती. आज० ३

सबल श्यामा सग शोभतो शामलो,
कुच विचे राखियो अंग भीडी.
नारसिया-नाथ शिर मुगट ते झलकतो,
श्यामा शिर राखडी झलके रूडी. आज० ४

७२. १. अजवालडु. शोहामणु. कठ बाहें. २. कामिनी वान. शशी प्रगटीया. नाचता –तान ३. माननी विलसता. नीरखी. –पान ४ शबल विच. राययो. नारसीया–. श्याम– रापडी रुडी

७३　　राग केदारो　　[रा १३९]

रणझण नेपुर वाजता नारना,
कंकणी-धून्य ते मध्य ० थाए.
चरण अति चालवे, अंग वाले घणुं,
त्यम त्यम वालोजी वेण वाहे. रण० १

प्रेमरस परवरी प्रेमदा पियु मली,
नयनभरि नाथनु वदन निरखे.
भुज भरी भीडिनें कुंडलाकारमा,
मरकलो करिअ–नें मंन हरखे. रण० २

ज्युवति योवनभरी नाथनें उर धरी,
अधुर-अम्रत धरी पान करतां.
रामत्य रस चढी, अंग शुध्य वीशरी,
मधुरू माधुरुं गान करतां. रण० ३

'धन्य ए धन्य ए' अमर [इम] ऊचरे,
भेद को नव्य ल्हे रमण केरो.
नारसियो चरणनी रेणमा झीलतो,
शामले सनमुख्य हाथ फेरयो. रण० ४

७३. २ पीयु मलि –भरी निरषे भीडीनें करीअ– मन ३. ज्युवती. पांन मधुरू ४ (२) धन्य उचरे नारसीयो

७४ राग केदारो [रा. ५५]

कोण रस ऊलट्यो तीर ज्यमुनां तणे,
वाजे वाजां बहु, नाथ नाचे.
कंठ बांहे धरी गाए गोपी मली,
मेलवे तान ते मंन राचे. कोण० १
कोने को नृत्य लहे, नाथनें अनुभवे,
अधुर-अम्रत-रसपान करतां.
सरवनें सनमुख्य शामलो विलसतां,
अलवे-शुं अंगना उरच धरतां. कोण० २
प्रेमे—शुं परवरच्या प्रेमदा-शुं हरि,
रमण-रस अति ठरच्यो वंनमांहिं,
नारसियो निरखतां रंग रस-मगन थइ
कृष्णलीला तणा गुण रे गाए. कोण० ३

७४. १. उलट्यो. बाहे. तांन राची. २. -पांन ३ हरी. -माहे. नारसीयो निरषतां. थई.

[वसंतनां पद]

७५. राग वसंत [व १.८३]

प्रथम दिवस ब्रज वसंतपंचमी, मध्य सखीघर सोहे,
ते पाछल्य व्रजसुंदरियां रे, माहारा वालानुं मन मोहे. प्रथ० १

कनक-कलश पाट पथराव्यो, वालानें पधराव्यो,
अबलाए केशु-माट भरचां रे, अभिनवि सेवा करावो. प्रथ० २

चिरजिए तुं, नाहोलिया रे, कोडें वसंत रमीजें,
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, मामिनि भुवन भमीजे. प्रथ० ३

७५. १. मघ सघोधर. -सुदरीश भरया. ३. चिरजीए. वसत. नारसीयाचो. अभिनवी शेवा. भामिनी.

७६ राग वसंत [व. १२]

वसंत रत्यनी [व]हु वलिहारी, नारच निरंकुश फाग रमे,
माधव सखा सहित ग्रह ग्रह प्रति, ज्यम अंबुज वन भमर भमे. व० १

मन भावंतां वचन परसपर विनता-वृंद विलास करे,
लडथडतो लाडचडो लघुवर धाइ धाइ ग्रहुने बाथ भरे. व० २

कनक-कलश केसर-रस भरि भरि पाछल मस्तक ढोले,
करतल भरी शिखंडि-अगररस सुरा लोचन ऊपरच रोले. व० ३

शासू नणदी डाह्या डमरां मरजादा अनुशरतां,
ते कहे ' वहुवर, चालो, रमिण, आडा घूंघट ज्ये धरतां. व० ४

नारसियाचो स्वामी नित्य नवली परच विचित्र लीला केरय करे,
ए ल्हेरिओ झडमां आवे पुरुष-लखण तेहने विशरे. व० ५

७६ १. ग्रेह ग्र प्रदत प्रेम अंबूज २. भावता लघूवर धाई धाई ३ भरी भरी. उपरच ४. शाशु. डाह्या. रमीजे धरता ५ नारसीयाचो. विचीत्र ल्हेरीओ पूरख-लपण.

७७. राग वसंत [व. ६]

चाल्य रमिए, शही, मेल्य मथवुं मही,
वसंत आव्यो, वन वेल फूली.
मोरिया अंब, कोकिला कदंब लवे,
कुसुम कुसुम रह्या भमर झूली. चाल्य० १
करो शणगार नें हार, गजगामिनी,
क्यारचनी कहुं छुं जे चाल्य उठी.
रसिक-मुख चुंबियें, वलगिएं झुंबिए,
आज तो लाजनी दाहि छूटी. चाल्य० २
हेत हरि वश करी, लाहोले उर धरी,
फर ग्रही कृष्णजी, प्रीत्य पलशे.
नारसिओ रंगमां अंग उनमद हशे,
खोहेला दिवसनो खेग वलशे. चाल्य० ३

७७ १. रमीए. फुली. मोरीया. झुली. २. कहु छु. उठी. वलगीएं झुबीओ छुटी. ३. नारसीओ. षोहेला

७८ राग वसंत

वसंत रमिए रे, मारा वाला, वसंत रत्य छे रूडी.
कानजी रे, कांकणियां घडावो, ज्यम खलकावुं चूडी. व० १
एक एक-पाए अधिक माहारे लाखीणी चूडी.
सामलिया-शुं रंग-भरय रमतां दीशुं छुं रूडी. व० २
योवन विना मान नव्य लहिए, कुंकुमना रंगरोल,
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, करशुं शाकमझोल. व० ३

७८. १ रमीए. रुडी. काकणियां पलकावुं चुडी २. चुडी. दीशु छु रुडी. ३. मांन कुंकमना. नारसीयाचो. मलयो.

७९　　　　वसंत

वलवंत जाण्या रे जाण्या जी रे, भेरो भीर तेडाव्या.
अमें अबला देखी शुं बीना, इम कांइ भला न भाव्या. वल० १

वेण वजाडी शान करीनें, साथी सरवे तेडाव्या;
सीदामा सर्व गोप सघाते हलधर भीडे आव्या. वल० २

अमे हथियार जुआ चंदनना, अबीर गुलालें दुखाशो;
आजां कालां तेवतेवडामां सग्रामे किम जाशो ? वल० ३

अमे अनला ब्रह्माए शरज्यां, वेद कहे: तमे सबला,
नारसियांचो स्वामी भले मलियो. हार मनावे अवला. वल० ४

७९ १ देपी. बीना काई २. शाथी. ३. दुपाशो ४. अव. शवला. नारसीयाचो.

८०　　　　राग वसंत　　　　[चा. १२]

हवे केम जाइश रे, मारा वाला, जाए अमारुं कीधुं.
मारी रे घेडीनुं गोरस वाहीनें पीधुं. हवे० १

नासतडो नहि छूटिश, नरोहरि, द्रष्टि थकी नहि चूकुं;
घोलीनें घरमा लइ घालुं, बाधीनें मूकुं. हवे० २

ओशियालो थइनें ऊभो अन्याई अपार,
नारसियाचो स्वामी भले मलियो मुगत्य तणो दातर. हवे० ३

८०. १. जाईश. २ छुटिश. चुकु. घरमा लई. मुकु ३. ओशीयालो थईने उभो. नरसियाचो मल्यो.

८१.

आज माहारी लाखीणी लोवडली फाडी मारगडे जातां.
रावल जइनें राव करेशुं, नहि विशरो खातां. आज० १
नंद तणा नानडिया केरा नित्य प्रत्य चोलडा शहिये;
कांचलडी रूपरच कर वाहे, हशि हशि छानां रहियें. आज० २
शेरडिये श्रीगिरिधर मलियो, अवलानुं मन मोह्युं;
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, करुणा-दृष्टे जोयुं. आज० ३

८१. १ जाता. जईनें. २. उपरथ. छाना. ३. श्रीगिरीधर. भले मल्यो.

८२.   वसंत   [शृं. १३३]

तमे नानडिया, हुं नानकडी, शरखा-शरखी जोड मली.
पेहेलुं आलिंगन लियो, मारा वाला, पछे अमे लेशुं ललिय लली. तमे० १
सुंदरियाचा सेहेजे इशा रे, हरि मलवानें हेत घणूं;
एवूं आलिंगन ल्यो, मारा वाला, शहुको जाणे एक जणूं. तमे० २
शुं करशे दुरिजन ने दोखी, जेहनें मन्य एक सनेह वश्यो ?
*नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, संसारडांनो भय किशो ? तमे० ३

८२. १. तेमे. लीयो. ईशा. २. आलिगन. ३. नारसीयाचो.

* आ पद सं. १६६८ वाळी प्रतमाथी आ पहेला अक ५ तरीके लेवायेलुं छे. एमां एक कडी वधारे छे तेम पाठांतर पण छे. अहीं चालु 'रागमाळा'मां होई ए जतु कर्युं नथी.

८३. वसंत

मारी शेवंत्रां गरखी सकुमारी तोरे करच आपुं शंभाली रे.
शेहेजे हेजें वात करीनें सुख देजे वनमाली रे. मारी० १

उछांछला उनमाद तजीनें वात करेश नेहाली रे;
अधुर डंक दीधा विण, मोहन, वीनवूं वाली वाली रे. मारी० २

लघुवय लाडकडी त्रिभोवन मांहे ललना छे सनेहाली;
अपरमपर तारूं भाग्य, भूदरा, हसि हसि दे कर ताली. मारी० ३

कनकवेन्य जाणो सुधासरोवर, एणि परच शोहे वाली;
नारसियाचो स्वामी भले मलियो आनंद-सिंधु परवाली रे मारी० ४

८३. ३ माहे भुदरा ४ जाणो नारसीयाचा. मलयो. –सींधु–

८४ राग वसंत

नरोहरच नानडिया, मारा वाला, मरम न जाणो काई.
एटलां दुरिजन देखतां शाने लीधुं ग्राई [१] नरो० १

वय नानी नें वशो वन माहे, धरम करम नव्य जाणो;
प्रात-समे परनारी केरां पालवडां ताणो. नरो० २

योग भोग एकांत भलो रे, जाणे विरलो कोई;
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, विश्व पडीला मोही. नरो० ३

८४. १. काई देषता शाई. २. माहे. तांणो. ३. नारसीयाचो.

८५. राग वसंत [परि २. ६०],

नाहोलो निर्गुण रे निर्गुण रे,
निर्गुण, मारी वाई रे, परनारीग-रातो.

अनेक प्रकार करी करी थाकी,
न रहे पर-घेरच जातो. नाह० १

वहु नारी मळी नाहलो धुतारचो कांइ कांइ कामण कीधु.
शोकडियें मारुं सुखडुं टाल्युं, चित्त हरीने लीधु. नाह० २

कुटंव परिवार शहुए देखतां पियुजी पर-घेरच जाए;
नारसियाचो स्वामी भले मलियो. वार वार वार कांहे ? नाह० ३

८५. २. काइ काई. मारु चित ३ देषता पीयुजी. नारसीयाचो

८६. राग वसंत [परि. १. ८९]

कर नख राता कामनियां रे, राता अधुर सुदंत.
रातो अबीर गुलाल उडाले, रातो कपोल हसत. कर० १

राती चोली कशण-कशी रे, राती कुकम-रोल;
राती पीयल, मांग शमारी, रातां मुख तंबोल. कर० २

कृष्णजी राता कामनियां रे, कामिनि राती कृष्ण-गुणे,
शरखां–शरखां वेहुए रातां, नारसियो रातो हरिचरणे. कर० ३

८६. १. कामनीया. सुदत. २. (२) राति ३. कामनीया. कामिनी. –शरखा. नारसीयो.

८७ वसंत

अम शामुं शें जुओ, मारा वाला ? हुं नहीं ते वाली.
चंचल चपल घुरतनी आंख्यो दीशे छे अणियाळी. अम० १
हुं तो नानकडी नख जेवडी, हाव भाव नव्य जाणूं;
पछेडो पेहेरण्य पीतांबर, अंग अभिमान न आणूं. अम० २
जां लगें अंग अनंग न व्यापे, तां लगें छूं शपराणी;
नारसियाचा स्वामीनी लीला ते कोणे नव्य जाणी. अम० ३

८७. १ आख्यो. २. हु. नप. अमीमान. ३. जा. ता. छु. नारसीयाचो

८८ वसंत [परि. २. ८८]

क्षितिरस तरुशाखाए पशरचो, मनसिज नयणे वशियो रे.
रदे-भाव कुच-मंडळ पूरचा, आवो रतिपति रगियो रे. क्षिति० १
अतली-बल वनस्पति-नार्थे ऊलट-पालट कीधुं.
अखिल ब्रह्मांड तर्णू अम्रतरस जुवतीने वदने दीधुं. क्षिति० २
अदभुत बल आप्युं अबलाने, नरवर कायर अंगे;
हशवूं वनवेलीने आप्युं, कोकिलासुर मुख-रंगे. क्षिति० ३
योगवियोग विमुखनें आप्यो, भोग-भगत भगवान,
ताप-तपश्या क्रमजडनें आप्यां, नारसियानें गुणगान. क्षिति० ४

८८. १. क्षीति... तरु-, २. वनशपती... उलट-, ब्रह्माड. ४. भगवांन. आप्या. नारसीयानें.

८९.　　वसंत　　*[परि. १. ५]

चालो चालो, सखी, जोवानें जइये, श्रीगोकुळ आंबो मोरयो.
सहस्र शाख्य लागी एणे आंबे, त्रिभोवन छाह्या धरी रह्यो. चालो० १

जादवकुळ वसुदेवें वावियो, उदरच देवकीने उगियो.
थाणुं देइनें नंद-घरच आण्यो, जसोमती पयोधर शींचियो. चालो० २

शोळ सहस्र कोकिला कलरव करे, इंद्र लगें घणुं मेमयो (?).
शेख नागनी वेण्य शांचरयो, त्रिभोवन छाह्या धरी रह्यो. चालो० ३

ध्रु अमरीख राजा रुकमांगद प्रहलादे घणुं वेडयो.
भणे नारसियो सेवानां फळ: वैष्णवने रदे रमी रह्यो. चालो० ४

८९. वसत. १ जईये. आवो. सहस्र शाष्य. आवे. २. उगयो. देईने शीचीयो. ३. ईद्र. शाचरयो. ४ नारसीयो शेवाना वईश्नवने.

* पृ. ६१५ उपर 'परिशिष्ट २ जा' पछी पाठांतर छपायेल छे. आ बेउथी उपरनो पाठ ठीक ठीक जुदो पडे छे.

९०.　　वसंत　　[परि. १ ४]

रसभर रंग तणा होए झाकमझोळ, होळी रमे रसाळी.
म्रगमद चंदन हरजांनें छांटें धसमसी धावळियाली. रस० १

कुंकम केसर ने कस्तूरी ऊछाले व्रजनारी.
केल-कलाधर श्याम-मनोहर, श्यामा श्याम मुरारि. रस० २

अबीर गुलाल उछाले अबला करत्रट पल्लव चाली.
मगन नारच नाचे वन मांहें, दिए परस्पर ताली. रस० ३

तेवतेवडी तारुणि मलि टोले हरजीनें शाख्या बांहे.
ज्यमुनातीर रसिक नंदनंदन मुरली मधुरें वाहे. रस० ४
हारचा कृष्णजी त्यां, सव गोपी लोपी लाज विराजे.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, भगतवछल-बर्द छाजे. रस० ५

९०. १. छाटें. २. कस्तुरी. उछाले. मुरारी. ३. माहें. दिऐ. ४. मली बाहे. नदनदन. ५. श्रव. नारसीयाचो

९१. वसंत

मारा वालानुं आलिंगन मुंनें वालेरूं लागे,
अंगनुं आलश भीडद्या विना न भाजे. वाला० १
चांदलो अमीरस-भरचो, रजनी रंगाली,
फुल्डे शेज शमारी, मोरे घेर आविया वनमाली. वाला० २
अखंड एवातन पामी, ए वर रूडो,
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, पेहेराव्यो चूडो. वाला० ३

९१. १. आलीगन. अगनु २. चादलो. आवीया. ३. अखड. रुडो. नारसींयाचो स्वामी. मल्यो. चुडो

९२. राम वसंत [व ३८]

चालो चालो, सखी, वृंदावन जइए, गोविंद खेले होली,
नटवर-भेख धरचो नंदनंदन, मली महावन्य टोली. चलो० १
करो श्रृंगार ने हार मनोहर, पेहेरो चरणा चोली,
शेथें सिंदुर नें मांग शमारी, कुंकम काजल गेहेली. [चलो०] २
एक नाचे, एक ताल वजाडे, एक छांटे चंदन घोली,
एक एक परे छमकलडो नाखे, एक मुख बोले होली. चलो० ३

वसंतरत वंदावन पशरयो, फूल्यो फागण मास,
गोविंद गोपी होली खेले, वळ जाए नारसियोदास. चलो० ४

९२. १. सखी. जईए मेघ. ३. छांटे. घाली. नाषे. घाले ४. फुल्यो. गोविंद. नारसीयोदास

९३. वसंत

माहारा कमखानी कशमसती कश ती कानजिए त्रोडी.
शेजडिये शूते मारे वाले बांहोडी मोडी. माहा० १
वारी न शकिए, लाज घणेरी, कुचफल हाथ लगावे,
वांहोडिए शाही मारो वालो शेजे वेगारे. माहा० २
वारंतां वारंतां वाले रदया भीतर लीधी;
नारसियाचा स्वामी संग रमतां लावरडुं कीधी. माहा० ३

९३ १. कमपानी. कानजीए. शेजलडीये. शुते. वाहोडी माडी. २. घणेरि. वाहोडीए. ३. नारसीयाचा. रमता.

९४. वसंत [पृ. १५३]

नहीं दियुं शांइ लेवा, अधुररस पीवा,
कुचफुल ग्रेहवा, नंदतणा नानटिया वाला, कां लंपट एवा ? नहीं० १
आज लगें अमा[रा] कुळमां नथी कांइ केहेवा,
लांछन–लाग[ल] लक्ष्मीवर, रहो अमथी अलगा. नहीं० २
दीठडे डाढ गले, माहासतिया, कहो, धीरज किम धरिये ?
नारसियाचा स्वामी संग्य रमतां भवसागर तरिये. नहीं० ३

९४. १. नही दीयु शाई. का. २. कांई. लाछन–. ३. नारसीयाचा. तरीये.

वसंतनां कीर्तन १९।

प्रभातीनां पद

९५.　　　　राग प्रभाती　　　　[भ. २५]

ध्यान धरच, ध्यान धरच नंदना कुंअरनुं,
जे थकी अखिल आनंद पामे.
अष्ट-मा-सिद्धय ते द्वार प्रणिपत्य करे,
देहीनां दुक्ति दूरच वामे. ध्यान० १

मोरना पीछनो मुगट मस्तक शोहे,
मकराकृत कुंडल श्रवण झलके.
नीलवट तिलक ते सुभग केसर तणूं,
कंठ मुगताफल-हार लटके. ध्यान० २

पीतांबर पलवट कटितट रुचि रह्यो,
ललित-त्रिभंगी उभो वेण्य वाहे.
कदमना द्रुम-तले राधिका रसभरी
हरजोनें सग्य आलाप गाए. ध्यान० ३

मुरलीनी धुन्य शुणी विनता विह्वल थई,
गोपिका केरडां वृंद आवे.
नारसियानें मन्य आनंद अति घणो,
पुष्प मुगताफल लेइ वधावे. ध्यान० ४

९५. १. ध्यान ध्यांन. कुअरनु पांमे. अष्टमासिध्य दुःकित दुरय. २. शुभग. ४. नारसीयानें. लेईं.

९६ राग प्रभाती [वा १]

नंदजीनुं आगणुं परम रळियामणुं,
सदाए शोहामणूं कृष्णे कीधुं.
वपु वैकुंठ कैलाश ब्रह्मासन
इंद्रना भवनथी अधिक कीधुं. नंद० १

सकल तीरथ जिहा वास वसे वीठलो,
इद्र ने ईश अज देव सघला,
भगत विना भूदरो केहनें वश नहीं,
एक एकथी अधिक शघला. नद० २

मात शनमुख्य हशे, तात ऊभा घशे,
दास वशे तिहा प्रेम प्रीत्ये.
भणे नारसियो गोकुल प्रगटिया
बाललीला रमे एणी रीत्यें. नंद० ३

९६. १. कईलाश ब्रह्मासन ईद्रना २ ईद भुदरो ४. शनमुष्य. उभा. तिहा नारसीयो प्रगटीया

९७ प्रभाती [भ. १५]

रेहेत रजनी ज्यारे पाछली खट घडी,
साधु पुरशे त्यारे शुइ न रेहेवूं.
निद्रा[नें] परहरी शमरवा श्री[हरि],
'एक तुं' 'एक तुं' एम केहवूं. रेहे० १

योगिया होए तेणें योग शंभालवो,
भोगिया होए तेणे भोग तजवो.
वेदिया होए तेणे वेद वीचारवो,
वैष्णव होए तेणे कृष्ण भजवो. रेहे० २

सकवि होए ते[णे] सकल ग्रंथ बाधवो,
दातारी होए तेणें दान करवूं.
पतिव्रता नार तेणें कंथनें पूछवूं,
कंथ कहे तव तु चित्त धरवुं. रेहे० ३

ए परे आपणा धर्म शभालवा,
कर्मचा मर्म ते मेल [का]डी.
नारसियाचो स्वामी सुभट सुराशरो,
फेरी न अवतरे नरनारी रेहे० ४

९७ १ यारे पद शुई परवरी योगीया भागीया हाए. तेण ३ सकवी ४. बाधवो तेंण ते मेल . डी नारसीयाचो. शुराशरो

९८ प्रभाती [व ९६]

जागो रे, जशोदाना जीवन, वेणडुं वायु.
ओशीशी शाहे रे मारो चीर चंपाणो. जागो० १

देराणी ज्येठाणी मारी नणदी जागे,
शहियर शमाणी केरा वलोणां वागे. जागो० २

घोली नाख्या दुरिजन ते कांइए विचारे,
नारसियानी वाणी कोए विरलो जाणे. जागो० ३

९८. १ वेणड २. द्राहीयर वलोणा ३. दूरीजन. कांईअे. नारसीयानी.

९९. प्रभाती [धृं. ७]

प्रात हवो रे, वाला, माहं पालव मेलो, वेरण नणदी जागी रे.
उदियो सूर नें थयुं अजवालुं, झग वलोणे वागी रे. [प्रात०] १
शमी रे शांझना मारे घेरच पधारचा, प्रेमे क्रीडा कीधी रे.
डंक ओडी छावरडुं कीधी, अम्रतनी परच पीधी रे. प्रात० २
अधुर तणा डंक अदभुत दीशे, मुख तंबोलें रातां रे.
विभचारी-संग छानां भलां रे, कोअक देखे जातां रे. प्रात० ३
अमें ब्रह्मचारी, तमे सबलां नारी, अमने ते को जाणे रे!
नारसियाचो स्वामी जेने मले तेने वेद पुराण वखाणे रे. प्रात० ४

९९. १. उदयो शुर. २. शाझना. ३. सुष. राता. विभचीरी. छाना भला. देषे. ४. ब्रह्मचारी. शबलां. वपाणे.

१००. प्रभाती

वेरीडा करे तेम कीधुं, मारा वाला, वारंतडां डंक दीधा रे.
आगे कोमल गाल छे गोरा, प्रगट खंड खंड कीधा रे. वेरीडा० १
शहो रे शमाणी सुने व्याहारें पूछे त्यारें स्यो उत्तर थाए रे!
विभचारी संगम [छानां] भलां रे, प्रगट कीधे पत्य जाए रे. वेरीडा० २

ते नर भूतल कोएक दीशे ज्ये परवेदना जाणे रे.
नारसियाचो स्वामी जेनें मळे ते वेद पुराण वखाणे रे. वेरीडा० ३

१००. १. वारंतडा. दीघो. २. छा...मला. ३. भुतल. नारसीयाचो. पूराण वपाणे.

१०१.

प्रातनी वात हवी, गोरस घूघवे, उठो, निद्रालुआ कान कामी.
रजनी-रस विलसतां त्रिपत पाम्यो नहीं,
कंठथी बांहोडी काढ, स्वामी. प्रात० १
चोलियाचा बंध ते त्रुटा, मारा वाला, अधुर राता मांहे डंक दीशे.
नणदी निठोर ते नित्य ऊठी लवे,
न जाणुं शाशुडी शुं रे केहेशे. प्रात० २
प्रीत प्रगट हवी, दुरिजन शुं करे? शेहेज्यनुं सुख ते कह्युं न जाए.
नारसियाचो स्वामी [भो]गवो भामिनी;
कंठथी बांहोडी कयम कढाए? प्रात० ३

१०१. १. घुघवे. बाहोडी. २. माहे उठी शु ३. शु नारसीयाचो.

१०२		राग प्रभाती

प्राण नें जीवन पियुजी पनोता, पंखीडां मधुरुं बोले रे.
प्रातनी वात ते प्रगट जणाए, दीवडियो रह्यो डोले रे. प्राण० १
मुगताहार शिथिल उर लागे, जाणूं रखे दिनकर ऊगे रे.
नणदी माहरी नाटक जूए, मेहेणां देती मुनें आगे रे. प्राण० २
कंठडे बांहोडी कां भीडी रह्यो रे? उरवर भलगुं कीजे रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, आवोनी रजनी रमीज्ये रे. प्राण० ३

१०२. १. पीयुजी. २. शीथल. उगे. मेहेणा ३ का. रमीये.

तेळे नें तंबोळे भीना, गलाळे राता,
पाछली पराळें पधारया वांशलडी वाता. आजु० ३

चुआ चंदन नें कस्तूरी मुगटमाला.
मशमशता मोहनजी आव्या मंदिर ढाला. आजु० ४

रदया भीतर वाले लीधडुं शांई,
अधुरस-चुंन लेतां न रह्युं कांई. आजु० ५

शामली सुरते मन मोहीने लीधुं.
नारसियाचो स्वामी मलियो, कारज शीधुं. आजु० ६

१०६. १. आजूनी. शामलो. २. सुरीनर मुनीजन ३. वाशलडी. ५. लीधड. शाई. काई. ६. नारसीयाचो. –मुद्रितमां त्रण ज कडी छे अने एनी ३ जी कडी जुदी ज छे.

१०७. प्रभाती [परि. २. ४९]

जोग्यो रे, वेनी रे, माथे माहावर लागो.
नेणां रे निद्रालां दीशे, सुगंध्य वागो. जोजो० १

केसर मांहे भीनो आवे अलवेली पार्घे.
सखी-संग्ये रंग रम्यो रजनी जाग्ये. जोजो० २

तिलकची रेखा वेहु गई छे रेली.
चरणकमल रंग रह्यां छे रेली. जोजो० ३

अधुर अंजन-रेखा श्रवणे जाणी.
आजुनी रजनी रे वाला, कीहां विहाणी ? जोजो० ४

कोण पुण्य कीधां नारी, हरिवर पामी.
प्रीतनी रीते रे मलियो नारसींनो स्वामी. जोजो० ५

१०७. १. नेणा नीद्रामा २. माहे –सग्ये ३ रेषा. गई. रह्या. ४. रेषा वीहाणी ५ हरीवर –मुद्रितमा चार कडी, घणु पाठांतर.

१०८. प्रभाती [शृ. १]

आज उजागरा, अंग्य आलश-भरचा,
माहरे मंदिरे क्यंम आव्या ?
भवन भूला के तमनें भामनियें भोलव्या,
सग्य शाहेलडी शे न लाव्या ? आज० १
अलक अल्ता तणे रंग राता घणे,
अधुर तिलक रह्यु सुभग भालें.
श्रमजलकणिका गाल्य शोर्हें घणू,
अरुण लोचन अधिका विशालें. आज० २
पीत पट पालटयुं, नील अंबर धरयुं,
अधुर अजन तणी रेख लागी
कोण पुण्यवंत विनता कहिए सुंदरी,
कृष्ण–सघाते रयण जागी ? आज० ३
कारण कहो, काइ काज छे अम तणू ?
किम पधारया, पियु, प्रात वेहेला ?
मन विना मलण ते क्यम, भणे नारसियो.
अम घेरच आवजो काल्य वेहेला. आज० ४

१०८. १. उजागरां भुवन भुला भामनीयें २ –तीलक. अरूण ४. काई. पीयु नारसीयो –मुद्रितमा १ कडी वधारे छे.

१०९. प्रभाती

आज अम घेरच अधिक उजागरा,
नाथ, सुं आविया रजनि वीते?
घाइ अति धशमशी वचन बोली हशी :
द्वारच ऊभा, नाथ, शुं समीपे? आज० १
अटपटी केसरी पाघ फूल्ये भरी,
कनक केसर विषवेल्य वींटे.
रेख ते नख तणी अंग दीशे घणी,
नेत्र तंबोल शुं मदन जीते? आज० १
अधुर अंजन फर्युं, हार हइये धर्युं,
कौस्तभ वीसरुं कोण रीत्ये?
भात्य कंकण तणी वांशे दीशे घणी,
बाथ लीधी संग्य प्रेम–प्रीत्ये. आज० ३
पीत पट पालट्युं, नील अंबर धर्युं,
वेचें वलो यियु, चेत चिंत्यें.
काल्य संग्रामपणे, नारसियो एम भणे :
आवज्यो, रीझवूं रमिनें रीत्यें. आज० ४

१०९. १. सुं. रजनी. धाई. धशमशि. २. रेप झीवे ३. हइये. तणि.. सग्य. नारसीयो. आवयो. रमीनें.

११० राग प्रभाती

कुंकम काजल गाल्य कोणे कियुला?
नयण तंबोलें रातां रे.

अधुर अडंतर अलगां जणाए,
लाजो नहि पर-घेरच जातां रे? कुंकम० १
नव नख-भूषण अंग्य दीशे, भला,
ते सुंदर मन भावे रे.
प र ना री-शुं प्रे म व छ धा,
मोरे मंदिर शे आवे रे? कुंकम० २
वि भ चा री-शुं वा त न की जे,
इम बोले श्यामा नारी रे.
नारसियाचा स्वामी रे, कहुं तुझनें,
आ कोण लीला तमारी रे? कुंकम० ३

११०. १. राता. नही जाता. २. वछुधा. मंदर. ३. ईम. ४. नारसीयाचा. कहु.

११२. प्रभाती [परि. २. २८]

सेजेथी ऊठी रे श्यामा शीश अंबोडो वाली रे.
वदन सुधाकर वालीनें उदियो दिनकरने अजवाले रे. सेजेथी० १
आलश मोडे, उजागरी अंगे, अलव्य करे अनमेख रे.
अधुर तणा डंक अदभुत दीशे, खंड तिलकनी रेख रे. सेजेथी० २
लडशडतां उर अंबर ओढे, कंचुकि बंध शमारे रे.
हंसलता बहु कंठ धरीनें रही निशा-सुख विचारे रे. सेजेथी० ३
नहि जावा दियुं, मारा वाला, मरम वचन इम बोले रे.
नारसियाचा स्वामी संग्य मलिनें नहि ए सुखने तोले रे. सेजेथी० ४

१११. १. उठी. उदयो २. अनमेष. पड. रेपा. ३. नीशा-. विचारी. ४. दीयुं. ईम. नही.

११२.　　प्रभाती

जागो रे, जशोदाना जीवन, आलश मोडी.
पंखीडां बोलवा लागां. रजनी थोडी. जागो० १

शंख चक्र गदा पदम गरुडगामी,
शेज्येथी ऊठचा रे मे[हे]ता नरसीचा स्वामी. जागो० २

११२. १. पपीडा लागा २. -ग्रामी. उठया.

११३.　　राग प्रभाती　　[धृ. १४९]

सफल रजनी हवी आजनी अनुभवी,
पलंग वेशारी पियुडे हास कीधुं.
हाथ दरपण ग्रही वदन अवलोकतां
प्रेमनुं चुंबन गाल्य दीधुं. सफल० १

कुसुमचा हार ते कंठ भूषण धरी,
भुज भिडी भूदेरे रदया शार्थे.
सुरतसंग्रामें सुभट शार्थे भली,
जीत्यो यदुनाथ वेहु ज वाये. सफल० २

मदनना शेननुं मान मरडियुं घणूं,
ज्युध जीत्यो रण हाथ आव्यो.
चउद भुवन तणो नाथ में वश कर्यो,
अजित जीत्या तणूं बर्द काहाव्यो. सफल० ३

मदगलित मातंग होए मद-भर्यो,
सुंदरी श्रीहरि अंग आव्यो.
नारसियाचो स्वामी सुभट सुरासुर
केशरी कान शाही नचाव्यो. सफल० ४

११३. २. भुपण भोडी भुदरे. शुभट. झीत्यो. ३. मे. झीत्या. भवन काहाव्यु. ४. सुदरी. श्रीहरी. नारसीयाचो स्वामी शुरासुरासुर कान. —जुओ आ पहेला अक २; —पाठातरो आवनायी अहीं लीधु छे.

११४. राग प्रभाती [शृं. ३७७]

पाछली रात्यना नाथ पाछा वन्या,
शुं करुं रे, सखी[१] हुं न जागी.
निरखतां निरखतां निद्रा आवी गई,
वालोजी दइ गया वाच राखी. पाछली० १
कृष्णजी क्यां हसे[२] शोक शुणशे हवे ?
प्रथम जइने [एहेने] पाय लागुं.
सरल छे शामलो, [मिलशे आंबलो],
जइ रे वाला कने मान मागुं. पाछली० २
वेनी, उठ आलश तजी, नाथ नथि ग्या हजी,
बारच ऊभा हशे हेत जोवा.
धन्य रे धन्य रे, नारसियो एम भणे :
अशुर थाशे मारे धेन्य दोवा. पाछली० ३

११४ १. वरया शखी. निरपता निरपता दई. २. क्या. शुणशणशे जई शरल ३ नथी उभा.

१९५. प्रभाती [शृं. १३५]

पलंगचे पाओले कुसुममाला वडे
वांधिश वेहु कर लाज लोपी.
माहारे मंदिर थकी कोण मूकावशे ?
शुं करशे ओली ओकत्य कोपी ? पलंग० १

तुं वनमाली, हुं कुसुमगुण-वेल्यडी,
नीर न शींचे तो श्याने रोपी ?
भमरलो होए ते कुसुम-मकरंद वशे,
रहे रे कमल मांहे प्राण अरपी. पलंग० २

स्नेहना धरण-शुं प्रेमना पात्र-शुं
रहे करे तन मन प्राण शोंपी.
भणे नारसियो : ज्यम रीश ऊतरे,
तेम ते मुझने आप्य, गोपी. पलंग० ३

१९५. १. मुकावशे. २. माहे. ३. प्रांण सोंपी. नारसीयो.
—जुओ आ पहेलां अंक ७; पाठांतरने धारणे अहीं छाप्यु छे.

११६. प्रभाती [शृं. १३६]

सांभलो, भामिनी, कृष्ण पिया एम भणे :
तारे मंदिर थकी कहे नव्य जाउं.
नहि-कोए नारच तम समोवड, सुंदरी,
जेनी कुसुममाला वडे हुं बंधाउं. सांभलो० १

हुं वनमाली, तुं कुसुमगुण-वेन्यडी,
गींचुं रे अम्रत द्रष्टें करी.
प्रेमनी वाड करुं तम पाखलें,
राखूं रे समरथ बांहे धरी. सांभलो० २

धन्य तुं, सुंदरी, धन्य तुं, सुंदरी,
मुनें कुसुममाल वडे तें ज बांध्यो.
चउद भुवन तणां बंधन छोडवूं,
न जाणूं मोहिनीतें कांइ मंत्र साध्यो. सांभलो० ३

मान रे, मानिनी, मान दीधुं घणूं,
न जाउं मंदिर थकी, बोल दीधो.
नारसियाचो स्वामी सुभट सुरासुर,
प्रेम-शुं सुरत सग्राम कीधो. सांभलो० ४

११६ १ शामलो. पीया सुदरी वधाउ २ पाखलें राखू. शमरथ बाहे. ३. ते ज बाध्यो मोहीनी काई ४. (२) मान. जाउ. —जुओ आ पहेला अक ८; –पाठांतर होई फरी आप्यु छे

११७ प्रभाती [शृ १४८]

कोण पुण्ये करी नारच हुं अवतरी ?
श्रीहरि दीन थै मान मागे.
अमर अवगाय कहे, अकुल कोए नव्य लहे,
ते कमलावर कंठ लागे. कोण० १

जगन जागे करी, ज्योग ध्याने धरी,
वहु तप आदरी देह कष्टें.
ते गांहे हरिनें निमख नव्य पेखियें,
ते हरि निरखियें प्रेम-द्रष्टें. कोण० २

शेप सनकादिक शेग्य सेवे सदा,
ज्येनुं भवन वैकुंठ लगें नाम कावे.
ते-पाए अधिक छे मंदिर माहरुं,
प्रेमें पीतांबर पलंग आवे. कोण० ३

चउद भुवन तणो बरद पोतें वहे,
एम कहे समरथ वेदवाणी.
नारसियाचो स्वामी सुख तणो सागर,
कीधी क्रिपा मुनें दीन जाणी. कोण० ४

११७. २. घ्यांने. माहे हरीने. पेषियें. हरी निरषियें ३. शमरथ. नारसीयाचो. सुप. —आ पद स. १६६८ नी प्रत्नु अक १ तरीके आ पहेलां छपायु छे; पाठतरो होई अहीं फरी छाप्यु छे.

११८. प्रभाती

जाओ ते जाओ, बाई, अमे न जवाए. चरणकमल चित्य बांध्युं रे.
रदया भीतर वेधीला रे, कामबाण उर वागुं रे. जाओ० १
(वालाजीनां) नयणकमलना मुखमरकलडा जल्हलता ने गाल गोरा रे.
आतुर थइ व्याकुल थइ विनता चित्त हरीला मोरा रे. जाओ० २

हाथ न हाले, मारा पग नव्य चाले, सरव अंगे ढली थई रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, ससार-मारग भूली [रे.] जाओ० ३

११८. १. वाघ्यु २. थई थई चित ३ ढुली थइ नारसी-याचो. भुली.

११९. प्रभाती [परि १ १४]

टलतानें टलता शु हींडो, मारा वाला ?
आलिंगन लीधा विना क्यम चाले रे ?
ज्ये दिन गया मुनें तम विना रे, ते हइडे घणुं शाले रे. टलता० १
ए रस थकी ब्रह्माजी अलगा, मुनिजन काई नव्य जाणे रे.
कांइक जाणे शुकजी सरखा, जे वेद पुराणे गाए रे. टलता० २
ते रस जाणे व्रजनी रे विनता, जेणे विविध परचे रस पीधो रे.
परब्रह्म परसोतम जाणा, उगरतो नारसिये लीधो रे. टलता० ३

११९. १. आलिंगन. हइंडे. २ ब्रह्माजी काई काईक ३ वीवीध. नारस्येये. —आ पहेला जुओ अक १२, पाठातरने कारणे फरी छाप्यु छे.

१२०. प्रभाती [शृ ४४९]

हरिसगम थइ हरखे रे श्या[मा], निज मंदिर भणि चाली रे.
चरण चतुरा निहाली करिने हशि मुख पालव झाली रे. हरि० १
विविध विलास करीने रे आवी, गोपीनाथ वश कीधो रे.
ज्ये सुख स्वर्ग वैकुंठ नहीं रे ते नेत्रे भरि भरि पीधो रे. हरि० २
डशण तणा डंक नख माहे, प्रगट प्रेमदाए दीठो रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, रजनी तणो रस मीठो रे. हरि० ३

१२०. १. थई भणी. करीन २ नही ३ नप माहे. नारसीयाचो

१२१. **प्रभाती**

भोगवो, भामिनी, सफल करो जामिनी,
कां रे निंद्र-भरि थइनें शूतो ?
प्रात थाशे नें गोवालिया शार्थें
हींडग्यो वंनमांहां [- -] हूतो. भोगवो०
रसभरी शेज्य नें रसभरी सुंदरी,
रसभरयां चोलियां चाउख छूटा.
कोमल कलेवर, कठिग पयोधर
खूंचशे नाथनें वाथ भरतां. भोगवो०
ननकडो पीयु, रूप अनोपम,
माहा वलियो केसरी कान कामी;
नारसियाचो स्वामी सुभट-शिरोमण्य,
सुंदरी अत्य आनंद पामी. भोगवो० ३

१२१. १. का. हीड्यो. माहा. २. 'चाउख' जेवुं वंचाय छे. छुटा पूंचशे. ३. नारसीयाचो. –सीरोमण्य सुदरी. पांमी.

१२२. **राग प्रभाती**

हुं जागी, मारो नाथ न जाग्यो, वातडी ते के-शुं कीजे रे ?
एक वारका हशि बोलो, मारा वाला, अधुर-अम्रतरस पीजे रे. हुं० १
जोवन मारो लेरे जाए, मदन परे परे पींडे रे.
तां लगे तननो ताप न जाए, जां लगे हृदे-शुं न भींडे रे. हुं० २
पुरशोतम-शुं प्रीत बंधाणी, जागीला ते नंदकुमार रे.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, एणि परच रजनीविहार रे. हुं० ३

१२२. १. –अंम्रत–. २. जा. ३. मलयो.

१२३ प्रभाती

नहि बोलुं, नहि बोलुं, मारा वाला, सारगहे म बोलाविश रे.
माणशनी परे में तुनें वार्यो; नीलज, लाज गमाविश रे. नहि० १
हुं धणियाती योवन-मदमाती, वाल न वांको थाए रे.
आपणपणं आपण-वश होए, कोणे शासुं न जोवाए रे. नहि० २
आ देहडिनो गरव किशो रे! वेरीडो वशे तन माहे रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, वण-बोले न रेवाए रे. नहि० ३

१२३ १ मे २ वाको. ३ –माहे नारसीयाचो स्वामी.

१२४. राग प्रभाती

हुं जागी, मारो नाथ न जाग्यो, कठ बांहोडि धरि शूए रे.
थियुं परभात ने दिनकर उगियो. दुरिजन कौतक जूए रे. हुं० १
छूटी वेण्य, चोलियांची कश त्रूटी, देहडी विदारी दीशे रे.
अधुर खड करि, लोचन गेहेल्या, हजी न जाणुं शुं थाशे रे. हुं० २
नीलज नाहोलियानी शेज्ये आवी ज्येवी ते ते थोडुं रे.
नारसियाचा स्वामी-संग्य रमता दीन थई कर जोडुं रे. हुं० ३

१२४ १ वाहोडी धरी शुए. उगीयो २ त्रुटी जाण ३ नारसीया सग्य.

१२५ प्रभाती

भले परणावी, मारे हरिवर रूडो, अखड पेराव्यो चूडो रे.
पियुचा सगम पामी, मारी बाइ रे, मे वाल्यो अंबोडो रे. भले० १
पियुजिनें कंठ वलाइनें शूती, ज्यम शाखें वलगो शूडो रे,
नाहोलिये मुनें नेह जणाव्यो, ससार-मारग कूडो रे. भले० २

पियुजि विना, कहो, किम विस्तरिये ! हरिरस-अम्रत थोडो रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, माणे ठ्ल्यो मूडो रे. भले०- ३

१२५. १. रुडो. पराव्यो. चुडा. मे अंवाडो. २. पीयुजीनें कठ शुती. शुडो. नाहोलीये. कुडो. ३. पियुजी. –अंम्रत. नारसीयाचो. मुडो.

१२६. **प्रभाती**

शीतल शेय्याए पोढो मारो वालो, नणदियें शाद कीधो रे.
हुं जागी नें घुंघटडो वाल्यो, तेणे मारुं कारज्य शीधुं रे. शीतल० १
हुं व्याकुल डीठी मारे वाले, रदया भीतर लीधी रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, आप शरिखडी कीधी रे. शीतल० २

१२६. १, पाढो. नणदीयें घुघटडो. २. हु. नारसीयाचो शरीपडी कीधी.

१२७. **प्रभाती**

आज सोभाग्य थइ, विरहव्याकुल टली,
सनमुख्य शामले शांइ लीधुं.
भुजवल भीडी भाव-शुं मूदरे,
अधुर–अम्रत-रसपान कीधुं. आज० १
कुसुमचा हार लइ कंठ आरोपिया,
पीयु पधारिया शेय्य महारी.
सुरत-संग्रामे अतिसुख भोगव्युं.
उर पर धरी रही रयेण शारी. आज० २
धन्य ज्ये धन्य जे क्रष्ण शार्थे रमे,
सदा सुख भोगवे ते रे वाली.

भणे नारसियो : अवर, कहो, किम गमे ?
अनुभव नहि श्रीकृष्ण टाळी. आज० ३

१२७. १. थई. शांमळे शांई. भुदरे –पांन. २. लई. ३ नारसींयो.

१२८. प्रभाती [शृं ४१]

सांभळो रे, सखी, आजुनी वातडी,
माझम रातडी हूं रे जागी.
वालोजी मारे मंदिर पधारिया,
लयि रे आलिंगन चरण लागी. सांभळो रे० १
जारे जागुं तारे नयणे देखुं नहीं,
टळवळं नें अंग्य ताप जाग्यो.
दीन जाणी करी शेज्य आव्या हरि,
विलसतां विलसतां स्नेह भाग्यो. सांभळो रे० २
अम अबला तणी प्रीत्य मनमा धरी,
रंगभरच रमतां थयुं रे वेहेणूं.
नारसियाचो स्वामी उर परच लीधो,
शाशु नणदनुं भागुं मेहेणूं. सांभळो रे० ३

१२८. १ शामळो. सखि आजुनी २ देखु नहीं. अग्य. हरी. ३. रमता नारसीयाचो भागु

१२९. प्रभाती

झुंब मां झुंब्य मां झुंब्य, मारा वाला, कुच कोमल बेउ नाना रे.
अधुर-डंक ते अलगा जणाए, किम करि राखूं छाना रे? झुंब्य० १

पीन पयोधर वलगिश मा रे, नारंगडे नख लागे रे.
अम घेरच पियुजी खरो रिशालवो, शाचो उत्तर मागे रे. झुंब्य० २
चोन्य मां चोन्य मां चंचल चोली, पालव मेलो, मुरारि रे.
नारसियाचा स्वामी, कहु तमनें : आ कोण लीला ताहारी रे? झुंब्य० ३

१२९. १ कीम करी राषू २ वलगीश. पीयुजी रीशालवो. ३. मुरारी. नारसीयाचा स्वामी

१३०. प्रभाती

ऊधडकी ऊठी रे अबला, जाणे करि मदिरा पींधी रे.
नंदकुंअर-शु शांइडुं लेइने अधुर-अम्रतरस लीधो रे. उध० १
विनता वनफल ने कृष्णजी पोपट, ग्रहि रह्या चंच मझारच रे.
अधुर डसी डसि अम्रत पियुला, तत्त्व हरीला मोरा रे. उध० २
अटवडती आखडती अबला निज मंदिर भणि चाली रे.
नारसियाचा स्वामीनें मलिनें भामिनि भलि परच भावी रे. उध० ३

१३०. १ उधडकी उठी. शाईडु लेईने २ ग्रहीं तत्व. डसी डसी हरिला ३ आपडती. नारसीयाचा स्वामीने मलीनें भामिनी भली.

१३१. प्रभाती [मृ. ३७९]

घूंघटडामां लोचन झलकें, जाणे कांइ उदियो भाण रे.
भर नारी जोवन लट छूटी, अनंग न माने आण रे. घूंघट० १
एणी द्रष्टें ब्रह्मादिक वाह्या, मुनिजन-मान छंडावे रे.
नारसियाचा स्वामी, नाठा न छूटो;
कर शाही कृष्ण नचावे रे. घूंघट० २

१३१. १. धुघटडामा. काई. छुटी. २. ब्रह्मादिक. मानं. नारसीयाचा. छुटो. —मात्र १ ली पंक्ति समान छे. मुद्रितमां त्रण कडी छे; आमां बे ज छे.

१३२ प्रभाती [परि. १ ९९]

जागो तो एक वात कहुं रे, लाल गोवरधनधारी.
मननी हति ते रहि मारा मनमा, वेरण रजनि विहाणी रे. जागो० १
जो तमे मनना मनोरथ पूरवो तो अंगोअंग्य थाए टाढु रे.
जे सुख स्वरग वैकुंठ नहीं रे ते परमानद पमाडुं रे. जागो० २
मनछा वाचा करमना करिनें भजिए अंतरजामी रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, विरह-वेदना वामी रे. जागो० ३

१३२ १. कहु हती रही. नही. पमाडु ३. करीनें भजीए नारसीयाचो स्वामी.

१३३ प्रभाती [शृं १३४]

पाछली रात्यना पधारिया श्रीहरि,
घूमते लोचन अंग्य डोले रे.
वेहु पाशे सुंदरी बांह [कंठे] धरी,
शोभता भवननें नहि को तोले. पाछली० १
हुं सनमुख्य थई, रीस मननी गई,
थइ रही चकित-गात्य प्रेम निरखूं.
पियुजिनी रस-भरी सरव दासी खरी,
नारसियो रमण जोइने हरखू. पाछली० २
सखि तणा चरण ते चारु मस्तक धरी,
पीयु पधारिया पलंग पोढी.
अंग-सयोगथी अधिक सुख अनुभवी,
एह शुरत्य ते एम डीठी. पाछली० ३

शुं जाणे सुर ब्रह्मा स्नेहनी वारता,

भरा अधिकार नें आदि वाधे.

नारसियाचो स्वामी भलें मलियो

गोकुलनाथ——गुण——समवादे. पाछली० ४

१३३. १ श्रीहरी आप भुवनने २. मननि निरपूं पीयुजीनो. दास. नारसीयो जोईने हरपूं. ३. चारू. ४. सु ब्रह्मा नारसीयाचो. —आ पहेलां जुओ अंक ६, -पाठांतर छे तेथी छाप्युं छे

१३४ प्रभाती

उठंतां उरवर शणगारता गिरधर,

श्रीहरि साहिया रुचिर पाणे.

मेल्य, मदसूदन, देखे ओन्या दुरिजन,

मारग जातां [--] विश्व जाणे; उठंतां० १

पीन पयोधर मरच मां माहेरा,

कांचली कमखो कशण त्रूटे.

पतिव्रता नारचने हाथ घाल्ये, हन्या,

सबल अन्या करे अबल छूटे. उठंतां० २

सुंदर नारच शुं सनेह राखे घणो,

उत्तम पुरुष शुं नेह राखे.

शहु आगन्य कहे शील्वंत सदाए, -

श्रीहरि सनमुख्य अधुर चाखे. उठंतां० ३

कर ग्रही कामिनी विहल थयो वालमो,

मेन्य मुने, मरमचा बाण लागे.

सुंदर नारच-शुं सुभट शेजे भडी,
भीडतां भवोभव्य दुःख भागे. उठंतां० ४
ए सग लागे तेने भवनो भय भागे,
निलज ध्या नाथ हवे एम केहेशो,
नारसियाचो स्वामी ए रस वालो,
चरण मांडे तांहां तंन धरशो. उठंतां० ५

१३४. १. गीरवर. श्रीहरी. रूचिर मदसुदन देषे. २. वाचली. त्रुटे. पतीव्रता. शबल. लुटे. ३. (२)–शु. राधे श्रीहरी. ४ दुख ५ मादे.

१३५ प्रभाती [शृ. १३७]

मेहेल्य, पीतांबर, अंबर माहरुं,
सूर ऊगो क्यम शूई रहिए
अम घेर शाशुडी नणद रीशालवां,
कंथ पूछे तेनें शुं रे कहियें? मेहेल्य० १
धेन्य दोहोवी घेरच, वाछरू टलवले,
महिय वलोलवूं आज माहारे.
कंठथी वांहोडी काढ करुणा करी,
हवे कोण आवशे काल्य ताहारे? मेहेल्य० २
शब्द शोहामणा शावऽय अति करे,
दीपक-ज्योत ते खीण थाए;
कुसुमचा हार ते कंठच करमाणा,
पंचम राग ते वेद गाए. मेहेल्य० ३
तुं तारे मंदिरे प्रेम-शुं पोढियो,
माहरे मंदिरे दूरच जावूं.

लोकनी लाज लोपी, लक्ष्मीवर,
　　वलि वली, नीडज, नहि रे आवूं. मेहेन्य० ४
सुरत्य-संग्रामनी साधना शिथिल थे,
　　रही ओजागरे सफल नामी.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो,
　　सुंदरी अत्य आनंद पामी. मेहेन्य० ५

१३५. सुर उगे सुई. शासुडि. सु कहीयें २. वाछरु. महीय. कठथी वाहोडी ३. –योत्य पोण कठय ४. लक्ष्मीवर. नही. ५ शीथल. नारसीयाचो —आ पूर्वे जुओ अंक ९; पाठांतरने कारणे फरी छाप्युं छे

१३६.　　प्रभातो　　[परि. २. ४४]

वातनी वाते रे मारो वालो रिशाणो,
　　बाइ रे भरवाड, तेनुं कांइ कारण जाणो ? वात० १
पुरुष भमर होए तेनुं मन न धरिये,
　　आपणे अबला रे एनें रुपणे मरियें. वात० २
दोष न दीजे रे, वेनी, जुओ विचारी,
　　जग जण आगम्य लवती हींडे :'वालो विभचारी.' वात० ३
जाओ रे जाओ रे, वेरण, ए काम तोरां.
　　तो रे मंदरथी आव्या त्यांथी हशो न चोन्या. वात० ४
इह लोक परलोकें सुख तो लहियें,
　　नारसियाचा स्वामी केरां कारज करियें. वात० ५

१३६ १. रीशांणो बाई बाई. २ पुरुष. रुपणे. ३. दोश. ४ त्यांथी. ५. ईह. सुष ल्हीये नारसीयाचा. करीजे.

१३७.

आजुनी रजनी, शुणो रे, मारी सजनी,
वीती मारा वालाजी-शुं रमतां रे.
मरकलडे मुख चुंबन देतां.
काज शरचां मन गमतां रे. आजुनी० १
नानां हतां त्यारे कांइ नवि जाणतां,
रेतां मारा वालाजीथी अलगां रे.
भरज्योवनमां हरिवर पामी,
गले गाढां थइ वलगां रे. आजुनी० २
हास्य-विलास विविध परि रमतां
कामातुरथी टाली रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो,
कंठ बाहोडली वाली रे. आजुनी० ३

१३७. शु. रमता. शरया गमता २ नाना काई भरयोवनमा. थई. ३. नारसियाचो बाहोल्डी.

१३८. प्रभाती [शृ. ३९१]

कंठ बांहोडली वाली मारे वाले, में मरकलडो कीधो रे.
दरपण मांहे निहाली करिनें आनंदे उर पर लीधो रे. कंठ० १
हास करी हलोल्यां मारे वाले, मुख ऊपरच कर धरियो रे.
में मारा वालाजी-शुं जंतर टाल्यो, शेजडिये अनुभवियो रे. कंठ० २
वाहाले वाली भुजबल भाडी, राखी घ्यारे ज्याम रे.
नारसियाचा स्वामी प्रेमनी लेहेरचे पूरया मारा मनना काम रे. कंठ० ३

१३८. १ बाहोडली मे माहे. करीनें २. उपरघ. मे. -शु. ३ राषी नारसीयाचा. पूरयां.

१३९. प्रभाती [शृ. ३९२]

कामकलारस पियुजी माहारो, ते में उर पर लीधो रे.
शामलिया-शुं सनमुख्य थैनें मननो मनोरथ कीधो रे. काम० १
वाहाले वाहाल्य जणाव्युं मुझने राख-समे रंग्य रमतां रे.
शाशू नणदी सबल थयां रे ते में मेहेल्यां ल्वतां रे. काम० २
ज्योवन माहारुं सफल थयुं रे, वालाजी-शुं प्रीत्य बांधी रे.
नारसियाचा स्वामी-शुं रमतां कोक-कलागत्य शाधी रे. काम० ३

१३९. १ पीयुजी. २. शाशु शबल मे. ३. नारसीयाचा. योवन. रमता.

१४०. प्रभाती [शृं ३९३]

कोक-कलागत्य शाधी, मारी बाइ रे, वालोजी मारो रशियो रे.
कंठ बलाइ अधुररस पीधो, शेज्ये सुंदरवर विलश्यो रे. कोक० १
कुरकुटा, तुं रखे वचन प्रकाशतो, मारो वालोजी रंगमां रातो रे.
अंतर टाली एक थयां रे, प्रघल प्रेमरस पातो रे. कोक० २
रजनि आजुनी साधन थै रे, वालाजी-शुं प्रीत्य बांधी रे.
नारसियाचा स्वामी-संग्य रमतां शहियर मांहे शमोती रे. कोक० ३

१४०. १. बाई. बलाई २. तु. थया. ३. रजनी. —शु. बाधी. नारसीयाचा. माहे शमोती.

१४१. प्रभाती [शृं. ३९४]

शहियर मांहें शमोती कीधी,
मारो वालोजी ते रंगभरच माण्यो रे.
शामलिया-शुं गांहीडुं लेतां,
अंतर कांइ नव्य आण्यो रे. शहियर० १

परच परच पियुजी प्रेम जगाव्यो,
मुख ऊपरच मुख करता रे.
सुखनी सीमा कहि नव्य जाए,
अधुर अम्रतरस पीता रे शहियर० २
हास विलास माहा रस झीली,
रयणी जाती न जाणी रे.
नारसियाचा स्वामी संग्य रमता
शाश रिये शपराणी रे. शहियर० ३

१४० १ माह. शाहीड काइ. २ पीयुजी उपरच सीमा ३. नारसीयाचा -सग्य

१४२ प्रभाती

घमकार शबद दधि मथत मद सुंदरी,
हरिगुणगान ते सुष्टि माहे.
चरणनादें रुगित मेखला मदभरी,
वल्य ककण चुडी खल्के बाहे. घमकार० १
कंठ केल माधुरी उरनी तब्रन-भरी,
विलोलता अगोअग्य विरश थाए
विविध लीला प्राणनाथनी निशि तणी,
भणी संगीत बल वंध गाए घमकार० २
शिथिल केशावली वदन ऊपरच ढली,
उरहार माल्ते अधिक नारी
जाणे वेद मुनिगान धुनि संगीतनादें,
लियु रे वलिहारडी, सजनि, तारी घमकार० ३

સખી, તારા ગુણ ઊચરું, રસના-શું ગાન કરું,
　　તેને ધ્યાને મોરું અંગ વિસરે નાહીં.
ભણે નારસીંહ એ વિધિ કરો, વ્રજનાથ,
　　રમો રે અંતરગત હૃદયા માંહીં. ચમત્કાર૦ ૪

૧૪૨. ૧. -ગાન, ગીત મેલ્યા. ૩ ઉધરય. ગર્જ્યો, ગાન. ૪. ભણે. ઊચર મોદ શ્રીધર નાહી. માહી.

૧૪૩.　　　　પ્રભાતી

ચાન્ય નેં ચાતુરી જાણી તોરી મુરારી,
　　મોરી શ્યામા વિના વિલસો વીજી.
તારાં ચરિત્ર જઈને નિરેદું,
　　આગે એ રંગમાં રહી ભીંજી. ચાન્ય નેં૦

જગતથી અળગો રહી આશા જેહની કરે,
　　તે-શું પાધરો કો ન ચાલે?
દાહો-ડોહોગે પ્રભુ પ્રકૃત તેહની જાણે,
　　તો ઘેર ઘેર ભાળતો કો હીંડે? ચાન્ય નેં૦ ૨

હવું તે હવું, પણ હવે સંભાળજ્યે,
　　આજ કાંઈ કૂડું નહિ પડાવું.
નારસિયાચા સ્વામી કહેઃ બોલ દિયો
　　તો હું તમારે આશ્ય આવું. ચાન્ય નેં૦ ૩

૧૪૩. ૧ ઘણો. તારા નિવેદું. ૨ પ્રગટ્ય હોડે. ૩. કાંઈ કુડુ નારસીયાચા. દીયો. હુ

१४४ प्रभाती

हयिमां खोटो नें मुखनो मीठो, बोल न मानुं हुं तारो रे.
रजनी रमि रमि हमणां आव्यो, हवे कहे बार उघाडो रे. हयिमां० १
अनेक वार तें मुनें वाह्यो, म कहिश 'वाली वाली' रे.
परनारी शु प्रीय ज कीधी, विवचारचां केही गाली. हयिमा[रे]० २
माननियांचां वचन शुणी मन रीझ्या [दिव] मुरारि रे.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, ए कोण लीला तारी रे[2] हयिमां० ३

१४४ १ हु रमी रमी. २ कहीश ३ माननियाचा मुरारी नारसीयाचो

१४५. प्रभाती

आणी वेला शे आव्या, मारा वाला[1] मंदिर नहि ऊघाडुं रे.
तें तो कूट करयु मुझ शाथें, हवे रामत्य [न] रमाडुं रे. आणी० १
शांभल्य, अबला, शाचुं कहु तुझने, हु माहारे मंदिर हूतो रे.
कहो तो शम करुं तुझ आगल्य, हमणा जाग्यो शूतो रे. आणी० २
मुझ आगल्य जूठु शुं बोले[2] तारुं नवि नवि नारच मन हीशे रे.
रमी करी आव्या मुझ पाशे ते ताहारुं मुखडुं दीशे रे. आणी० ३
मन मनाव्यु मानिनी केरुं, मंदिर उघडावी मलियो रे.
नारसियाचो स्वामी वाचा दइने कुच ग्राही मुख मलियो रे. आणी० ४

१४५. १ कुड. रामत्य. २. शाभल्य कहु हु. हुतो शम शुतो. ३. जुठु. तारु. ४ माननी. नारसीयाचो. दईनें मुष

१४६ प्रभाती

शमी रे शांझनी शान ज करतां नयणे निद्रा न आवी रे.
वाटडि जोइ जोइ विरह वदधी, ग्रे एकलडी शूती रे. शमी रे० १

शाही समागी पूछण लागी; कहो, किहो उत्तर दीजे रे !
विण अपराधे परहरियां ते दोष करनेने दीजे रे. शामी० २

वाल्होजी मारुं कह्युं न माने, मदन पंड पडें पीडे रे.
नारसियाना स्वामी विना, बाई रे, देहनुं दुख नवि जाए रे. शामी० ३

१४६. १. शामली. पाटडी जोई जोई थाकुंथी. सुनी २. पुछण. दोश. ३. नारसीयाना वीना वाई.

१४७.   प्रभाती   [पृं ४३०]

आजनी रात्यना रंग, सखि, स्या कहुं !
सनमुख्य शामळो शांहि दीठुं.
भाग्य भारे करी भोगवो श्रीहरि.
प्रेम-शुं चुंबन गाल्य दीधुं. आज० १

ठाम्य ठाम्य ते डंक दीधे घणा.
प्रेमनी वात ते पियु-शुं कीधी.
सुरत-संग्राममां नून राखी नहीं,
कर ग्रही कण्ठ उर मांहे लीधी. आज० २

पीन पयोधर मरद मां, मावजी,
कंचुकी-बंध ते गयो त्रूटी.
नारसियाचो स्वामी रंग्य रम्यो घणुं,
जनम जनमनी बीहीक छूटी. आज० ३

१४७. १. सखी. शाही. श्रीहरी. २. नुन. ३ त्रुटी.

१४८.　　प्रभाती　　[परि. १ १००]

रजनि शोहागण वहिनें गइ रे, भाण शुहागी ऊगो रे.
नंदनो शुहागी शामलियो रे, कुसुमकली लइ पूज्यो रे. रज० १
गोप शुहागी आंगणे ऊभो, वेण शुहागी वागो रे.
माता शुहागी शाद करे रे, पुत्र शुहागी जाग्यो रे. रज० २
धेन शुहागी वछ धवरावे, नेह शुहागी वाधो रे.
नारसियाचो स्वामी सदा शुहागी, भवसागर-भय भागो रे. रज० ३

१४८ १ रजनी. उगो लई २ आगणे उभो

१४९.　　प्रभाती

शणगटडामां नीझर्ण झरता, फरतां लोचन दीशे रे.
ज्योवन-गेहेली मान न मूके, लोचन भरियां रीशे रे. शण० १
प्रेम करि पियुजिये प्रेमदा मनावी, अंग्य आलिंगन दीधुं रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, मानिनि-कारज्य शीधुं रे. शण० २

प्रभाती समाप्त

राग श्रीप्रभातीनां कीर्तन ५५

१४९. १. (१) लोचन भरिया. २ करी पियुजीये माननी समापतः

[राग वेलावलनां कीर्तन]

१५०.　　राग वेलावल

वारुं छुं तुने, वीठलजी रे, पर-घेरच पाओ न दीजे [रे].
गोकुल नारच, कुमार आहेडी, ते-शुं स्नेह न कीजे रे. वारुं० १

लोक तणे आलंभे लागी, कहो, कणी परेच कीजे रे?
दूध दहीं माखण घेरच ताहारे, ज्ये जोयें ते लीजे रे. वारुं० २

एवां वचन शुणी हरि हसिया, आवीला अंतरज्यामी रे.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, सुंदरी आनंद पामी [रे]. वारुं० ३

१५०. २ दुध दही मापण जायें. ३. एवा अतरज्यामी. नारसीयाचो.

१५१. वेलावल

नहि जाउं एणे शाशरिये रे, नहि पेरूं शणगार,
ए शणगार तणी शी शोभा, भजे नहीं भरथार! नहि० १

परणीने पीहरच लइ मेल्यां, पियुडे पाछुं न जोयुं.
शाशू नणदी बहु [अ] मली, मारुं एवातण खोह्युं. नहि० २

मनावी मंदिरमां मलिया, मनसा शीवे मलिया.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, रदया-अंतर टलिया. नहि० ३

१५१. नही. एणे शाशरीये नही २ लई. पीयुडे पाछु. जायु. मारु. पोह्यु मदरमा. ३. नारसीयाचो.

१५२ वेलावल

नहि आवूं एणे मारगडे रे, माहावा, बीजी वार.
महि तुझ आगल्य मेली जाशुं, जो छुटशुं, प्राण-आधार. नहि० १

महीं हरे नें वात करावे, ऊपरच मागे दाण.
चतुरपणूं तुं मन्य म आणिश, अमे नथी अजाण. नहि० २

धरम ध्यान छंडाव्यां, नरोहरि, भवनां कारज्य शीधां.
नारसियाचो स्वामी भले मळियो, आप-शरिखडा कीधां. नहि० ३

१५२. २. उपरय आणाश ३ नारसीयाचो शरीखडा

१५३ वेलावल

वारी जाउ रे मुखने मरकलडे,
म म ताणिश मागे पालव, परमानद.
मारग जाता माणश देखे, गे[हे]लो थयो गोविंद. मुखने० १
आल्य न कीजे, आलीगारा; वारुं छु, कानड काला.
महिचुं दाण न होए, दमोदर, चंचल, म करिश चाला. मुखने० २
भलपण तारुं जाण्युं, भूदरा, प्रीत्य करो परनारी
नारसियाचा स्वामी, कहु तमनें, कोण कहे ब्रह्मचारी[१] मुखने० ३

१५३ १ जाउ देखे २ महीचु ३. भुदरा नारसीयाचा कहु ब्रह्मचारी

१५४ वेलावल

ओ दीशे घर माहारु, वाला, देखाडु, आवो.
अशुरा शवारा जाता वलता मदिरिये शे नावो[१] ओ दीशे० १
मंदिर आगल्य थइनें जाज्यो, वाशलडी वाज्यो.
घडि अध-घडि त्यहा ऊभा रहिने अम शामु जोज्यो. ओ दीशे० २
माहोमाहे एवडी शी रे ताणो ताण, नहि ठाम.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, पूरी मारा मननी हाम. ओ दीशे० ३

१५४. १ देखाडु वलता मदरिये. २ थईनें, वाशलडी घडी अधघडी उभा रहीनें शामु ३ माहोमाहे नही नारसीयाचो

१५५ वेलावल [परि. २ ३३]

तेवतेवडां वाले मेऱ्यां विशारी.
ज्ये माया भ्रम ऊपरच घरता ते श्यानें उतारी? तेव० १

ते दिन तमें सभारो, मारा वाला, वंदावनमां रमता.
आख्य-पाखनो रस सवनो तो एके थाले जमता. तेव० २

जे तप करतां चुकां, मारा वाला, ते तमनें शुं कहिये?
दीनानाथ दयाल दामोदर, शरण्य तमारी रहिये. तेव० ३

हास-विलास राधा-माधवनो पूरण पुण्ये पामी.
अमारे वाले अमने पार उतारयां; नारसियाचो स्वामी. तेव० ४

१५५. १. मेल्या. वीशारी. उपरथ उतारी २ व्रदावनमां. आख्य-पापनो ३. चुका. ४. पूण्ये. नारसीयानो.

१५६. वेलावल

गोवालियामां गोविंदजी रे करमलडो जमे.
जगन्य करे त्यांहां खिणुंएक नावे, आहीरनां अन्न जमे रे. गोवा० १

एक एकनां भातां छोडी लइ हरि आगन्य दाखे.
नानाविधनां शाक शल्लणां ते लक्ष्मीवर चाखे. गोवा० २

ब्रह्मलोकथी ब्रह्मा पधारया, वाछलडां हरि लीधां.
तेवतेवडां ने ते ज शरीखां ततक्षण तेवां कीधां. गोवा० ३

ब्रह्माजियें मनमांहें विचार्यूं, जाण्यूं, मीन तणूं रूप लीजे.
ज्यमुनां-जल चलु लेशे चतुर्भुज, महाप्रसाद पामीजे. गोवा० ४

अतरज्यामिए ततक्षण जाण्यू, मीन थई रुग्नि आव्या
नारसियाचो स्वामी चतुरशिरोमण्य, कामलियें कर लुवराव्या गोवा० ५

राग वेलावलना कीर्तन ७

१५६ १ त्याहा पिणु अन २ एकना लइ दाये विधिना घालुणा लक्ष्मिवर चाचे ३ ब्रह्मा वाछलडा शरीपा ४ ब्रह्माजीये माह रु ५ रुपि नारसीयाचो

[राग टोडीनां कीर्तन]

१५७ राग टोडी

जाओजी, तम शु नहि बोल्ड मारे घेरच आवो छो चाली रे
ज्याहाथी आव्या तिहा पधारो, जिहा तमारी वाली रे जाओ० १
सकल शणगार धरीनें श्यामा, नयणें काजल दीधू रे
परनारी शू प्रेमे वछ्या, अमने काइक कीधू रे जाओ० २
अमे कुलवधू, आ कुल कोशन्य नहि, तु विभचारी ने तेह तेवी
शरखा शरखी जोड मली रे एवडी वात हवे शी केहेवी ? जाओ० ३
शु कीजे, जो सजन साभले, केशे ए शरखी थई
नारसियाचो स्वामी मले मलियो, देहडी सुनें विशरी गई जाओ० ४

१५७ १ नही ज्याहाथी त्रिहा २ वछ्धा काइक ३ -काशल्य -शरपी ४ शु साभले शरपी नारसीयाचा मलीयो

१५८ राग टोडी

तम शु त्रुटी, वाला, प्रीतडली, क्याहा रम्या रग रातलडी ?
अमारे कुन्य नथि एह ज चाल्य, अधुर डकने काजल गाल्य तम० १

पेहेली शोक्य तणे घेरच शुं रे पधारचा ?
एवडी रीस अम ऊपरच करी.
कोटि प्रकार करो जो, वाला, तोहे न बोलुं एक घडी. तम० २
शुं कहिये ? जो, लोक शांभले, नीरज्जनी जूओ ए पेरच.
एवडुं अमारुं गुह्य करेवा जइ वेठा पेहेलीने घेरच. तम० ३
कोण शुहागण मोलवियाजी ? केही सखिए पाड्या पाश ?
नारसियाचो स्वामी भलें भलियो, कर जोडीनें थाए दास. तम० ४

१५८. १. क्याहां. ३. शाभळे. जइ. ४. सखोए. नारसीयाचो.

१५९. राग टोडी

निरखतडां मुख मोहन केरुं हयिडे हरेखं न माए रे.
वेरण्य नगदी आल चढावे. दिठडा विग न शुहाय रे. निर० १
ज्यहां जाउं त्यां मोहन देखूं नानडियो नंदकुमार रे.
छेलछबीलो छायल ताणे, शेजडीनो शणगार रे. निर० २
लटको लागो त्रीकम केरो, नित्य नित्य रंगचा जाती रे,
शाशूडीना बोल शुणीने कानजीना गुण गाती रे. निर० ३
लज्या मेली मागश मांहें. पियुजिने रंगे राती रे.
नारसियाचा स्वामीनें संगें अधुर-अम्रतरस पाती रे. निर० ४

१५९. १. निरपतडां. हरप. २. जाउ त्या. देपू. छल-. ३. त्रिकम. शाशुडीना. ४. माहें. पियुजीने. नारसीयाचा.

१६०. राग टोडी

आज निगार्ये नाथ मल्यो मुझ, 'पामी सुख अपार रे.
अम शिर वेण्य गूंथ्री गोविंदे, कंठे आरोप्यो हार रे. आज० १

मृगमद केरी टीली कीधी, पीधां अम्रत सार रे,
मनगमतां आलिंगन लीधां जीवन जुगदाधार रे. आज० २
आपणे उह्लासें अनंतें अ[म]शुं, शोह्या सकल शणगार रे.
विने विवेक अनेक चातुरी कीधा प्राण-आधार रे. आज० ३
भुज भीडी मुख बीडी मेहेली वेठा शेज्य मझारच रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, मन मनाव्यो हार रे. आज० ४

१६० १ नीसायें गुयी २ अम्रत. ३. कीधा ४ वठा. नारसीयाचो

१६१. टोडी

शोहोणूं छे के शाचुं, वेहेनी [१] श्रीहरि शेज्ये आव्या रे.
अति आनद उपनो माहारे अंगे, पियुडे प्रेम जणाव्यो रे. शोहोणू० १
तरश्यां वारचँ नें भूल्यां भोजन, बूडता कर शाह्यो रे.
सुरत-समेनी सीमा कहिए, जाणे दधि उभराणो रे. शोहोणूं० २
पोहोतु कोड माहारा मन केरुं, गोविंदे गुण जाण्यो रे.
आवेग, उठाडो, केहेतां वालो लज्या-दोष न आण्यो रे. शोहोणूं० ३
जे सुख स्वर्ग वैकुंठ नहीं रे ते सुख सेज्ये पामी रे.
पूरव पुण्य प्रगटचां माहारे, मळ्यो नारसियाचो स्वामी रे. शोहोणूं० ४

१६१. १ शज्ये. आनदे २ मुख्यां बुडतां.–सेमेनो. कहीए ३ वईकुठ नही नारसीयाचो

१६२ टोडी

नहि जाउ सरोवर पाणीडा, मारगडे नंदलाल मले.
बालपणानी मारी शोहिरुं देखे, हुं रे टळु, पण हरि न टले. नहि० १

अमे अमारे घरच वेठां'तां, कानुटो कांकरडी नाखे रे.
दूरच थकां घोल्यां दुरिजन देखे. एवडी आन्य तारी कोण आंखे? नहि० २

अमे रे आहीरडां सदा शुहागी, कठण कठोर ओन्यो कानुडो.
कंसरायनी आण्य न माने जशोदानो कुंअर लाडिकडो. नहि० ३

शान करे ने देहि परवश थाए,
छाना छाना वाहे वालो छमकलडा.
नारसिंयाचो स्वामी भलें मलियो. वृंदावनमां एकलडा. नहि० ४

१६२ १ नही जाउ शरोवर २. वेठाता. कांकरडी नाखे. दुरथ. दपे. शाखे ३. कानुडो ४. नारसीयाचो वृदावनमा.

१६३

वेणानां वहुअर क्यांहां ग्यातां?
तारी वाटडी जोइ जोइ हुं थाकी.
कोड काम कीधां में तारां,
एवडी वार तुंने शे लागी? वेणा० १

वे रे वेढानी गो डी हु ती,
माथे ते गागर मोटी रे.
नंद तणे रे नानडिए चढावी,
नहि तो थात घणूं खोटी रे. वेणा० २

मांड्यां रे, वहु, वातो शीखी,
कांइ कांइ कुल अंज[वा]ळ्युं रे.

नारसियाचो स्वामी भले मळियो,

भवनुं मेणूं टाऱ्युं रे. वेणा० ३

१६३ १. वेणाना वयाहा ग्याता जोई जोई हु. कीधा मे तारा. २. हुतो. नानडीए नही तो पोटी. ३. माडया. शीपी काई काई. नारसीयाचो. टल्युं.

१६४ राग टोडी

मीठडे वोन्येंशे वाहो छो ? मारे आंगणिए थइने शें न जाओ ?

काम करती कान दिउं छुं, मारी शेरडियें गाता शे न जाओ ? मी० १

मंदिरमांथी में न रहेवाए, ह्राथ्य न आवे मारां घरनां काज.

शामा मले तो शांहीडुं लीजें, लोक तणी लोपीने लाज. मी० २

वलवलती देखी व्रजविनता, दीधुं आलिंगन, पूरी आश.

पूरव पुण्य हतां ते पामी नारसियाचो स्वामी लीलविलास. मी० ३

१६४. १ आगणिए थईने दीधु. शेरडीयें. २. मदिरमाथी मे. शाहीडु. ३. देपी वृज दीधु. नारसीयाचो

१६५ राग टोडी

अमे अमारे घेरच वेठां, कानजी कांकरटी नाखे रे.

जो वारुं तो वेरी शांभले, एवटी आल कोण शांखे रे ? अमे० १

निरतारीने नणदी पूछे' कानुडानुं शुं काज रे ?

अणतेड्यो ऊठीनें आवे, नीलजनें नहि लाज रे. अमे० २

निरखंतां निरखंतां आवे, वालो सनेह उपजावे रे.

नारसियाचा स्वामी शुं मलनां मनमथ मान मुकावे रे. अमे० ३

१६५. १. काकरडी नाषे. शापे २. उठीनें. निलजनें नही ३ निरषता निरखता. नारसीयाचो.

१६६. राग टोडी

आज मारे आंगणे आवीने कानजिए वेण्य वाही रे.
मंदिरमांथी ज्यम हुं आवी तेम छेटले शाली रे. आज० १
मधुरी वात करे मनगमती, हशी हशी रह्या भीडी रे.
जिम वारुं तेम नयण चालवे, वांहोडी मारी मोडी रे. आज० २
पटोली मूके नहि वालो, किम करि मंदिर जाउं रे !
कहो, सखी, कोण आगन्य कहिये ! दुरिजनमां न शमाउं रे. आज० ३
हयिडे हरख न माए, बेनी, ज्यम जादव मुख जूए रे.
नारसियाचा स्वामी संग्य रमतां मानिनिआं-[म]न मोहे रे. आज० ४

राग टोडीनां कीर्तन १०

० १६६ १ आगणे कानजीअे. २. मोहे. ३. पटोल मुके नही. करी. जाउ. सखी कहीये. शमाउ ४. हरख. नारसीयाचो. माननीआ न

[राग आशावरीनां पद]

१६७. राग आशावरी

ओलग्यो नीफल न जाए, ओलग्यो द्वारामतीनो राय रे.
एवो हरि राख्यो रदया मांहे रे. ओलग्यो० १
ओलगे राज विभिक्षण आप्युं, म्लेच्छ मामकी तारी रे,
कुबज्यानुं कष्ट हरचूं धरणीधर, अहल्या श्राप निवारी रे. ओल० २
ओलगे ध्रू अविचल करि थाप्यो, अमरिखनी पत्य राखी रे.
दुरवासानो श्राप निवार्यो, सुरिनर मुनिजन शाखी रे. ओल० ३

दुटमति दुर्योधन कहियें, ज्येणें सती सभामा आणी [रे]
पचालीने पटकुळ आप्या, एवा समरथ शारगपाणी रे ओल० ४
सादिपना सुत आप्या कृष्णे, वेद कहे ते साचु [रे]
मारो ठाकर श्रीदामोदर, जणजणनें नहि जाचु रे. ओल० ५
तरणतारण पूरण पुरपोत्तम दीनानाथ कहावे रे
नारसियाचा स्वामीनें भजता पुनरपि जनम न आवे रे. ओल० ६

१६७ १ निफल माहे २ म्लेछ ३ द्रु करी अमरीख्नी. मुनीजन शायी ४ दुमष्टती येणें छभामा आप्या -पाणि ५ सादिपना ६ पूरशोतम नारसीयाचा

१६८ आशावरी

तमे तमारा बरद सामु जोज्यो, म जोशो करणी अमारी रे.
अजामेल व्याधी तमे तारचो, गज गणिका ते तारी रे. तमे० १
विप्र शदामानें शामा पधारचा, तूठा देव मुरारि रे.
त्रागें त्रागें चीर पूरचा, पत्य राखी पाडव नारी रे. तमे० २
प्रह्लाद कारण्य थंभ थरहरियो, हिरणाखस विदारी रे.
चद्रासनी तमे चिंता कीधी, भवसंकटमय भारी रे तमे० ३
इन्द्रनें उपवादें अहल्या श्रापे शल्या थइ भारी रे,
चरणरेण लागी रघुनंदन, नवज्योवन थइ नारी रे तमे० ४
अनेक भगतनें आगें, वाला, ऊधारचा अधिकारी रे.
कर जोडीनें कहे नारसियो अमनें आश तमारी रे. तमे० ५

१६८. १. गनिका २ तुठा. सुरारी पूरचा ३ हिरणाखस ४. ईंद्रन थई -योवन थई. ५ उधारया नारसीयो.

१६९　　　आशावरी　　　[शृं. ७८]

मन मान्युं शामलिया साथें, वश कीधां नयणनी साने रे.
बोल्युं न गमे बीजा केनुं, कामण कीधां काने रे. मन० १
घाटर[वाल्यें] ज्यम वेधाए म्रग नाद सांभली काने रे,
त्यम वेधाइ रह्युं मन माहारुं गोविंदजीने गाने रे. मन० २
ज्ये ज्ये राग ज्येहनें होए वल्लभ, ते रीझे तेणे ताने रे.
नारसियो रीझे मन भीने हरिरस-अम्रतपाने रे. मन० ३

१६९. १ *बिजा* २ *शाभली रहु* ३ *, वलभ त रीध नारसीयो.*

१७०.　　　आशावरी　　　[शृं. ३७०]

*आज मारो वालोजी मोरे मंदिरच्य पधारया, मुझ उछंगे लीधी रे.
हास विनोद परसपर करतां आप-शरिखडी कीधी रे. आज० १
कांचलडी दश कटका कीधी, उरवर निरमल कीधुं रे.
अंतरपट अलगुं टालीने अधुर-अम्रतरस पीधुं रे. आज० २
जे रस सुरिनर मुनिजन दुल्लभ ते रस विनता माणे रे.
नारसियाचो स्वामी जेनें मले तेनें वेदपुराण वखाणे रे. आज० ३

* आ पहेला चरणथी शृ. ३७० पद छे, पण बाकी बधु ज जुदु छे.
१७० १. *करता. -शरीपडी* २ *काचलडी कीधु पीधू.* ३ *नारसीयाचो. वषाणे.*

१७१.　　　आशावरी　　　[शृ. ८९]

रजनी वीती, भ्रम घेरच आव्या, शुं कीधुं, शामलिया रे ?
नहि बोलुं, नरोहरि, तम साथें. प्री-य जाणी, पातलिया रे. रजनी० १

मोलिडुं छूट्टुं ने लर लटके, हइये हार वग-पेहेरचा रे.
काजलरेख कापोलें दीसे, नयण निद्रालुवां घेहेल्यां रे. रजनी० २
जेने वोल्ये बंध नहीं रे, तेनें शुं अनुसरिये रे?
तस्करनो जइ छेडलो ग्रहिए, जुठडाने शुं कहिए रे? रजनी० ३
झाझा घरनो ज्ये होए प्रोहोणो तेनुं मन थिर नोहे रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, मानिनियां-मन मोहे रे. रजनी० ४

१७१. १ नही. २. मोलिडु छुटु. हइये दिसे. निद्रालुवा. घेहेल्या. ३. नहो. जई ग्रहोए. कहीओ. ४. ये. नारसीयाचो. माननिया-.

१७२ आशावरी [सूं. ५१]

मारे घेरच आवो तो मुनें म वोलावर्‍यो,
मारी शाशुडी सबल धुतारी रे.
जण जण आगन्य जुठडुं वोले,
वात करे वधारी रे. मारे० १
ज्येठ ज्येठाणियें जीव्युं वाल्युं, शाशरिये सुखडु टाल्युं रे.
नणद देवरियो अटपटुं वोले, एवातण आ रोन्युं रे. मारे० २
ठाम्य ठाम्यथी शहु ठणकावे, हुं एकलडी ओगियाली रे.
वहुवारु थकां वोली नव्य शकिए, न शकुं उत्तर वाली रे. मारे० ३
निस्तारी निगोदी पूछेः कानुडानुं शुं काज रे?
अणतेडचो आवे मारो वालो, नीलजनें नहि लाज रे. मारे० ४
लाज तजीनें पीहरच जाशुं, नीलज नारच केवाशुं रे.
नारसियाचो स्वामी आणे आवे, शहि अमरापुर जाशुं रे. मारे० ५

१७२ १. वोलावयो. शाशुडि. शवल. जुठडु. २ ज्यठाणीयें. ३. ठाम्य ठाम्यथी. हु. ४. वानुडानु. नही. ५. निलज केवाशु. नारसीयाचो. शहो.

१७३ आशावरी [शृ. ३३१]

एक वार शामुं जूओ, मारा वाला,
मारा तननो ताप ज जाए रे.
तमारे नयणे अमीय वशे, मारी नव-पालव देहि थाए रे. एक० १
तमारी कृपा विना कहिए सुख नोहे,
बीजा कीजे ते कोटि उपाय रे.
तम सेव्या विना ताप न जाए, अनेक देव आरा[धा]य रे. एक० २
मानवियाचा जनम दुलभ छे, ए अवनी अवतार रे.
किपा करो तमें नारसियानें, गुण तमारा गाय रे. एक० ३

१७३ २ कहिए देही ३. मानवीयाचा नारसीयाने

१७४. आशावरी

एणे शाशरिये नहि जाउं रे, हजी हुं नानकडी. १
सही समाणी पुछवा लागी रे, शाशरिये केम नवि जाओ रे?
ज्येटले वालाजीशुं प्रीत्य बंधाणी, ढोल दमामा वाहु रे. हजी० २
प्रथम समागम पियुजी सधार्ल्ये, शेज्यें रमता लाजूं रे.
नारसियाचा स्वामी-सुं मलिनें मदन तणां दल भाजूं रे. हजी० ३

१७४. १. जाउ ३ पीयुजी- रमता लाजु नारसीयाचा -सु. भाजु.

१७५. आशावरी [शृ ३२]

पानडी पटोलियें आ कोण, बाइ रे,
नवल नारच कोए दीशे रे?
ए आगन्य आपणे ओलपाणां,
मारा वालाजीनें क्यम गमीशे रे? पान० १

चतुरपणुं चान्यानुं जोयो,
कणेर-फाम्य ज्यम लटके रे.
सर्व अंगे शोभंती श्यामा,
शशिवदनी-मुख झलके रे. पान० २

वेण्य वासंग नाग ज्यम डोले,
मुख बोले मधुरी वाणी रे.
लखण बत्रीशमां एक नहि ओछुं,
श्यामा श्याम ड्गें वखाणी रे. पान० ३

शिरच परच शोत्र्य थईनें आवी,
कहो बेनी, किम करशुं रे.
सुंदर-सघाते भ ज तां दे खी,
अधिकपणे केम रेशुं रे! पान० ४

मुख मछराल, मान घणुं धरती,
नासा निरमल मोती रे.
नारसियाचा स्वा मी नें म ल वा
रंजन न य णें जो ती रे. पान० ५

१७५. १ पटोलीयें. बाई. ओलपाणा. ययम. २. -मुप. ३ मुप. लपण. नही वपाणी ५. नीरमल. नारसीयाचा स्वामीनें

१७६ आशावरी [शृं. २३४]

तमारुं मुख मेन्युं निम जाए, तमे छो अमारे मनगमता.
ब्रह्मादिकनें मोह उपजावो, रूप लखण गुण सुंदरता. तमा० १

वेण्य वजाटो नें मधुरें गाओ, चंचल लोचन चपलता.
सरवे शादें धेन बोलावो, मानिनियांचां मन हरता. तमा० २

सुरिनरमुनिनें ध्याने नावो, व्रजविनता-संग्य रंग्य रमता.
नंदकुंअर, तमे कोणें न कलाणा, तारी लीला न जाणे वेद वदता. तमा० ३

अगम वारता सरवे जाणो, जाणो जननी-मन ममता.
नारसियाचा स्वामी, तमनें न जाणे ते नर हींडे भू भमता. तमा० ४

१७६. १. तमारु मेल्यु ब्रह्मादिकनें. लपण. २. माननियाचा ३. सुरीनर मुनीनें. ४. नारसीयाचा स्वामी. हीडे. भु.

१७७.　　　　आशावरी　　　　[शृं. ३७४]

आंल्य अणियाली गहुको आंजे. आंज्यामां घणो वेरो रे.
जां लगे पियुजी प्रेमे न बोलावे, कंठडे आभूपण-हेरो रे. आल्य० १

मोहो-मचकोडे मोहन नव्य रीझे, रदया भीतर जूए रे.
आवल्य केरां फुल अतिसुंदर शीश न घाले कोय रे. आंल्य० २

शाचे मने नें शत वादे एम शामलियो राचे रे.
नारसियाचा स्वामी, ए रस ऊंडो, भरि लेवो घट काचे रे. आंल्य० ३

१७७. १. आल्य. आजे. आज्यामा जा लगे पीयुजी आभुपण-. २ केरा वाय. ३ नारसीयाचा. उडो. भरो.

१७८.　　　　आशावरी

तारां लोयणमां, मारा वाला, केहे-नी, शुं छे शाचुं रे !
दृष्टि पडे धीरज्यपणूं न रहे, हयियुं थाए काचुं रे. तारां० १

कीकीमां कामण छे कांई, चित्त चढावी जोयुं रे.
मानिनी पुरशा-मनरंजन ते मानिनि मन मोह्युं रे. तारां० २

चिंतवनीमां सर्व लियो चोरी, रस उपजावो, रशिया रे.
नारसियाचा स्वामी, तारां लोयण रदया भीतर वशियां रे. तारां० ३

१७८. २ काइ चिंत जोयु मानानी माननी-. ३. चितवनीमा. लीयो रशीया नारसीयाचा. वशीया.

१७९. आशावरी [मृ. २२५]

मरकलडो करी शुं रे हसो छो ? तारा मननी वात में जाणी रे.
मन मान्या पाखें, मारा वाला, प्रीय न होए प्राणे रे. मर० १

आघा आघेरा शे थाओ छो ? जाणो छो, एहने शाहुं रे.
नाना भाव धरो अम देखी वाही केहनी नव जाउं रे. मर० २

सुंदरियाचा शेज ईशा रे 'ना, ना,' मुख केहेवाये रे.
नारसियाचा स्वामी, लियो आलिंगन, रदया टाढुं थाये रे. मर० ३

१७९. १ पाखें. २. शाहु. देखी जाउ ३ सुदरीयाचा. केहेवाय. नारसीयाचा. लीयो टाढु — मुद्रितमा चार कडी छे, अहींनी ३ जी कडीने स्थाने त्यां ३–४ कडी जुदी ज छे.

१८० आशावरी

नमणी वाला, नाह गह्रणा, मीटडिये नव्य थाइश रे.
अंग आल मुज एहवी होए छे, भवन तजी वन जाइश रे. नम० १

मन मीटे मनमाहे ज्यारे, तम शुं ते वात न थाए रे.
जो तुजने हूं भाळी न भाळुं, ते में ज्हुं न जाए रे. नम० २

ब्रह्मादिक इंद्रादिक शरखा ते मोह्या ताहारी माया रे.
अम अबलानुं कोण गजूं रे, दिठडे सुंदर काया रे? नम० ३

सबला गुण ताहारे हूं गेहेली; शहु जाणे: थइ शाची.
नारसियाचो स्वामी शामलियो, ज्यम नचवी त्यम नाची. नम० ४

१८०. १. मींडडीये थाइश. जाइश. २ माहे. मे. ३ ब्रमादिक इंद्रादिक शरथा. माह्या ४. शबला. नारसीयाचो.

१८१. आशावरी [शृं. २२८]

अशुरां शवारां जातां वलतां शें नावो घेरच माहारे रे?
भली हूलीने वातडि कीजे, मननो मेलावो त्यारे रे. अशु० १

बहु जग देखतां बोली नव शकिये, वालोजी प्रेमे बोलावे रे.
मलवानें मन हीशे माहारुं, दुरिजननो भय आवे रे. अशु० २

छांडिये तो छांड्यो नव्य जाए, चितडे अमारे वेठो रे.
नारसियाचा स्वामी, तम शरिखो भूतल नर नव्य दीठो रे. अशु० ३

१८१. १ शवारा जाता. वातडी. २. बहू. देषता शकीये ३. छाडीये. चितडे. नारसीयाचो. भुतल.—मुद्रितमां पहेली लीटी ज सरखी छे; बीजु जुदु. ने कडी ४ छे

१८२ आशावरी [शृं २०१]

अगियालां लोचन वालाजीनां, मांहे रातडली छे रेख रे.
जो मन माने सजनी, तारुं, मम ओले रही पेख्य रे. अणि० १

अवलोकतां उतावलां ज्ये लागे छे रदया तीर रे.
एक आचरज कहुं, शुण्य, सजनी, तन शाजूं, घट पीड्य रे. अणि० २

एक उपाय कहुं, सुण्य, सजनी, ज्यम शमे तारी पीडच रे.
नारसियाचा स्वामीने मलिनें रदया-शरिंगी भीडच रे. अगि० ३

१८२ १. माहे. पेप्य. २. अत्रलोक्ता ३. नारसीयाचा मलीने. -शरीशी.

१८३. आशावरी [शृ. २२४]

मोहो लागो रे, बाइ, मोह लागो, नयणे निरखी श्रीनंदकुमार रे.
शान करीने स्नेह उपजावे चंचल नयण रसाल रे. मोहो० १
एणी परे मारो नाथजी निरखिये, दोहेलो लोक-वेवार रे.
मही-मशें मारगमां जाशुं नंदजी तणे दरबारच रे. मोहो० २
कोण लीलाए मारो नाथजी अवतरिया,
एनो कोणे न लाधो पार रे.
नारसियाचा स्वामी-सग्य रमतां
विशरचा पति परिवार रे. मोहो० ३

१८३. १. वाई. निरखी ३ नारसीयाचा. सग्य.

* १८४ आशावरी

आज मारे आनंद अति घणो, सखी, शाभलो वात रे.
कांइ व्रजनो नाथ अम घेरच प्रोहोणो रे. आज० १
आवो ने मले गाहेलडी, मलि मलि कीजे वात रे.
कांइ भामणां रे लीजे रे वालाजी तणा रे. आज० २
वालो मुखडे वजाडे वेणा वांगली, गाथें शखियोनी टोली रे.
कांइ भाभल भोली वालाजी-शु रंगे रमे रे. आज० ३

सगी, धन्य धन्य जनम अमारडो, हूं तो परब्रह्म पामी रे.
[कांइ] देह-दूखडां रे निवारे संसार तगां रे. आज० ४

हां रे रंगें नें विहाणी रातलडी, में तो जाती नव्य जागी रे.
कांइ नारसियाचो स्वामी शेज्ये पामियां रे. आज० ५

* फक्त पहेलुं चरण पृ ५२३ मा छे, बाकी बधु ज जुदु

१८४ १ घणा. सखी शामलो वाई २ काई भामणा. तणा ३. वाहाली. शव्यीयेनी. काई. ४. परब्रह्म. -दूषडा. ५ हा रे. मे काई नारसीयाचो. पामया.

१८५ राग आशा[वरी]

शामलिया वाला, गान करुं, नयणें नयणें नेह धरुं.
एकवारका घेरच आवो, मारा वाला,
'कानजी' 'कानजी' कोड्य करुं. शाम० १

कोमल अंग, कोमल कर शरखा, लक्ष्मीवरने लीवे फरूं.
नंदकुंअर, तमनें वहु नारंगफल, आवोनी ओरा, भेट धरुं. शाम० २

ज्ये दिन देखूं ते दिन लेखूं, बीजूं जीजूं वाल्य परुं.
नारसियाचा स्वामी, कहुं तुजनें, अंतरज्यामी, अव्य मटं. शाम० ३

१८५. २ शरषा. ३. देषू लेषू. नारसीयाचा. अंतरज्यामी.

१८६. आशावरी [पृ. ११६]

मारो वालोजी वरणागियो हसमसतो रमतो आवे रे.
छोगालो नें छेल छबीलो मोह घगो उपजावे रे. मारो० १

लेहेकंनो वेहेकंतो आवे, कंठे कौस्तुभमण्यनी माल रे.
चंचल नयणे चित्त चाल्वे, करे नयणना चाला रे.　वालो० २
संगम आव्यो अति सुख आपे, कापे दुखनी कोट रे.
नारसिया, शामलियो पामी हींडुं छुं मोडामोड्य रे.　वालो० ३

१८६. १. वरणागीयो २. चित ३ सुप दुपनो नरसीया.

१८७　　　आशावरी

शामलियानी शेय्यें रमतां पूरया मनना कोड रे.
विधाताए वारू शरज्यां, नंदकुंअर-सग जोड रे.　शाम० १
पियुजीनुं मन हुंअ ज जाणुं, वालोजी मारुं मन जाणे रे.
अभ्यंतरमां एक ज जाणे, हरख घणो मन थाए रे.　शाम० २
पियुजीने हुं अलगो न मेल्हं, वालोजी अलगो न थाए रे.
शरखा-शरखुं रूडुं दीशे, शोभा कही न जाए रे.　शाम० ३
आनदे रमतां रजनि विहाणी, ए सुख कह्युं न जाए रे.
नारसियाचा स्वामी-सग्य रमतां वीजूं विशरी जाए रे.　शाम० ४

राग आशावरीनां कीर्तन १९

१८७. १. रमता. पूरया वारु शरज्या. २. पीयुजीनु हुअ. मारु अभ्यतरमा. हरप. ३. पीयुजीने. शरपाशरपु रुडु दिशे ४ रजनी. नारसीयाचा

[राग श्री रागनां पद]

१८८　　　राग श्री राग

शामलडी रे, जो तुं ज्योवन पामी.
शामलियो शेज्य अनुभव्यनी चरणकमल शीश नामी रे. शाम० १

लटके लाहो ले रे लाडचकडो कुचफल ऊपरच राखी.
पियु शुं प्रेम धरे रे, वेनी, अधुर-अम्रतरस चाखी. शाम० २
जाणे छे ज्ये ज्योवन रेहेशे निरंतर, ए सुख नावे वाली.
नारसियाचा स्वामी-सग्य रमतां मेन्य घुंघटडो टाली. शाम० ३

१८८ २. उपरच पं युशु. चाषी ३. नारसीयाचा घुघडो

१८९ श्री राग

मारी सजनी रे, सुंदर वदन देखाडुं.
म करिश मान, मानिनी, मनमा, जो ईछे तुं रूडुं मारी० १
ज्ये मुख वेद विशेषें गाए ते श्रीगोपीनाथ कहावे.
श्रीगोकुलमा गोवालो थइनें वन्य जै धेन्य चरावे. मारी० २
वचन शुणीने वनमा चाली भजवा देव मुरारि.
नारसियाचो स्वामी सुखनो सागर, शीली अबला नारी. मारी० ३

१८९. १ देषाडु करीश मान माननी रुडु. २. श्रीगोकलमा थईने. ३ वनमा मुरारी नारसीयाचा. सुख तो.

१९०. श्री राग

चंद गयंद भोयंग कोरंग सिंघ एके वाश वसता रे.
नारियें जीया पंच बलवंता, दूर गया लाज मरता रे. चद० १
चांदलो गगन गयो, भोयंग पाताल रह्यो, सघ मग गज वन त्राठा रे.
अबला ऊपरच पंच बारवटे पच पंचायण गाठा रे. चद० २
गजगति-चाल्य, वेण्य वाशंग-नाग, जित्या केसरी लंका रे.
तासी जीत्या नयण कुरंगा, जीत्यां वदन मयंका रे. चंद० ३

एटलानां मान हर्यां रे मानिनी, हरिमन हरवा चाली रे.
नारसियाचो स्वामी सबल शारंगधर, बलवंत बांहोडी झाली रे. चंद० ४

१९०. १. झीत्या. २ उपरच ३. (२) झीत्या. ४ मांननी हरीमन. नारसीयाचो शवल. बाहोडी.

१९१   श्री राग

मारी सजनी रे, ओ दीशे वालो आवे.
मोरमुगट, कानें कुंडल झलके, वनमाला उर भावे. मारी० १
कामणगारी वालाजीनी वांगलडी रे मधुर मधुरे स्वर वाजे;
कामिनी केरा काम जणावे, वीठल-हाथ विराजे. मारी० २
हलधर-गोप संघात्ये शामलियो श्रीगोकुलमां परवरियो.
भणे नारसियो : गोपीना ताप शमावी मातार्जानें मलियो. मारी० ३

१९१. २ वालजीनी वासलडी. केरा ३. नारसीयो. शमावि.

१९२.   श्री राग

मारी सजनी रे, झीणी झीणी मौहरच वाजे.
गउ धेन्य गोवाला संगेरे मलियो, वालाजी-हाथ्य विराजे. मारी० १
जो आवे तो आवडो रे निरखि निरखि सुख लीजे.
मलतां मोहन ताप टले रे, जनम कतारथ कीजे. मारी० २
सुंदर शरशो शनेह धरीने मनमथ-पीडच निवारी.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, एणे मुनें पारच उतारी. मारी० ३

१९२. २. निरखि निरखि. ३. सुदर. नीवारी. नारसीयाचो मलीयो.

१९३. श्री राग

सजनी रे, आलिंगन लेइ रह्यो चालो.
जशोदाने कहियें, तोए, बाइ, कालो.
अधुर तणो डंक अति घणूं पीडे,
मा मा करतां मुनें रदयामां भीडे. सजनी० १

पीहरथ थकी शाशरिये रे जातां शांझी-वेळा मारग भूली.
झलकते कुंडल आडो आवीने नंदनें नानडिये झाली. सजनी० २

हांउं, बाइ, हवे तमे छानां रेज्यो, रखे को ए वात जाणे.
चतुर होए ते मनमा विचारे, अनुभविया रस माणे. सजनी० ३

हांउं, बाइ, ए-शुं कोगे नथ्य चाले, आप-बळें छे बलियो.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, ए नर कोणे नथ्य कलियो. सजनी० ४

१९३. १. लेई. रदयामा २. शाशरीये. शाझी– भुली. ३ हाउ वाई. छाना रपे. ४. बाई

१९४. श्री राग [रा. ११०]

सजनी रे, सनेह तो भले अनुभवियें, जो होए वाशजी शुं शाचुं.
सनेह ते ज्ये मनमां विचारे, मुख बोले ते काचुं. सने० १

मुगध टलीनें मुगधा थइयें रे, तो अनुभव रस आवे.
ज्ञान विवेक थकी हरि अलगा, चतुरपणे वश नावे. सने० २

सनेह तणी गत्य कोएक जाणे, वेउने अजाण्यु जाए.
नारसियाचो स्वामी सने[ह] तणे वश, पीतां त्रपत्य न थाए. सने० ३

१९४. १. अनुभवीयें. मुप. २. टल्नि. थईयें ३. बेऊने. पीता.

१९५. श्री राग

मारा वालाजी, कहो किम रहिए ?
जो तुं जोबन जाणे नहिं रे तो दुख केहने कहिये ? माहारा० १
प्रीत्य करीनें परहारो रे, पीड न जाणे पिआरी.
रात्य दिवस आ शाहुं तुझनें तो तुं शानो ब्रह्मचारी ? [माहारा०] २
अम अवलाने जो तुं उवेखे, प्राण न रहे विण पेखे रे.
नारसियाचा स्वामी विना, वाहाला, दैव म लाइश लेखे रे. माहारा० ३

१९५. १ तु नही. दुख २ पीआरी |रीव. तु ३. तु. उवेषे. पेषे. नारसीयाचा लाइश लेषे

१९६ श्री राग

सजनीं रे, आलिंगन लेवा शरखो.
सुंदर मुख जोई मन्य हरखो, नयण भरी भरी निरखो. सजनी० १
सकल विश्व पेखंतां, बाइ रे, मुख ऊपरच मुख कियुला.
तेणीं विषया अमे कांइ नव्य जाण्युं, अधुर-अम्रतरस पियुला. [सजनी०] २
जांहां ज्येहवो त्यांहा तेहवो सनेह धरचो रे.
पियुजी शुं प्रेम न मेल्यो.
नारसियाचो स्वामीजी ते योवन अणतेडयो आवे वेलो. [सजनी०] ३

१९६. १ शरषो. निरषो २. पेषनां बाई २. उपरच कीयुला पीयुला काई ३. जाहा. त्याहा. पीयुजीशु नारसीयाचो स्वामीजो.

१९७. श्री राग

सजनी रे, नाहोने निरखो रे.
मारो वालोजी प्रीतडी करेवा शरखो, आलिंगन लेवा शरखो. [सजनी०] १

सांझी वेलानुं स्वरूप शामजीनुं विविध भोगनुं रे धाम.
केशी रज गुण वारी रे वदन पर, भ्रकुटी कोटिक-काम. सजनी० २

नयण अमीरस रेडंता रे, प्रतिबिंब पांडुर गंडे.
विविध केतकी कुसुम अशाबो ऊपरच मौहरच शिखंडे. मारी० ३

भुजवर तन वन-धात विचित्री, वेण्य मधुरें सुर वाजे.
वनमाला पा ए र ळं ती झाकमझोल वि रा जे. मारी० ४

वेजंती मणमाला रदे-ची, मुगता मंडित ग्रीवा.
करणफूल कानें झलकंतां, तिलक-ची रेख सौभग-सीमा. मारी० ५

काछ कंकणी नेपुर कलरव सर्व-चा ताप समावे.
नाद नितर वाजित्र रस वाध्यो, एणीपरच्य व्रजमां वालो आवे. मारी० ६

जशोमतीनो जस अखिल ब्रह्मांडे वेद सुनेश्वर गाये.
ऊझलतो रस भोए, ढलतो नारसिया-वदन शुहाये. मारी० ७

१९७. १. निरखो २. साझी. स्वरु विवध. भोगनु -काम ३. पाहूर. उपरथ शीयडे. ५ -फुल. तोल्कची रेख. ६. नेपूर. कलोरव. व्रजमा. ७ ब्रमाडें. उझलतो. भोए नारसीया.

१९८.

वेणा वाझती महुहरच, गोकुल आइला.
चालो, सखी, हरिनें जोये, माय,
मोहन मुरल्य वालो व्रजनो राय. वेणा० १
शहु कहे : ए सुंदर, बाइ रे,
मंदिरमांथी रह्युं नवि जाए. वेणा० २

रि दीठडे हरि शरखा थइये.

नारसियाचा स्वामीने जोवा जइये. वेगा० ३

१९८ १. आईला सयो वृजनो २ याई –माथी ३. –शरषा थईये नारसीयाचा. जईये

१९९. श्री राग

तारा नयण शुहागी रे, वीठला, निरखतडां लागे मीठडा. तारां० १
क्रिपाकटाक्ष करीनें जोय, माननियां उपजावे मोह. तारां० २
मस्तक मुगट नें कुंडल कान्य, शामसुंदर छे मिनले वान्य. तारां० ३
नखशिख शोभा कही न जाए, मोहन मुरत्य मुख मुरली वाहे. तारां० ४
चंचल अंग ने रसिक रसाल, नारसियाचो स्वामी श्रीगोपाल तारां० ५

१९९ १ निरषतडा २ माननिया ३ मीनले ४ नषशिष. ५ रसीक नारसीयाचो

२००. श्री राग

मथुरां सघाते तेडच, मारा वालाजी, मथुरां सघाते तेडच.
नहि रे जावा दियुं, राखु रे प्राणे, अम ऊपरच रथ खेडच. मारा० १
कहो के ना कहो, केह तणां रे वसियें श्रीगोकुल मांहे.
कोण करे प्रत्यपाल अमारी ? अमने मेली म जाए. मारा० २
केणी परच आभ्रण सजूं मारी सजनी,
केणी परच शजूं, शणगार ?
काजलरेख केणी परच शारुं ? गयो मारो निरखणहार. मारा० ३

वलवलती देखी व्रजविनता, कह्युं रे न माने कान.
नारसियाचा स्वामी विना, बाइ रे, गोकुल मुजनें रान्य. माला० ४

२००. १. (२) मधूरा. नही. दोयु रापु. प्रणे. उपरव्र येडय २. तणा वसीयें. माहे जास ३ सज्ज शज ४. देषी. व्रज– कह्यु नारसीयाचा. बाई रान्य

२०१. राग श्री राग

मारा वालाजी रे, आवो तो आपण मळियें.
अम तम अंतर टळियें. [मारा०] १
अळगां रिहां मुनें असुख जणाए, सुख थाए शांहि छेतां.
वळिने विशेषे वदन जोअंतां शुं कहिये सुख मळतां ? मारा० २
दुरिजन होए ते दूरच थै रेहेज्यो, सुरिजन मंदिर माहे.
नारसियाचो स्वामी मळे मळियो, अवर मळे ते काए. मारा० ३

२०१. २ अलगा रिहा शाही. शु. ३. दूरिजन. दुरच नारसीयाचो स्वामी. कए

२०२. राग श्री राग

मारा वाला वाला वालाजी, अळगा म रेहेशो एक घडी. मारा० १
ज्येणे, हरि, तम-शुं धरियुं ध्यान, तेनें उपनुं ब्रह्मज्ञान. मारा० २
जेणे, हरि, तम शुं धरियो नेह, विशरि गया तेने सकळ सनेह. मारा० ३
ज्येणे तमारी जाणी वात, विशरि गया तेनें मात ने तात. मारा० ४
तमारे अमारे पूरव सनेह. नारसियाचा स्वामी, तमारी देह. मारा० ५

२०२. २ हरी. ध्यान ब्रह्म– ३. हरी तमशु विशरी ४. ज्यणे. विशरि गया ५ पुरव. नारसियाचा

२०३. श्री राग

मारा वालाजी रे, छाडी न शकियें नेहा.

भवोभव-ना चित बांधां.

उदक माहे ज्यम लवण भळे रे

तेम तम शुं मोरी देहा. [मा०] १

नेह कारण तें विश्व वेधीला,

कारण एक ज एह भूतल को एकनुं

नहि रे, ज्यदिप धरी देह. मा० २

नेह धरतां सनेह धरयो रे,

कृष्ण विना नहि कोय.

नारसियाचो स्वामी नाटक, वाड रे,

विश्व पडीला मोह. मा० ३

२०३. १. छाडी शकीयें. चित बाधा. माहे २ वीश्व. भुतल-कोएकनु ३ नही. नारसियाचो. वाई.

२०४ श्री राग

आ जो रे हरिना सुखना भरफलडा, जाणे अम्रत एकलडा.

रोल फरे रामा-शुं रंगे कानजी की[क]लडा. आ जो० १

दाडमहूला दंतडा रे, अधुर प्रवाली चे रंगे.

म्रगनयणी मनमाहि रही रे, चाली चाली श्रीहरि-चे सगे. आ० २

आवा आवीने आलिंगन मागे कानजी, दोय कर दीजे.

नारसियाचा स्वामी-चे सगे सफल मनोरथ कीजे. आ० ३

२०४ १. हरीना २. माही श्रीहरीचें. ३. नारसीयाचा.

२०५.		श्री राग

मारी सजनी रे, मोरे वश नहि मारो वालो.
मन माने तेनें मंदिर पधारे; तमनें देखाडुं, चालो. मा० १
रागें न रीझे, रूपे न राचे, काला माहे कालो.
चौद लोकमां स्तवन करावे, कोण स्वरूपे झालो? मा० २
हांउं, बाइ, हवे छानां रेहेज्यो, विश्व शहुनें वालो.
नारसियाचा स्वामी शुं मलिनें मंदिरमां मालो. मा० ३

२०५ १. नही दघाडु २. रुपे. माहे लोकमा. ३. हाउ बाई. वीश्व. नारसीयाचा स्वांमीशुं मलीने मलीनें

२०६.		श्री राग

सुंदरीनां नयण शमां नहि नयणां. कविजन कुरंग जमलमें भाणे.
बापडा वनचर रहे वन मांहे, करी कटाक्ष शुं जाणे? सुं० १
खिणुं एक द्रष्ट अवलोकतां रे मुनिजननां मन मोहे.
भूतल एहवो कोए नहीं रे, ज्ये विनता-वश नोहे सुं० २
सकल सुरासुर ज्येणे वश कियुला ते अवला नाम भणीजे.
नारसियाचो स्वामी नयणां-वश ते अवर किसे नज्य रीझे. सुं० ३

१०६. १. शुदरीना नही. -मे माहे २ मुनीजननां भुतल नही. ३. कीयुला. नयणा. कीसे.

२०७.		श्री राग

सखि, आज आनंद अंग्य न माए.
जोनी, मारे घ[रच] आव्या आदवराय. [स०] १

आवो सुंदर देखी ना शकुं रही, शांहिडुं लेवा शामी थई. स० २
मारा तननो ताप टल्यो, नारसियाचो स्वामी प्रेमें मल्यो. स० ३

२०७. १. सवि अंग्य. २. नैं. शाहीडु. ३. नारसीयाचा.

२०८.   श्री राग

सजनी रे, ओ दीशे वेण्य वाजे.
रदया भीतर वेधीलां, वाइ रे. काम लेहेरें अंग जागे. स० १
शुं कीजे ? जो, पेला दुरिजन देखे, नणदी आल चढावे.
शही न शके पेली शरडी शासु, ज्यहांतिहां केडे आवे. स० २
ज्ये केहेशे ते शेहेशुं सरवे; आपण, चालो, जोवा जइये.
नारसियाचा स्वामीने संगे शांही शंपराणी थइये. स० ३

२०८. १. बाई. २. दुरीजन. ज्यहातिहा. ३. जईये. नारसियाचा. थईये.

२०९.   श्री राग

सजनी, आ कोण केहनो गेहेलो ? माणसमांथी टाल्यां.
जण जण हा[थ] चढाव्यां. १
मारी वात एक शांभल्य, वाइ रे, मारग्य माहावो मलियो.
अमनें टलतां आडो आवीनें कुच शाही मुख मलियो. सज० २
गेहेली गोवालनी, एनी राव न कीजे. विश्व रह्यो छे व्यापी.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, भव चा बंधन कापी. सज० ३

२०९. १. माणशमाथी. २. मांत वात. शामल्य बाई. ३. नारसीयाचो.

२१०. श्री राग

मारा वाल्जी, म जोइश वाली वाली.
वालीनें विशेषें आलिंगन लेतां तमने मळुं तो थाउं काली. मा० १
तम-शुं मळे ते माणस नोहे, तो तम-शुं किम मळिये ?
वेद कहे ए निर्गुण, बाइ रे, तेणे तमथी अमे टळिये. मा० २
खिणु एक धीरज्य धरो, मारा वाला, देखे मोरी शहिय शमाणी.
नारसियाचो स्वामी भले मळियो, सुंदरी प्रेमे लपटाणी. मा० ३

२१०. १. जोईश वाली वालि थाउ २. माणश याई. टलीये ३ पीणु देषे. नारसीयाचो. सुदरी लपटाणी.

२११. श्री राग

मारा वालाजी, तुजने तो लाज नहीं रे,
जे अम देखतां शोक्य बोलावी.
तुज पाए हजि ए ज भली रे, ज्ये लाज तजि आधीन आवी. मा० १
ज्ये अम-शुं अभिमान धरे रे, तेनें तमे प्रेमें बोलावी.
नीलज, तुजनें लाज नहीं रे, ज्ये शोक्य-शुं नेण नचावे. मा० १
नीलज, तुझने धूरतपणूं तो धर्म न धीरज माने.
नारसियाचा स्वामी, कहुं तुझने, चरणकमल चित माने. मा० ३

२११ १. नही. देषता. हजी. तजी. ३. नारसियाचो. चित

२१२. श्री राग

नयण नचाविश मां, जो अम देखो.
पूछ पाछ्ल्य पेखे रे सखी. न० १
अमें कुलवधू आ मरम न जाणूं,
नहि नीलज थाउं तम शरखी. न० २

नारसियाचो स्वामी सुंदर-लोचन
निरखि निरखि सुदरी हरखी. न० ३

२१२ १. नचावीश. पेपे रे शपी २. कुलवधु. मही. शरपी. ३ नारसीयाचो सुदर. निरपो निरपो.

२१३ श्री राग

वालाजी शुं प्रीत्य बंधाणी, शाभलो, सहिअर शमाणी.
सुर ब्रह्मादिक पार न पामे, वेद वदे एम वाणी. वाला० १
प्रथम समागम ए-शु मलता पियुजिम परवे कीधी.
कर कुच ग्रही, मुख मधुर डर्शीनें, हृदया भीतर लीधी वाला० २
अंतर टाली एक करीने प्रेमे आलिंगन लीधुं.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, पूरव सुकित पुन्य कीधुं. वाला० ३

२१३ १ शाभलो सहीअर ब्रमादिक पामे २. पीयुजीम. ३ नारसीयाचो पून्य

२१४ श्री राग

मारी सजनी रे, में जाण्यु शुं थाशे.
तेणे मार मन डोल्युं, जीत हार पण बोलं. मा० १
शेष नागनुं सुभटपणुं रे शिथिल थयु आ वार.
मानुं गज रण-समल चड्या रे, वागी घंटवन्य तार. मा० २
लागो वाद विवाद तणो रे, सहचरी बहु मलि निरखे.
जेनें पाशु सुभट तणुं रे, मांहोमांहे फरखे. मा० ३
श्रमजलकणिका मुख पर परचरी, सरव अंगे वपु शोहे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, भाग्य होए ते जोए. मा० ४

२१४ १ मे. मारु २. शिथल मानु. ३. मली निरषे. माहोमाहे. ४. सुष. नारसीयाचो.

२१५. श्री राग [पृ. १२३]

बापैयडा, तुं पियुनें कां रे संभारे?
अबला-चा हदे होए अति कायर, बोलडा-चे बाणे म मारच रे. बा० १
अरध रजनी गइ रुदन करंतां शब्द शुणीनें तारो.
बापैयो नहि, खरो पापैयो, जनम-चो वेरी अमारो. बा० २
पंखीडो रे पर-पीडच न जाणे, सरव योवन थयो गहेलो.
नारसियाचो स्वामी मंदिर पधारे त्याहारे तुं बोल्ये वेहेलो. बा० ३

२१५ १ पीयुने का रे शमारे २. नही परो. ३. पंखीडो नारसीयाचो. तु.

२१६. श्री राग

गोवालिया, एवडो स्यो अहंकार? तुं तो गायनो चारणहार.
तुं तो छाशनो पीवणहार, मुल्य पाधरुं बोल्य पींडार. गो० १
रवि तपे नें उर स्वेद झरे रे, कुंकम काजल गेहेल्यां शरीर.
अणघटतुं किम आपिये रे! वाला, जावुं आ माट जंजीर. गो० २
अमे ऊभां तडको लिये रे, तुं तो टाढी टाढी छाये, आहीर.
महि तणी मटुकी शिर तपे रे, तुने दया नहि, शामशरीर. गो० ३
अमे नें वहुवारुडा न्यवहुं रे, तेना लोक करे विचार.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, दाण लेतो भार उतारच. गो० ४

२१६. १ तु तु. पीडार. २ स्वेद गेहेल्या. आपीये. जावु ३. उभा लीये. तु. नही

[राग मारुनां पद]

२१७ राग मारु

गोरस दाण न होए रे, गोवालिया,
कानजी किमे न कीजिये रे परनारी शुं प्रीय.
दीठो नहीं शुण्यो नहि काने, तुं क्याहानो शील्यो रीत्य रे [१] गो० १
महिनी मट्टुकी शीरच धरी रे, त्रीकम, तपे अपार.
जावा द्यो, गोपीनाथजी, मारो वहि जाए शहियर साथ रे. गो० २
अमे तमारा तातनी रे काइक राखुं छु आण,
नहितो हवणा सउ शमझावियें तो तु फरी न मागे दाण रे. गो० ३
वडी वारनी, वीठला रे, ऊभाडी श्या माटें रे [२]
भावे तो महिडुं पीजिये रे, पछे फरी न आवुं आणी वाटे रे. गो० ४
प्रीत-वचन सुणी प्रेमदाना हशिया गोकलराय
तन मन लई चरणे धरयु, नारसियो बन्य जाए. गो० ५

२१७ १ नहो नही काने क्याहानो २. शहीयर ३ काईक राखु छु लाज नहीतो हवणा तु ४ वडि उभाडी पीजीये ५ नारसीयो

२१८ मारु [शृ ४३३]

महिडा रो दाण नहि दिया रे, कान, तुनें धुतारडो जाण्यो आगे रे.
कान, तारे लोचनिये ले लागे, अधुर-अम्रतरस मागे रे. म० १
हुं तो राजा कंस तणी ठठियारी, कान, मारो पालव मेल्य, मुरारि रे
तारा चरण कमल पर वारी रे. म० २
कान, मारी मट्टुकली शे फोडी [?] कान, मारी कश कचुकीनी शे त्रोडी [?]
बाहोडली शे मोडी रे [?] म० ३

एकलडी वन्य रोईं, मारे आध्य न बीजो कोईं,
नारसियाचा स्वामीने मोहीं रे. म० ४

२१८. १ महोडारो. नही दीया. २. हु. ठठीयारी. बाहोडली ४. नारसीयाचो.

२१९. मारु

आलस मोडे रे ऊभी, आलस मोडे.
उधरंटी आंगणडे ऊभी, चित्त बाधुं चूडे. उ० १
कठिण पयोधर, चोलियां-चा बंध त्राटकडे त्रूटे.
बांहे बाजूबंध, कंठ मेखला, उर-चा हार वछूटे. उ० २
मुदरिआं ज्योवन-मदमाती, कामिनी काम-गेहेली,
भणे नारसियो नहि हमणांनी, प्रीत्य छे पेहेली. उ० ३

२१९ १. उमी. आलश आगणडे उमी. चित वाधु चुडे. २ त्रुटे. बाहे मेपला. वछुटे. ३. सुदरीआ नारसीयो नही हमणानी

२२०. मारु

मीट मांडी रे, छोगाले मीटच मांडी रे.
गुणवंतना गुण श्या श्या कहिये ? क्यम जइये छांडी ? छो० १
मेगल-ची परच मालणो, गोकुल-शोहावण रे.
मीटडिये मन हरिने लीधुं, कीकीमां कामण रे. छो० २
एवडुं नव्य जाणती, सुण्य, रे शहियर मारी रे.
लागी हशे ते जाणशे पीड पियारी रे. छो० ३
सुरिजन लाधो शोधतां, हवे नहि चूकुं रे.

नारसियाचो स्वामी भले मलियो, हवे नहि मूकुं रे.	छो० ४

२२०. १ मादी मादी जईने., छाडो २ मीटडोये. हरीने ३ अेवडु पीयारी ४ चुक नारसीयाचो मूक.

२२१	मारु

मीठी तारी वात, वाला, मीठी तारी वात.
आपण वेउए खेल करंता एम हवू परमात्य.	वा० १
अंगोअंग-चा शणगार शोभता, पहेरी पटोली शार.
जां लगे पियुजी कंठच न लागे, ता शीयो शणगार ?	वा० २
सुंदरी-ज्योवन लेहेरे जाए, न कीजे अभिमान,
मनमथ वेरी परच परच पींडे, हूं मदमाती नारच.	वा० ३
प्रेमे प्रेमे प्रीत्य बंधाणी, में नत्य जाणूं कांई.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, प्रेमे लीधां गाई.	वा० ४

२२१. १ षेल २ जा पीयुजी- ता ३. सुदरी-हुइ ४. मे. जाणूं काई नारसीयाचो लीधा शाई ,

२२२.	मारु

शेज्यें रमता खटके कला, राधा माधव तेवतेवडां.	१
बांहोडीनो लटको मोडामोडय, राधा माधव शरखी जोड. शे० २
तमारे मस्तक्य शोहे पाघडी, मारे. राखडी हिरले जडी. शे० ३
तमारे पेहेरण झीणी झूली, माहारे पेहेरण्य चीर अमूली. शे० ४
तमारे कमरबंध, माहारे मेखला, ते प्रकाश्य चंद्र कोटिक कला. शे० ५
तमारे पेरण्य पर्नई शार, माहारे झांझरनो झमकार. शे० ६
तमे आलापो मारुणी राग, हूं ते मांडुं ठमकती पाग. शे० ७

नारसियाचा स्वामी, प्री-य ज ज्यडी, अलगा म रेशो अघ घडी. शे० ८

२२२. १. पटके. २. माहामोहय शरपो. ३. रायडी ५ मेपला. ६ क्षाझरनो. ७. हू रे माडु. ८. नारसीयाचा ज्यडि.

२२३. मारु :

शेई परच जीतगोजी, तेनु रचजो भलो उपाय.
एनां मेणा मैं न समाय. शे० १
मारूं पग पाके. मारा वाला, रखे फोकट थाए रे.
अज आगन्ययो माहामद-गजगति नारी सकेते जाय. शे० २
गुणवत न्यूथ मन्या विनताना, प्रभल प्रसक्तमां गाय रे.
रति-रणभोम्य तणां ज्ये पंखी जय भावी शब्द शुणावे. शे० ३
सामलियो सकुमार शकुणो नयण नचावी हशियो रे.
शाहेलडी एवी हावज्यो, तारे सुरत-सकेते वशियो. शे० ४
नित्य नित्य ए नर वेतो आवे, महा विचिक्षण रशियो रे, -
भणे नारसियो · रंनीलो क्षत्रिवट मलो भात्य विलशियो रे. शे० ५

२२३ १. एना मेणा मे पमाय ३ विनताना. जअ ४. हावयो. ५. नीत्य नील. नारसीयो पतीलो. कडीने अते बधो 'सो०' लख्यु छे

२२४. मारु

रंच म खीजवे रे, रतिमां रीझने रे.
वाला, नानकडी छे नारच, कुचफल छे सकुमार. रंच० १
मोना केरी वेलडी, तेनी शाखा फूली फान्य.
करपळव परवाली जेवा, पगतल अलते वान्य. रंच० २
वेणी गूंथी फूलडे रे, चोक ज घाल्यो शीश.

भूपण भारे डग भरे, कोट डगला भरे दशवीश रच० ३
केसर-रंगे चोली रंगी, म म जाणिश पट पीत.
उतारीस थई आकुलो, सुंदरी थाशे भयभीत. रच० ४
ऊचेली लइ आविया, पधराव्या मारी सेज.
आतुर जाणी उपगार कीधो, जाणशे तमारू हेज रच० ५
हींडोले लइ हेलवे रे, पीजे वदन रसाल
आलिंगन लेता लाजवे रे, सखि, शेवतरानी माल रच० ६
त्यारे चोली सखी शामलनें म करिश अवर विचार
निहाल्यनी, नाथ सरव गुण पूरण, पियुमा नथी कुसुमचो भार. रच० ७
मन्या शाहेल्डी-जूथडा रे, गाए गीत रसाल
त्रिपत पामे प्रात हवू, नारसियो जाए बलिहारच. रच० ८

राग मारुना कीर्तन ८

२२४ १. पीजवे रतीमा २ शाषाफुली ३ गुथी फुलडे भुपण-. ४ सुंदरी ५ उचेली लई ६ हींडोले लई सपि शेवतरानी ७ करीश पीयुमा ८ पामे नारसीयो

[राग कालेरानां पद]

२२५. राग कालेरो-देशाख

मारे घेरच आवे रे धन्य धन्य गोकुलवासी,
सुख जोवानें कारण्य ऊभा, आव्या रे सहस्र अठ्यासी मारे० १
वण दीने वालो वता करे रे पूरण ब्रह्म अविनाशी
माखण काज्य मैयारी आगल्य उभलो वदन विकाशी मारे० २

ब्रह्मादिक ज्येहनो पार न पामे, शंकर करे खवासी.
नारसियाचो स्वामी भगत तणे वश मुगत शरीखी दासी. नार० ३

२२५. –दशाप १ उभा. २ ब्रह्म मागण–. ३. ब्रह्मादिक पामे. पवाशी नारसीयाचो शरीषी

१२६. राग कालेरो

गोपी गाये श्रीज्यमुनाजीमां झीले राधावर रूडो.
छोगाळी छांटे रे शनेहभरी मस्तक वाली अंबोडो. गो० १
कन[क]वेन्यडी व्रजनी नारी, शाम तमालवचें शोभ्योरे.
शशिवदनीनुं अंग अति सुंदर रसियो निरखतां शोभ्यो. गो० २
जलक्रीडा रंगें भर रमिआ, अंबर अंगे धरियां सार.
सुर-विनता वंछे व्रज वशवुं, नारसियो जाए बलिहार. गो० ३

२२६ १. रुडो. छांटे २. शशीवदनीनु सुदर निरषता ३. रमआ धरिया नारसीयो

२२७ राग कालेरो

छेहेलणे छोगाळी चालं, माथे महिनो भार रे.
कशकशती कांचलडी पेहेरी, कोटें नवसर हार रे. छेहे० १
मलवा हींडे मणिधर माहावो, ज्योवन-मांनी नार रे.
जमुना-तटे रमतो डीठो शामळिओ आधार रे. छेहे० २
दाण मशे दामोदर आवी लटके बांहोडी झाली रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, अबला ऊंटल चाली रे. छेहे० ३

२२७. २ छागाली. हींडे ३ वाहोडी नारसीयाचो. उछल.

२२८. राग कालेरो [शृं ३१५]

आज देव दीठडो में जमुनाजीनें तीरच रे.
भरतां भरतां घडुलडानें आव्युं माहें नीर रे. आज० १
कालिंद्रीनें कांठडे रे वाले ओलवियो अधरास रे.
आणिआली हेलडी, मुनें लागो वालाजीनो पाश रे. आज० २
माय बाप म वढशो, मुसी म वढशो, मारा वीर रे.
आ योवन परवश थियुं रे, माहारुं विकल शरी[र] रे. आज० ३
मायेथी पीतांबर खशियुं, खशियो न[व]रग चीर रे.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, ज्येणे हरयूं हैयानुं हीर रे. आज० ४

२२८. १. मे. माहें. २. कालिंद्रीने काठडे. ओलवयो. आणीआली. ३. थीयु. मारु ४. पीतावर पशियु षशियो. नारसीयाचो–मुद्रितमां बीजी कडी नथी.

२२९ कालेरो

मारा वालाजीने काग्ये राखिश उर परच थापण्य रे.
भेट करूं रे, वाश्राजी, तुजने, प्रेमे मत्रसु आपणे रे. मा० १
काज ताहारे, कुंअर कानजी, में कीनला सकल शणगार रे.
राखी वशत वगगे, मारा वाश्रा, भरज्योवन भरतार रे. मा० २
वांछतडां वालो वर पामी, भोग भणे चंद्रावली नारच.
नारसियाचा स्वामी, कहुं तमने,
निय निय माहारे मंदि[र] पधारच. मा० ३

२२९. १. रापीश. २. कुअर. रापी. ३. वाछतडा पामी नरसीयाचा. कहु निय नीत्य.

२३०. राग कालेरो

लटकतडी आहींग्डी आवे फाळी धावलियाली रे
शहिअर आवे गृह्य परता लटके दीधी ताली रे लट० १
जळ-ज्यमुना भरवानें चाली, पेहेरचो कमख्यो काळो रे
हयिया ऊपरच हार हन्रावे, करे नयणनो चालो रे. लट० २
मधुरी वेण्य बजाडे वालो, कानें झनके झान्य रे
घटुलडा मेहन्या ता अमथा, मोहन मनमा भावे रे लट० ३
शामी आवीनें आलिंगन मागे, ग्दया भीतर लीधी रे
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, आप शरिखडी कीधी रे लट० ४

२३० १ शहीअर गृह्य उपरच ३ मधुरि ४ नारसीयाचो शरीखडी

२३१. कालेरो [शृ १४८]

तेवतेरडी टोले मळीनें चाली जमुना-तीर रे
मारगडा माहे आवी मलियो सुदर शामशरीर रे तेव० १
अलवे शु आवेरो आवी लटके वाहोडी झाली रे
मरकळडे मुख चुबन देता कठ वाहोडली वाली रे तेव० २
लाखीणीनो कमखो फाड्यो, फोडी महिनी गोली रे
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, वारोवारच जाउ घोली रे तेव० ३

२३१ माहे ३ लाषीणीनो कमषो नारसीयाचो जाउ.

२३२ कालेरो

आरुन्डो मा मारो रे, कानजी, मारगडो अम देखी रे
साशु आगन्य जूठडु बोले वेरण नणदी अदेखी रे आ० १

फूलडो आवे एकांत्ये, रंग-भर शांहिड्ड लेसुं रे.
अधुर-अम्रतरसपान करेशुं, गमनी गोठडी करशुं रे. आ० २

मळ्या कारण थइ अति गेहेली, न जाणूं शूं कीधूं रे.
नारसियाचा स्वामी शान करतां चित्त हरीनें लीधु रे. आ० ३

२३२. १. आपडली. कानजी नणदी दीठी रे. २ शाहीड्ड लेसु. पान ३. थई. श्रु कीधू नारसीयाचो शान. चित लीधु.

२३३ कालेरो

नागळडानुं कोड रे, नरोहरच नागळडो घडावे रे.
अकोटडो अमे नहि पेहेरुं. प्रभु परजियो लावे रे. ना० १

शामळियो शणगार करीने आहेरने घेरच आवे रे.
पेहरण पोतांबर ने पामडी ओढण नालु लावे रे. ना० २

रतनजडित्र कणदियो सोहे, ऊपरच तेली चूडी रे.
नारसियाचा स्वामी सग्य रमतां अमे दीशुं छूं रूडी. ना० ३

२३३. अमे नही परजीयो. २. पामडी. ३ कणदीयो. उपरच. चुडी. नारसीयाचा. दीशु रुडी

२३४. कालेरो

मीठडे जाउं रे, माहावा, ताहारे; मारगडो, हरि, मेल रे.
आणे आणे पगलडे रे आविश वलती हेन्य रे. मी० १

जो तुं जाणिश, जादवा रे, गोरणी मूसी वाय रे.
शम करुं मारा शीशा शाननी, नगदलडी-घर नाह रे. मी० २

टाढा वडनी छावडिए तुं ऊभो रेहेज्ये, राज रे.
येगे आविश, चोठव्या, वाली हुं शामोवडने काज्य रे.　　मी० ३

गोरणी फेरा वोल्लडिया गोविंदने मन्य भाव्या रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, घतुल्लडा उतराव्या रे.　　मी० ४

२३४. १ जाउ. २. कर. घरनाहनाह. ३ छावडीए तु उभो. ₹. ३. 'गोरणी'ने बदले हांसियामां 'गोवालणी' बोलडीया गोविंदने नारसीयाचो

२३५.　　कालेरो

नागलडाने लरके लहेके मोह्यो देव दयालो रे.
दाण-मसें दामोदर वलगे नंद तणो गोवालो रे.　　ना० १

शेर्ये शामलो तेडी त्रिभोवन जोइ जोइने मन मोहे रे.
मोहन मारे छे [कांकरडी], गोरणी निरखी जूए रे.　　ना० २

ज्योगी ज्यती तपिया संन्यासी जेनें लागी ताली रे.
ब्रह्मा आगन्य देव वीनवे : नहि ए गोरसवाली रे.　　ना० ३

इंद्रादिक सनकादिक नारद शंक[र] पार न पामे रे.
भणे नारसियो : लेहेणं लामे कानजी नेतरुं ताणे रे.　　ना० ४

२३५. १. गोवाल. त्रिभावन. जोई जोईने. नीरखी जुए ३. तपीया. ब्रह्मा विनवे नही. ४. ईंद्रादिक. नारसीयो लेहेणु

२३६.　　कालेरो　　[परि. २. ४१]

म करिश आल्य, देशुं गाल्य, भणे रे, कानुडा, तारी किहांनी चाल्य !
वण-प्रीछा विना-बोल वाल-वण धाइ धाइ चुंबन दिओ गाल्य.　　म० १

दहिडां महिडां वेची अम जीवूं, दीठडे मारग्य अमे आवूं ने जाउं.
उगे सूर ने थाए असूर, अमे फूलडां ज्यम करमाउं रे. म० २

वेठां अमे कर कंसनें आपूं, देहडी केनें नव्य दाखुं रे.
[रा]ज्य नीगमतां वार न लागे, लाज तमारी राखूं रे. म० ३

आ जोनी, अधुर डंक लागो, नंदजीनो कुंअर अन्याई रे.
हुं गुजर मोजनी धीयडी, मारूं नाम घनाई रे. म० ४

इतर जात्य आहीर अमारी, आंहीं खाईनें धावज्ञ छुटु हाथ रे,
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, हवे नहि मेलुं तमारो शाथ. म० ५

२३६. १. करीश. वीना-. धाई धाई. धीओ. २ ददीडा. शुर. फुलडा. करमाउ. ३. बैठा. दापु. रापू. ४. कुअर. हु. ५ आही पाईनें. नारसीयाचो नही. –मुद्रितमा १ली कडी सरखा जेवी छे; बाकी मुद्रितनी बीजी-त्रीजी ने बदले अहीं २ थी ५ जुदी ज छे.

२३७. कालेरो [मृ. ३१९]

[स]रोवर पाणीडां हूं गइ, वालो भरे न भरवा दे रे, माय.
[स्त]न पयोधर ग्रही रह्यो, अधुर-अमृतरस लेवा रे, माय. सरो० १

[स]ाशु केहे छे शुण्य, वहुवारु; तारे अधुर डंक का लागो रे?
[म]स्तक कुंभ चडावतां मारी शहियरनो नख वागो रे. सरो० २

[ज]ातां गइ रे उतावली, वाले वलतो न वरवा दीधी रे.
[न]ारसियाचो स्वामी भले मलियो, आप शरिखडी कीधी रे. स० ३

२३७. १. शरोवर. २. का. शहीयरनो नष ३. गई. नारसीयाचो. शरीषडी.

२३८ कालेरो

चितडामां चटकावी रे, मा मुसी, मणधर कानड काले रे.
ल्हेरे लेहेरे जाए चीतवो, कोयक पाछो वालो रे. चि० १
ओशडियां म पाओ रे, मुसी, वडदडा म दाखो रे.
गोकुलमां छे गोविंदो गारडी, तेने चरणे राखो रे. चि० २
वडदडे रे विचारीने जोयुं : टंक ते दाशे भारी रे.
नारसियाचो स्वामी भलें मळियो, निरविष कीधी नागी रे. चि० ३

२३८ २. वईदडा दापो रापो ३. वईदडे. नारसीयाचो.

*२३९.

आवोनी अम [त]णे...., गोविंद, गोठ करेवा रे,
सगुण रे शामलिया, तारूं [दु]लभ दरशण देवा रे. आ० १
माछी पोली घिये झबोली, सूखड लीधी गारी रे.
जीवना जीवन मन जोईने तन मन ऊपरच वारी रे. आ० २
सरसी साकर मांहे मेलुं, रुदिया उपरच राखुं रे.
बोल दियुं बापानो, वीटला, वली व[य]णे भाखूं रे. आ० ३
बोलडिया बहु-नामी केरा रदया भीतर वशिया रे.
पालवडे पीतांबरना प्रभु वेद-वदीता वशिया रे. आ० ४

* आ पद कोई 'पीतांबर'नी छापनु वच्चे आवी गयु छे.

२३९. १. 'अम—णे' पछीनो बे वर्णनो शब्द छेकी एने माटे हांसियामा 'माहारी बेनी' लख्यु छे, जे बधबेसतुं नथी. २. घीये. झुपड लीदी. उपरच. ३. माहे. 'रूदीया ऊपर' आ शब्दो हांसियामां छे; छेकेला वर्णो 'शायरो देई हु' छे. दीयु. वलि व—णे भाषु

२४० कालेरो

केसरभीना कानजी, कशुंवे भीनी नारय रे,
लोचन-भीनां भाव-शुं ऊभां कुंजदुआर रे. केसर० १

वेमां सुंदर केहनें कहिये ? विनता कहें : व्रजनाथ रे.
निरखूं परखूं परपोतमनें, माणकडां वे हाथ्य रे. केसर० २

मध्यनी रातडिये मळ्यो, कर्‍यो झाकमझोल रे.
नारसियाचा स्वामीनें केहेज्यो : रामत्यडी रंगरोल रे. केसर० ३

२४० १. कशुंवे उभा २ निरखू परखू. माणकडा वे. ३. रातडीयें मलयो. नारसीयाचा—आ पहेला जुओ अंक १३; सारा एवा पाठांतर छे.

२४१. कालेरो [शृ ३४६]

कानजीने कोडामणे १भामणे महिडां वलोवाडी जाणे रे.
गोली रवाई गणियल गोविंदे निर्ते नेतरूं ताणे रे. का० १

जामण कोए जुगतुं जाणे, माखण अति घणूं आणे रे.
ज्ये रस ब्रह्मादिकनें दुलभ ते अलवे आहिरडां माणे रे. का० २

अनेक विस्तार वधारे विठलो, मेहेले हि मही अमाणे रे. (?)
भणे नारसियो : लेहेणूं लाभे कानजी नेतरूं ताणे रे. का० ३

राग कालेरोनां कीर्तन १७

२४१ १ महीडा वलोलेवाडी गणीयल गोविंदे २. जूगतु माषण. ब्रह्मादिकनें दुलभ. आहीरडा. ३. वीस्तार. वीठलो नारसीयो.

[राग मलारनां पद]

२४२ राग मलार [परि. २. ३४,]

रिंशाव्य रहिये नहि वालाजी शुं, गेहेली.
श्यानें काज्यें, सुंदरी, प्रीत्य कीधी पेहेली ? रि० १

मान्य मान्य रे, मानिनी, जां लगे होए रजनी,
आ अवसर आवे नहीं, सुख नोहे, मारी सजनी. रि० २

मनमथ वेध्यो रे मानी केवडानें कांटे.
एणी परे किम चालशे वालाजी-शुं आंटे ? रि० ३

जदिप परणा विना सरे, मन वारी राखे.
एक घडी चाले नहीं मनमान्या पाखें. रि० ४

घणा दिवसनां रूपणां श्रावणमां भाजे.
मोहणी-चां मन किम रहे, ज्हार घन गाजे ? रि० ५

मेघ अंधारीनें आवियो, मांहे वीज झबूके.
तारे काज्ये, सुंदरी, वन मोर टहूके. रि० ६

शेज्य शमारी फूलडे, मन आनंद पामी.
तुंने मनावे, सुंदरी, नारसियाचो स्वामी. रि० ७

२४२. १ रीशाव्य रहीये नही. २ अवशर नही शजनी ३. आटे. ४ वारे रापे. नही. पापें. ५ दीवसना रुपणा मोहणीचा ६. आवीयो माहे. झबुके टहुके ७. फुलडे सुदरी. नारसीयाचो मुद्रितमा चार ज कडी छे, पुष्कळ पाठांतर छे

२४३. मलार

वारो रे ओल्यां पंखीनें, मारी खाखत्य पडियो.
नेहेनें बाणे मारवा विधाताए घडियो. वारो० १

पंखीनो शब्द शोहामणो, आधी रात्य पुकारे.
चापैयो नहि, पापैयो, मरतीनें मारे. वारो० २

एक अंधारी रात्यडी, बीजी वीजे झबूके.
कंथ-विछोही कामिनी तेनुं हयडुं अबूके. वारो० ३

बापइडो 'पियु, पियु' करे, रजनी क्यम जाए?
नारसियाचा स्वामी विना रखे वेणु वाये! वारो० ४

२४३. १. पंखीनें. खाखत्य २. पंखीनो शोहामणो. नही पापीयो.
३. झबुके अबुके. ४. बापईडो पीयु पीयु. नारसीयाचा. रखे वेणु.

२४४. मलार

मेहलो गाजे नें माधव नाचे, रमझम वाजे घूघरडी.
ताल पखाज वजाडे सुंदरी, वालोजी वजाडे वेण वांसलडी. मे० १

दादुर मोर करे कुतोहल, मधुरे बोले कोयलडी.
पेहेरण चरणा चीर पीतांबर ओढण्य आळी लोवरडी. मे० २

धन्य वृंदावन, धन्य वंशीवट, धन्य धन्य ए अवतार लियो.
नारसियाचो स्वामी धन्य धन्य, धन्य धन्य मेघमलार कियो. मे० ३

२४४. १. घुघरडी. पखाज सुदरी. वाशलडी. ३. लीयो नारसी-
याचो. कीयो.

२४५.　　मलार

भीनी भीनी रे, कान, मुंने जावा दे, तारे रंग भीनी, कान, जावा दे.
महिडा-रो दाण होए ते मागी मागी ले रे, कान, जावा दे. १
उर भीजे कंचवो नें कंठ भीजे हार.
शाशुडी जूठी रे, मारी नणदी रिशाल. का० २
....झिरमर वरशे मेह.
भींजे मारी चूनडी नें वाध्यो सनेह. का० ३
भीनी भीनी गोवालियाना, अंतर किशो.
नारसियाचो स्वामी रदये वशो रे. का० ४

२४५. १ कांन महीडारो. २. रीशाल. ३. आरंभमा काइंक खुटे छे. झीरमर. चुनडी ४. नारसीयाचो.

२४६.　　मलार

मेहल्य रे, माहावा, मंदिर जाउं, वीज झबुके ने व्याकुल थाउं. मे० १
मेहलो वरशे नें बीज झबूके, भीजे पटोली, नाथ न मूके. मे० २
मेल्य रे, मावा, मंदिर जाती, नारसियाचा स्वामी-रंग राती. मे० ३

२४६. १. थाउ. २. मुके. नारसीयाचा

२४७.　　मलार

अणमानेती गोले सहस्र, मानेती वांगली रे. १
वश कीधा वैकुंठनाथ, धुतारी, जा परी रे. २
आपण कीजे कांइक कामण, वीनाणीनें नाखिये रे. ३
वाइ, शु करशे मारो नाथ ? फगावी नाखिये रे. ४

तमे गेलां करो विचार, गेलुं शुं आदरो रे ? ५
बाइ, ए किम नाखी जाए ? एने पियु पाधरो रे. ६
ए-शुं कीजे मित्राचार, सनेवट राखिये रे. ७
मळे नारसियाचो स्वाम्य, हरिरस चाखिये रे. ८

२४७. महलार. १. वाशली. ३ काईक नापीये ४. वाई. ६. वाई नापो. पीयु. ७. मित्राचार राखीये. ८. नारसैयाचो चापीयें

२४८. मलार

सखी, शांभलो मारी वात, वाली हुं किम थई रे.
में तो दीधां देहीने दुख, तमे दीधां नहीं रे. १
अमें तज्यां ससारनां सुख के वनमां जई रही रे.
चोमाशाना च्यारे मास वखा शिर परच शही रे. २
काती मासनां हीम, तेणे अंग ठारियुं रे.
उनाळानी अगन्य तेणे देहि परजळी रे. ३
में कपाव्युं मारुं अंग शंघाडे जै चढी रे.
छोलाव्यो मारो वंक तेणे थइ पाधरी रे. ४
मांहे शार पडाव्या शात, वालानें वाली घणूं रे.
अमनें दोश म देज्यो, माय, भोगवे भाग्य आपणूं रे. ५
एवां तप शीखो नर नें नारच, वांशलडी एम कहे रे.
नारसियो केहे : नावे समतोल्य प्रेम हरि-नामनें रे. ६

२४८. १. सपी शामलो मे. दुख. दीधा नही. २. तज्या मपा- ३. ठारियु. ४. मे ५ माहे देयो आपणू. शीपो वाशलडी. नारसीयो. शम–. हरी–.

२४९. मलार

हुं तो गइ रे सरोवर-पाल्य वालाजी-शुं झील्वा रे. १
वालोजी देशे गान्य, अबोला नहि रहे रे. २
अमे वालानें देशुं गान्य, वालोजी लाजशे रे. ३
रूडुं ज्यमुनाजीनुं नीर गागर भरि आवतां रे. ४
मारे सही समाणीनो शाथ, वांहोडी लोडावतां रे. ५
सुंदर नारसियाचो स्वाम्य प्रेमें बोलावता रे. ६

राग मलारनां कीर्तन ७

२४९ १ हु. गई शरोवर. २. नही. ३. लजशे. ४ रुडु. आवता. ६. सुदर नारसीयाचो स्वाम्य

[राग सामेरीनां पद]

२५०. सामेरी

शामलडी संग्राम करे रे शामलिया संघाते रे,
श्रीहरि नाना, नेह नानकडी, वेहु वलगां बाथोबाथे रे. सा० १
संगम-चे कारण्य थै शामी जइ वीठलने वलगे रे.
हावभाव मन मांहे धरती वीज तणी परच शलके रे. सा० २
अबला अनुभव अनुदिन जाणे, माया विश्व वखाणे रे.
नारसियाचो स्वामी मानिनियां रे महा मयण-रस माणे रे. सा० ३

२५०. शामेरी १. वलगा २. जई. ३. अनुंदिन. वपाणे. नारसीयाचो. माननीयाया.

२५१. सामेरी [रा ३८]

त्रोटडियाली देखी वाले आगकडो कीधो रे.
मरकलडे मुख मांहे घरीनें अधुर-अम्रतरस पीधो रे. त्रो० १
एक वार एणे मारग्य जातां कर ग्रही पालव ताणो रे.
शही शमाणी शाष्य शामटी त्यांहां अमें नीलजनें नहि जाण्यो रे. त्रो० २
दूवाणी दीठी दामोदर, हशि हयि[या]मां लीधी रे.
नारसियाचा स्वामी-संग्य रमतां आप शरिखडी कीधी रे. त्रो० ३

२५१. देषी. माहे. २. त्याहा नही. ३. हयिमा. नारसीयाचा. शरीषडी

२५२. सामेरी [गु. १२८]

एक वार आस्या दिन मांहे तम-शुं रे वात न थाए रे.
कामकाज कांइ चित्ते नावे, मंदिरमां न रेवाये रे. एक० १
एक वार एकांत्य मलीनें आलिंगन लियो गाढुं रे.
अंतर टाली एक करीनें रदया थाए टाढुं रे. एक० २
सुंदरियां-चा शेज ईंगा रे, पियु विना न शोहाय रे.
नारसियाचा स्वामी, सनेह म जाज्यो, लागुं तमारे पाय रे. एक० ३

२५२ १. आषा. माहे. काइ चिते. २. लीयो. टाढु. ३. सुदरियाचा. नारसीयाचा. आयो–मुद्रितमां १ कडी १ली पछी वधारे छे

२५३. सामेरी

उर वर फूमकडो फरे रे, मारो नाहोलियो हरखे रे.
कुचफळ मारां सुंदर दीशे, नयणां भरि भरि निरखे रे. उर० १

नयणां नयणां नेह जणावे, अंगें आलश आवे रे.
नारसियाचा स्वामी उर उपरच मरमे माट मेलावे रे.　　ए० ३

२५७. शामेरी. १. झझरनो २ शीर उपरष नापती. ३ नयणा नयणा नारसीयाचा. उपरच

२५८.　　सामेरी

खरी सीटली गोरीनें काने प्रवलडे अति शोहे रे.
चित्रालंकी चमकती चाले, चतुर तणा चित मोहे रे.　　ख० १
नयणकटाक्षबाण-गुण पूरी मुनिजननां मन डोले रे.
सकल शणगार स्यामाना जोतां त्रिभोवन नावे तोले रे.　　ख० २
शोल कला शशि-किरणें शोहे, शामलिया-मन भावे रे.
नारसियाचा स्वामीने सगे सुगध तेलिये आवे रे.　　ख० ३

२५८ शामेरी. १. परी पीटली काने अती चित २. जोता त्रिभोवन. ३ नारसीयाचा.

२५९　　सामेरी

मुनें मारा पियुनुं बोल्युं गमे रे, वालो मुझथी ते अलगो न रमे रे. मु० १
कोएक जप तप आदरो रे, कोए करो व्रतदान.
मारे जप तप एह ज तीरथ नंदकुंअरवर कान. मु० २
भरज्योवनमां नाहोलियो रे, नारीरूप समे. (?)
सरखा-शरखुं आ ससारमा पामी पूरण पुण्ये रे. मु० ३
जेनां मन ज्ये शार्थे बंधाणा ते विना घडी न रेवाय.
नारसियाचा स्वामी विना, बाइ रे, हा रे मुने खिणुं वरशा शो थाए. मु० ४

२५९ शामेरी. १. पीयुनुं. ३ सरषाशरपु पामी ४ जेना बंधाणा नारसीयाचा बाई हा पिणु

२६०. सामेरी

वाजे वाजे वांगलडी, वंदावन वाजे वांगलडी,
वनमाळीने वदन्य बिराजे, अधुरसुधारस छाजे,
मानिनियां मन गाजे. वा० १
शबद् गांभलिनें थइ घायली, ग्रह आंगण्य न शुहाय.
घाटलवाल तणी परच कीधी, लीधी मुरली मांहे. वा० २
अधरातें एकलडी अबळा सबला-शुं मन वाधूं.
शामलियानें सेजें मलवा सकल मनोरथ साधूं. वा० ३
अति आनंदी मनमथ-फंदी मूदरच मजवा जाए.
नारसियाचा स्वामीनें मलवा ऊलट अंग न माय. वा० ४

२६०. शामेरी. १. वाशलडी वाशलडी. माननीया. शाभलिनें थइ. माटे. ३. शवलाशुं. शामलीयानें सेटें. ४. मुदरच. नारसीयाचा स्वानें. उलट.

२६१. सामेरी

लटके ओहाव्यूं वंदावन सामलिया-संघाते रे.
प्रेम धरी बोलावो, मारा वाला, ज्येम रमवा आवूं रात्यें रे. ल० १
मुं शरखी तारे कोटिक नारी, तुं छो मारे एक रे.
तुझ विना अमे ग्ही न शकुं एकलडी एक निमेख रे. ल० २
तमे अम-शुं अभिमान धरो छो, अमे छुं कायर नारी रे.
नयणें नयण मिलावो, मारा वाला, हुं छूं दास तमारी रे. ल० ३
धन धन्य रे, तुं कृष्णजी कामी, विरह-ची वेदना वामी रे.
नारसियाचा स्वामी संग्य रमतां सकल पदारथ पामी रे. ल० ४

२६१. सामेरी. २. शरषी. काटिक. तु. निमेष. ४. तु नारसीयाचो. पामी

२६२.　　सामेरी

वेरांतीनो भाव जणावे सकुमारी वाली,
नकवेशर शोहे लटकंता, शमारे घूंघट वाली रे. वे० १

अधुरे अधुरे छेडलो चंपावे, नचावे आंख्य अणियाली रे.
पाय पाघडां वींछीडानो लटको करे मछराली रे. वे० २

शांकलडी शेरीमां जातां वाटे मलियो वनमाली रे.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, लीधुं आलिंगन वाली रे. वे० ३

२६२. १. घुघट. ३ शाकलडी नारसीयाचो.

२६३.　　सामेरी　　[रा २५]

त्राजूडे त्रिभोवन मोह्या मोटा मुनिवरराया रे.
रूप स्वरूप कर्युं नव्य जाए, जाणे ईश्वरी माया रे. त्रा० १

कुंकम केसर पीयल्य पूरी, मांहे म्रगमदनी टीली रे.
आंखडली अणियल पांखडली, लीला लाड-गेहेली रे. त्रा० २

चंचल द्रष्टि चहु दिश चालवे, मांहें मदननो चालो रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, सुंदरी वदन निहाले रे. त्रा० ३

२६३. सामेरी. १. मुनीवर–. रुप स्वरुप. जाणे. २. माहे आपडलो. –पायडली. ३. माहें. नारसीयाचो. सुदरी.

२६४　　सामेरी　　[रा. १८]

झांझरियां झमकार करे रे, वींछीडा पाये वाजे रे,
बांहोडिया-चां कंकण केवल बोलतां घगूं नादे रे. झां० १

हंसगवनी हंसगति चाले, चरण-तले चीर चंपे रे.
उरमंडण राजित उर ऊपरच, मुनिजननां मन कंपे रे. झा० २

राखडली रतनाली शोहे, वेणा वासंग ज्यम ढलके रे.
माछां अंबर शिर परच शोहे, मुनिजननां मन सलके रे. झा० ३

सकल शणगार शग्यीने स्यामा स्याम तणे रंग राती रे.
नारसियाचा स्वामीने मळवा एकलडी वन जाती रे. झा० ४

२६४. शामेरी. १. झाझरियां. वाहोडियाचा. २. उपरच. ३. रापडली. आछा. शीर. मुनीजनना कंपे रे ४. नारसीयाचा स्वामीने.

२६५. सामेरी [पदि. २३०]

रातलडी नव्य पोचे रशियाने, आलश न आवे रे,
पियुजी शुं प्रेम घणेरो, सजनी, मनमथ मान मुकावे रे. रा० १

माझम रात्यें हूं पियु शार्थे कंठ वलाइने शूती रे.
पियुनो कर कुच ऊपरच धरती एगि परच निशा निगमती रे. रा० २

यादवराय मारूं कह्युं न माने, मनमथ परच परच पीडे [रे].
नारसियाचा स्वामी, कहुं तमनें रुदया भीतर भीडी रे. रा० ३

२६५ शामेरी. १. पीयुजीशुं. मांन २. पीयुं वलाईने शुती. पीयुनो उपरच नीगमती ३. नारसीयाचा.

२६६. सामेरी [रा. २८]

वाजे वाजे नेपुरियांनो ठमको, वाजे रे, मदमाती नार न लाजे रे.
सिर मदन महा भड गाजे, सकल शणगार अंग्य छाजे. वा० १

कोण सुहागण शाचर्ग रे, आणी वेला अधराये रे [२]
नेपुरियाने रमके ठमके माल्ती मदन सघाते रे. वा० २
कोण पुण्य तप तारुणि तणा रे [२] सहे यें सुदरवर पामी
अनग तण् अभिमान उतार्ग ते नारसियाचो स्वामी वा० ३

२६६ १ नपूरियानो चीर २ शाचरी नपुरीयाने ३ नारसीयाचो

२६७			सामेरी

लटकतडी शामलडी चाल ज्योवननें अहकारे रे,
पटोली पेहेरी नवरगी नेपुरने झमकारे रे [लट० १]
गजगय चाल गरव गेहेली, मरकलडो अति कीधो रे
सगम रमता शाहिहु लीधु, अधुर अम्रतरस पीधो रे. लट० २
शेजडियें शामलियो पामी अबला मन्य उल्लास रे
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, पूरी मारा मननी आश रे लट० ३

२६७ शामेरी २ शाहिहु अधूर– ३ उलास नारसीयाचो

२६८.			सामेरी

रमझम रमझम नेपुर बाजे माझम रयणी रे
पिउ सु सगम रमता रामा बोल्ती मधुरी वाणी रे रम १
नयण कटाक्ष करीन कामिनी कामी जनने शाले रे
शणगटडो टालीनें कामिनी वाला सगे माल रे रम० २
लाड करी लाडकडु बोले, मनमथ मान छडावे रे
नारसियाचा स्वामी सग्य रमता भ्रकुटी भाव जणावे रे रम० ३

२६८ शामेरी १ पीयुसु रमता वाणी ३ नारसीयाचा –रा १३४, परि १ ४१ अने ४७ मा मात्र १ लु चरण ज समान छे, बाकी बधु जुदु

२६९. सामेरी

श्यामलियानें सगे श्यामा रमती रसभरच्य माहाले रे.
परसपरचें रमता रगे दोवुं चुंबन गाल्यें रे शाम० १

मा मा करिनें मोहो मचकोडे, नउतन भाव जणावे रे.
मरकलडे मन रंजे मोहन, नयणे नेह जगावे रे. शाम० २

नउतन ज्योवन प्रथम समागम, सुरत केल्य करता रे.
मनमथ सुख दीधु रे सेजें वालाजीं शु रमता रे. शाम० ३

मन-मनोरथ पूरण पामी, काम-त्रिपत थै नारी रे.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, निरगुण ए ब्रह्मचारी रे. शाम० ४

२६९ शामेरी १ करीनें ३ करता ४ पामी नारसीयाचो ब्रह्मचारी

२७० सामेरी [रा २६]

मुख जोता अभिमान धरीनें शणगटडो वाले रे.
अधपटियाली आल्य जोइनें कुच [पर] पालव चाले रे. मु० १

पानकीव ओहे मन माहे, कंठ कोमलता भावे रे.
पीतांबर पेहेरीनें चाले, इद्रासन डोलावे रे मु० २

माहालनी मरकलडो मेहेले, सेज सुरंगी भावे रे.
नारसियाचा स्वामीनें सगें हशती सगम आवे रे. मु० ३

२७०. शामरी १ आल्य जाइनें २. माहे कठ ईंद्रासन ३ नारसीमाचा

२७१.　　　　सामेरी　　　　[रा. १८०]

निरगुण-गारो नाहोलियो रे सगुण थयो रे,
जनमनी कोटाकोट लगें वालो अम-शुं अबोलडे रह्यो रे.　　नि० १

धन्य धन्य दहाडो आज तणो रे, रंगभरय रमशुं रजनी रे.
अंगोअंग्य मेलावशुं रे ते सुख केशुं सजनी रे.　　नि० २

एक वातनी चिंता हुंती ते मारे वालेजिये टाली रे.
नारसियाचा स्वामी-संग्य रमतां नहि अवतरिये वाली रे.　　नि० ३

२७१. शामेरी ३. वालेजीये नारसीयाचा -सग्य. नंही. अवतरीये.

२७२.　　　　सामेरी

नहि बोलुं, नहि बोलुं, मारा वालाजी, अम-शुं कूडुं कीधुं रे.
अम ऊपरथी चित्त उतारचूं, शोक-शुं शांहिडुं लीधुं रे. न० १

शोक्यलडीनें झांझरियां घडाव्यां, नाकें निरमल मोती रे.
वृंदावनमां लइने पधारया, हुं रहि शामुं जोती रे. न० २

शोक्य तणां सुख शहु-को जाणे, कोए आगन्य न केवाये रे.
परशोतम पूज्या होए प्रेमे तो वालो वश थाए रे. न० ३

[मन] मनावी मंदिरमां लीधा, मनसा शुधे मलिआ रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, भवसागर-भय टलिया रे. न० ४

२७२. शामेरी. १ नहो. नही. कुड कोधु. उपरथी चित. शाहीडुं लीधु. २. झाझरीया. लईनें रही. शामु जोई. ३. जांणे. पुज्या. ४. मलआ. नारसीयाचो.

२७३　　　　सामेरी

अधुरपान नव्य कीजे, माहारा वाला, लोक मांहे लाजीजे रे.
वार वेहु परत्य में तुनें वारचो, मारा मनमां मादल वाजे रे. अ० १
वाटडिये म वलगिश, वाला, मारी अहियर मांहे शोर थाशे रे.
माये भय भरतार तणो रे, मारे शाशरिये सुख जाशे रे. अ० २
प्रीत्य करी परशोतम पामी, अबला बीती टाली रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, कंठ बांहोडली वाली रे. अ० ३

२७३. शामेरी १. -पांन. माहे. २ वाटडीये वलगीश. अहीयर माहे शाशरीये. ३. परशोतोतम पांमी. नारसीयाचो. बाहोडली.

२७४　　　　सामेरी

श्या मांटें, शामलिया वाला, गगगटडो मोडे रे!
वारंतां वारंतां वालो कांचलडी कश छोडे रे. श्या० १
मारग्य ऊभो मोह उपजावे, आकुल व्याकुल थाउं रे.
मननी छे ते कोय नव्य जाणे, शाशरिये किम शमाउं रे? श्या० २
शासु माहारी शरा लगे जूठी, नणदी जूठजुठारी रे.
नारसियाचा स्वामी-संग्य रमतां रुचि रुचि शेज्य शमारी रे. श्या० ३

२७४. शामेरी १. कांचलडी-. २ उभो. थाउ शाशरीये. शमाउ. ३ जुठी. जुठजूठारी. नारसीयाचा. -रा. १७१ मां मात्र १ लुं चरण ज समान छे

२७५.　　　　सामेरी　　　　[रा. १६२]

शामलियानो शनेह, मारी सजनी, तुझ विना केनें न केहेवाय रे.
एक वात तुं राखे छानी, रखे कांइ परगट थाये रे! शा० १

अमारे काजें वालो गउधेन्य चारे, आवे व्रंदावन मांहे रे.
महिनें मशें मारगमां ऊभो आवीने आडो थाए रे. आ० २

आजुनी रजनी रलियामणी, मांहे चद्रमानुं तेज रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, आव्यो अमारी सेज रे. आ० ३

२७५. शामेरी. १ कॅनें राघे रये काई २. माहे महीनें उभो. ३. रलियामणी. माहे. नारसीयाचा

२७६ सामेरी

आनंदे आवे रे, अबला, पूरण व्रह्म मुरारि रे.
व्रह्मादिकनें ध्यानें नावे ते-शुं रमे व्रजनारी रे. आ० १

धूम्रपाने वालो वश नावे, आवे प्रीत्य तणे परपंचे रे.
जनमनी कोटा-कोटि तप कीधां तोहे नावे शंचे रे. आ० २

शिव सनकादिक ने इंद्रादिक निगम चतुरमुख गाए रे.
नारसियाचा स्वामीनी लीला ते कोणे न कलाए रे. आ० ३

२७६. शामेरी. १. आनंदी. व्रह्म मुरारी व्रह्मादिकनें. २. कोटा-कोटि. कीधा. ३. इंद्रादिक. नारसीयाचा.

२७७ सामेरी

मन, तुं मेल्य महानिध्य रे, जेनुं रतन अमूलक नाम रे.
भरच्य भंडार नें सार करच्य संग्रह, शारे शघलां काम रे. म० १

चोर न चोरे. अगन्य न बाले, धूरत कोए न धुतारे रे.
देहडी तजतां शार्थे आवे, अंतकाल्य उगारे रे. म० २

ए ध[न]नो महिमा छे मोटो, शुक सनकादिक जाणे रे.
कांइक कृष्ण क्रिपा अनुसारें नागर नारसियो वखाणे रे.   म० ३

२७७. शामेरी. १ महानीध्य. जेनु अमुलक नाम. २. धुरत उगारे ३ काईक नारसीयो वपाणे

२७८.   सामेरी   [रा ६२]

लडशडती लेहेकुं करे मोरलियें मोहंती रे.
नारी नयण मोह उपजावे, चतुर चपल गति जोती रे.   ल० १

श्यामा सदा सकोमल अंगें गत्य गहवरनी चाले रे.
डगले डगले देह नमावे ते माहावा-मन्य भावे रे.   ल० २

गाहालती मुख मरकलडो करे, सुदर वदन शोहावे रे.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, एकलडी वन्य आवे रे.   ल० ३

२७८. शामेरी १. मोरलीयें २. मुप. नारसीयाचो

२७९.   सामेरी

मलपतडां मेगळनी चाले माननी आवे रे.
म्रगनयणी मन मोह उपजावे ते माहावा-मन्य भावे रे. म० १

छेलपणे-शुं छानी चाले शणगटडो शंकोडे रे.
मरकलडो दइ मुख मचकोडे, अलवे-शुं अंग मोडे रे.

केसरलंकी काम जगावे, अनगबाण अंग पीडे रे.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, रदया भीतर भीडे रे. म० ३

२७९. शामेरी २ दई ३ नारसीयाचो.

२८०. सामेरी [परि १.७]

ओ दीशे, सखी, मेहलो आव्यो, नाव्यो मारो नाथ विदेशी रे.
अनंग-आहेडियें धनुक चडाव्यां अम अबलानी पर कशी [रे]. ओ० १

आगे दिन दाहेले निगमती, दादुर मोर संतापे रे.
माहगिया-चा वेरी चातुक सूतां ज्ञाल जगावे रे. ओ० २

पावस रुत परदेश पधारचा ते नर पशुआ कहिए रे.
नारसियाचा स्वामी, कहुं तमनें, खिणुएक अलगां न रहियें रे. ओ० ३

२८० शामेरी १. सपी वीदेशी. –आहेडीयें २. दीन. नीगमती. सुता ३. कहीये नारसीयाचा पिणु–. मुद्रितमां चार कडी; त्यांनी चीजी अहीं नथी; नोधवा जेवी छे :

"घन अति गाजे ने वीज झबूके, मेहूलीडो झड मान्डो रे.
नगणा नाथने शु कहीए, मारी वेहनी, आणे अवसर गयो छाडी रे."

२८१. सामेरी

ए आगन्य अमे रह्युं न जाए, महि पाछां लेइ जाशुं रे.
अमे वहुवारु माणशडां रे, सखी, शागरे कयम शमाशुं रे ! ए० १

व्रंदावननी वाटें जातां विच वेगल थइ चाले रे.
महिनां माट घाट ऊतारे, अंचर अमारां खोले रे. ए० २

धूमड ने धूतारो कहियें, देवरूप कोए दाणी रे.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, जुग सचराचर जाणी रे. ए० ३

२८१. शामेरी. १. पाछा लेई सपी. कयम शमाशुं २. थई. उतारे अमारा पोले ३. धूमड धुतारो कहीयें. नारसीयाचो

२८२.　　　　　सामेरी

राखकडी नव्य खूंचे, मारा वाला, खारकडी खट्के रे.
चलगावलग्य नव्य कीजे, मारा वाला, मारा डशग तणा डंक दूखे रे. रा० १
मीडामीडच न कीजे, मारा वाला, उर अमारां दूखे रे.
प्रेम तणी तमें पीडच न जाणो, शाग अमारा शूके रे. रा० २
कृष्णजी अमारुं कह्युं न मानें, परच परच सगम पीडे रे.
नारसियाचा स्वामी-सग्य रमतां रदया शरिशो मीडे रे. रा० ३

२८२ शामेरी. १ रापरडी पूचे. पारकडी पट्ठके. उशण दूपे २. दुखे शुके. ३. नारसीयाचां. शरीशो

२८३　　　　　सामेरी

धन्य धन्य रे ज्योवनना दाढा, पियुजी शुं [रंगे] रमतां रे.
अधुरपान पिये मृगानयणी, शाइडां लिये मनगमतां रे. ध० १
नित्य नित्य नयणें नेह जणावे, ज्यम उर् ऊपरच आणूं रे.
छेलछबीलो राधावर नें हशि हशिनें मन माणूं रे. ध० २
संगम रमतां हुं सुख पामी, मारा मननु गमतुं कीधुं रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, प्रेमे आलिंगन लीधुं रे. ध० ३

२८३. शामेरी. १. पीयुजीशु पीये. शाईडा लीये २ हशीनें. ३ नारसीयाचो लीधु

२८४.　　　　　सामेरी　　　　[रा १८८]

नानकडी नारच निरांते चाले, झांझरनो झमकार रे.
तारुणी देखिनें त्रिभोवन मोहे, टील्डांनें टमके रे.　　　　ना० १

छेलपणे-शुं छानी चाले, गणगटडो संकोडे रे.
मरकलडो करि मुख मचकोडे, अलवे-शुं अंग मोडे रे. ना० २

केसरलंकी काम जगावे, अनंगबाण अंग पीडे रे.
नारसियाचा स्वामी-संग्य रमतां रदया भीतर भीडे रे. ना० ३

२८४ शामेरी. १. नीरांते झाझरनो २ मुष. ३. नरसीयाचो स्वामीसग्य जुओ १७९ मु॰ छेल्ली २ कडी समान

२८५ सामेरी

चतुरपणे चालंतां चरणें बींछीडा वाजे रे.
कडलां जमणी कांबी खलके, दुरिजननां मन दाझे रे. १

कंकण चूडी अति सोंदूरी, नयणें काजल सार रे.
नाग नगोदर झान्य झूमणां, नवज्योवन-भरच नार रे. २

पोपइये भात्य पटोली पेरी, चंपावरणी चोली रे.
नारसियाचा स्वामी-संग्य रमतां भामिनी भामल भोली रे. ३

२८५. शामेरी. १. कडला कावो पलके दूरजननां. २ चुडी सोदूरी. झूमणां –योवन–. ३ पोपईये नारसीयाचा. भामिनी.

२८६. सामेरी

आडीआडी मीट म जोशो, मारा वाला, हुं नहीं ते वाली रे.
तमशुं शांहिडां लियुं नरोहरच, तो तम शरखी थाउं काली रे. आडी० १

अंबर माहारुं मेल्य, पीतांबर, हुं छुं निरमल नारी रे.
जो हुं रे मारुं अंग उघाडिश, तम शरखी देशुं गाली रे. आडी० २

क्रिपा करिनें मोरे मंदिर पधारया, कंठडे वांहोडी वाली रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, हगि हगि दीधी ताली रे. आडी० ३

२८६. शामेरी. १ हु नही शाहीडा लीयु शरपी थाउ २. हु. नीरमल तु अुघाडीश शरयी ३. करीनं नारसीयाचो. हशी हशी.

२८७ सामेरी

परशोनमनी पेरच जुओ रे, वालो प्रेमदा पाछ्य हींडे.
पाधरे मारग पग न भरे, वालो आवे जाए छींडे. पा० १
जोगिया जतन करि करि थाका तेने स्वपनांतरमां नावे रे.
भणे नारसियो आहिरडां तेने उछरंगे हुलरावे रे. पा० २

२८७ शामेरी १. जुओ छीडे. २. जोगीया. करी करी तेन नारसीयो आहीरडा. हूलरावे

२८८ सामेरी

कानजी कानजी शहुको कहे रे, अमे गोवालियो केशुं रे.
जो तुं अमने आल चढाविश तो मथुरा जइ रेशुं रे. का० १
आजकाल्यनो कीकलो रे, छोकरडो छाश पियंतो रे.
हाथें शाही हकलावतडां रे तहियें बापडो वीतो रे. का० २
अम आगल्य आडो आवीने मोटाइ भाखे रे, मा[य].
लाज नहीं, अम माता आगल्य मोशाला दाखे रे, माय. का० ३
सकल विश्व शहुको जाणे : गाय तणो गोवाल रे.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो पूरणब्रह्म दयाल रे. का० ४

२८८. शामेरी. १. गवालीया केशु. तु. रेशु २ पीयतो ३. भापे नही. अमे दापे. ४. शहुको नारसीयाचो. ब्रह्म

२८९. सामेरी

खिणुएक संगम दियो, मारा वाला, हुं अभिमानीना नाथ रे.
नवलां ज्योवन न रहे राख्यां, आलिंगन ल्यो रे बाथ रे. खिणु० १
एक एक केरी वांहोडियें, वाला, कंठ वळाशुं, कान रे.
मरकलडे मुखचुंबन देशुं, हजी कांय अभिमान रे ? खिणु० २
प्रेमभाव वळवळतां पाम्यां, रामा ताप निवारी रे,
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, आवागमन निवारी रे. खिणु० ३

राग सामेरीनां कीर्तन ३९

२८९. शामेरी १. पिणुएक. नवलां. योवन. राख्या. २. वाहोडीयें. बाय. ३. नारसीयांचो.

[राग रामग्रीनां पद]

२९०. रामग्री

रमझम रमझम नेपुर वाजे, शशिवदनी मुख मछ्छर छाजे. रम० १
गोरे रे गाल्यें गरव-गेहेली छेहेलपणे डग भरती रे.
नयण-कटाक्षे वालोजी वश करती, पियुजीने वश करती रे. रम० २
वांहोडीनो लटको, मुखडानो मटको, नेपुरियानो रे ठमको [रे].
नारसियाचो स्वामी रंग-रातो जाणे कांइ चोलनो चटको रे. रम० ३

२९० १. नेपूर. मुप मछर. २ पीयुजीने. ३. वाहाडीनो. मुपडानो. नारसीयाचो. काइ. चटको रे सजनी.—रा १३४मु मात्र १ लुं चरण समान छे.

२९१ रामग्री [रा. ११५]

लोचनियां रे, आलीगारा, हरी लीधां चित प्राग. लो० १

गुण रे चढावीने बाण ज मेल्यां, भाग्युं छे अभिमान.
तालावेल्य रे लागी, ज्याहारे नयणें कीधी गान. लो० २

अमे रे वहुवारु-माणशडां रे, मरम न जाणू कांई.
एक वार एकांत्य मलीनें रंगभरत्य लेशुं शांही. लो० ३

जेहेना रदयामां कपट नहीं रे ते जाणे रस भाखी.
भणे नारसियो मुगत्य निरमली तेणे जोयो रस चाखी. लो० ४

२९१ १. लोचनिया. चित २ याहारे ३ -माणशडा. कांई. शाही. ३ नही. ४ भाषी नारसीयो जायो. चापी

२९२. रामग्री

नंदनंदन आणे आवशे, पेहेरिग नवरग चूडी. नंद० १

पेहेरण पटोली शोहियें रे, माहे नारीकुंजर भाते.
शणगटडो शोहामणो, मारे रमवा शामलिया साथे रे. नंद० २

शिर परत्य शोहे राखलडी रे, कंठे एकावलि हार.
चपावरणी चोली शोहें, पाए झांझरनो झमकार रे. नंद० ३

एवा एवा वचन शांभली घेर कृष्णजी आव्या [कामी] रे.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, आज हुं आनंद पामी रे. नंद० ४

२९२ १. पेहेरीश चुडी २. शोहीयें. —कुजर. शोहामणो ३ झाझरनो झमकार रे सजनी ४. एवा एग नारसीयाचो. पामी रे सजनी.—पाछली बेउ कडीने अंते 'सजनी' छे, जुओ पद २९०मु छेडे

२९३.　　　रामग्री　　　[शृं. ५९]

नयणां घोळिश मा रे, कांइ प्राणें प्रीय न होए.
ए कारण छे मन मान्यानुं, जाणे विरलो कोय रे. नय० १

वाटडिये वलगिश, म झुंबिश, मारग लागे वार.
दुरिजननो विखवाद दोहेलो, दोहेलो लोकाचार. नय० २

छानी छानी वात कहुं रे, कानजी, शांमळो, नंदकुमार.
नारसियाचो स्वामी कहुं तमनें, आवेश शांझीवार. नय० ३

२९३ १. घोलीश. काई. २. वलगीश. झुबीश. विषवाद. ३. नारसीयाचो. शाझी-.

२९४.　　　रामग्री

आज मारी आंखडी फरुके रे डावी.
　　　शुकन भलां रे, वालो मलशे रे आवी. आ० १

वालाजीनी बांहोडी अमें कंठडे धरशुं.
　　　ज्यम मारो वालोजी केशे तेम करशुं. आ० २

जप तप तीरथ देहडी न दमियें.
　　　नारसियाचा स्वामी-शुं रंगभरच रमियें. आ० ३

२९४. १. आखडी. भला. २. बाहोडी. कठडे ३. दमीयें नारसीयाचा. रमीयें.

२९५　　　रामग्री

वेलो वलण करे रे, वाला, वेलो वलण करे, रजनी छे अदभुत.
कोण भाग्य वंदावन-नारी, पेखे उगमती शूर ! वेलो० १

नंदजीने घेरच नवनिध्य संपत्य, कानजी कां गउधेन्य चारे?
सुंदर कुंअर कोडामणो, एनें वन जातां कोए वारे? वे० २
चालो, जशोमतीनें ओलंभो दीजे, लोपीनें मन्य लाज.
गोप घणा छे गउधेन शाथें, कुंअर तणुं किहुं काज रे? वे० ३
अम्रतवेलडी नजनी नारी उरवर सफल फले.
नेत्रकमल उरमाला शोहे, नारसियाचो स्वामी मले. वे० ४

२९५ १. पेषे. झुर. २. कुअर कोडामणो ३ कुअर. कीहु. ४. शफल. नारसीयाचो

२९६. रामग्री

जेणे मारा वालाजीनें कामण कीधुं ते मारी शोक्य देखाडुं रे,
सजनी. जे० १
आज लगें पिउ मोरे वश हुतो, ज्यम केहेती त्यम करतो.
मनडां उवेल्यां अलगां जणाए, मंदिर न पेख्यो वलतो रे,
सजनी. जे० २
ज्ये शिर शाल शोक्य तणूं रे ता संगमसुख नोहे.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, रदया भीतर शोहे,
रे सजनी. जे० ३

२९६ २. पीयु ३. ता. नारसीयाचा

२९७ रामग्री

जेने द्वारच ब्रह्मादिक नरत्य करे रे, अगनान मानवी कां लाजे?
क्रष्णचरित्र पवित्र पावन सदा, जेनुं कोटि ब्रह्मांडमां नाम गाजे रे.
अगनान० १

चार वेद मुख्य गाये नें ओचरे, सरस्वती अंग्य आ्ापे करे.
शुकसनकादिक शुरतकार पूरे, नारद तुंबर ताळ धरे रे.
अ० ३

कीरतन करतां कोटि कल्प वहि गया, आज जाणूं खिर्गूएक होए.
नारसियानो स्वामी निर्घोष-दाता जाणशिरोमणि कृष्ण ओहे.
अ० ३

२९७. ब्रह्मादिक. का ब्रह्माडमा. ३. विष्णु- नारसीयाचो शाही

२९८. रामग्री [परि. १:३५]

परब्रह्म गोवाला-शुं रमे, जेनें जोवा योगेश्वर देहि दमे.
जेने ब्रह्मादिक भूला भमे, जेनें इंद्रादिक चरणें नमे. पर० १
वाले वैकुंठ लोक मूकी करी वालें मानवीमां देहडी धरी. पर० २
एणें रूप कीधुं सचराचरुं, वाले गोकुल चारवा वाछरुं. पर० ३
वालो चउद लोक भांजे घडे, तेम महि कारण मावो रडे. पर० ४
ज्योगिया-चे ध्याने नावियो, ते तो जननी जशोदानें धावियो. पर० ५
मोटे मुनिवरे नव्य जाणियो, ते तो कामिनी कर ग्रहि ताणियो. पर० ६
वालो धर्म पालेवा प्रगटियो नारसियाचो स्वामी वीठलो. पर० ७

२९८. १. परब्रम देही ब्रमादिक भुला. ईंद्रादिक २. वाल वईकुंठ मुकी मानविमा. ३. रुप. ४. माजे. मही. ६. मुनीवरे जाणीयो. ग्रही ७. वाला. प्रगटीयो नारसीयाचो.

२९९. रामग्री

मारगडे मां जो, वारुं छुं. तुं तो भुजबल भीडय म बाथ रे. मा० १

थाए अशूर, दूर घर माहारूं, वहि जाए शहियरनो साथ रे. मा० २

कोमल अंग, कोक-गल्य दारुं, विविध करुं तारी सेवा.
अम घेग्च आव्य, अमे सग आपू अधुर तणो रस लेवा रे. मा० ३

खटदश रूप रची सुख आपू, कुसुम-ची सेज शमारी.
देखे गोपग्वाल, गय म करो, मोरे मंदिर पधारज्यो, मुरारि रे. मा० ४

मारग्य मिलग न होए, मधुकरा, वाद वदे ते कूडो.
नारसियाचा स्वामी, कहूं तुजनें, आ रजनी तणो रंग रूडो रे. मा० ५

२९९. १. तु–दरेक कडीने छेडे 'तेणे०' लख्यु छे. २. वही. शहीयरनो. ३ दापू. अधूर. ४. षट–. रुप. सुप. पधारयो ५ कुडो. नारसीयाचा स्वामी. रुडो.

३००. रामग्री [शृ ५७]

नयणां न रहे रे वारयां.
वेरण्य विषयानां धारया, घोन्यां ज्योवन उबारया. न० १

परनारी शुं प्रेमें वढ्रंधां, भरम करम भारयां.
श्यामा श्याम अंगोअंग्य राता मोहोनाणना मारयां रे. न० २

प्रेम प्रगळ रस पीधानें ते सनमुख्य शणगारया.
नारसियाचा स्वामी नयणे न निरख्या ते भूतल भव हारया रे. न० ३

३०० १. नयणा. वारया. विषयाना धारया योवन २. वढ्या. राता माहो– मारया. ३. नारसीयाचा. भुतल

३०१. रामग्री

गोवाळिया, तुं कोण माणस रे उभलो आंगग-द्वारच रे !
मोटपणुं आण छ मन्य झाझुं, तुं जाण छ जे नारी.
रावन्य गव तो जइ कीजे, जो न शकुं तुनें वारी. गो० १
आपणपुं आपणे वश हुतुं तो तुनें वश कीधो.
आणे मारगडे आवतां रे कर केडेने नव दीधो. गो० २
तजि अभिमान ध्यान-छे लागो, मागुं मान मोरारि,
नारसियाचा स्वामी-संग्य रमतां जेणे आवागवन निवारी. गो० ३

३०१. गोवालीया. माणश. आगग-. जई. २. हुतु दिधो. ३. तजी. ध्यान-. मोरारी. नारसीयाचा.

३०२. रामग्री [छं. ४३६]

लेसे रे महिदाण रे, अमो लेसे रे महिदाण.
हुं रे महियारी मथुरां केरी, तुं रे गोकळिया-रो कान रे. आ० १
अमे रे जीत्यां, हारुं नहीं रे, राखूं तमारुं मान.
'नारसियाचा स्वामी, कहुं तमनें, तुने न वली ज्ञान. आ० २

३०२ १. महीदाण. लेसे २. तु. कांन. २. हारु नही. राखूं. मांन नारसीयाचा. कहु.

३०३. रामग्री

हूं रे पोढी, मारो पियु नानकडो,
ते देखीने शुं वाहे रे घूंघटडो. हूं० १

शणगटडो वाली हुं शी परच चाढुं ?
शही रे शमाणीमां हुं शी पर माळुं ?	हूं० २

पियुजी पोढो थियो, सुंदरी सुख पामी,
भगतवछल मळियो मेता नरसीचो स्वामी.	हूं० ३

३०३. १. पीयु. देषीने. घुघटडो ३. पीयुजी. थीयो. सुदरी. स्वांमी.

६०४.	रामग्री

पियुजी पोढो नें हूं नानकडी,
ते शार्थे न पोचुं रे रामत्यडी.	पि० १

आलिंगन लेतां हूं वलि बिहूं रे,
ना ना केहेतां अधुर पियुं रे.	पि० २

सुख-भरि शेजें आज हूं शूती,
नारसियाचा स्वामीनें मनगमती.	पि० ३

३०४. १. पीयुजी. हू. २. बीहू वलि. पीयु. ३.-भरी शुती. नारसीयाचा.

३०५.	रामग्री	[शृ. २३]

शोणडामां झबकीनें जागी,
जाण्युं मारा वालाजीने कंठचडे लागी.	शोणडा० १

अति रंग कीधो, अधुर-रस पीधो,
जडियें थकी रे वालाजीनें उर परच लीधो.	शोणडा० २

सखी रे गमाणी, मार गोणलु विचारो,
नारसियाचो स्वामी मारे मंदिरच पधारचो गोणडा० ३

३०५ १ गोणडामा ३ सपो नारसीयाचो

३०६. रामग्री [शृ २०]

पूठोनी, अबोलडा रे लीधा,
केहा कामणगारिये हरिने कामण कीधा रे पू० १

पाछोले पडि रे पडी मारी निव्वट घाढी,
काला वाला कोड करचा रे

रदयाचो रोश न मेले मारो वालो,
आशु-जल नयणे भरचा रे मारी सजनी पू० २

शेजे शूता रे, वालो मारो पाशु न फेरे,
पिणुंएक अमो रे न थाए

दीन जाणीने वालाजीने दया रे न आवे,
कहो, रजनी रे क्यम जाए रे, सजनी पू० ३

आलिंगन लेता कठिन कुच खूता,
ए अपराध अमारो

नारसियाचा स्वामीने मनावो, मारी नाइ रे,
एटलो पाड तमारो रे, सजनी पू० ४

३०६ १ कामणगारीये २ शुता पिणु-. ४ पूता नारसीयाचा बाई

३०७. रामग्री [रा. १७७]

नउतन ज्योवन मारुं ते तमे जोवाने शे नावो, मारा वाला ? न० १

कटि रे पातलडी, सकोमल देहा, शें न शंभारो वाला मारा, पूरव
शनेहा. न० २

कुच रे उठंतां, अधुर-रंग राता, देव मुनेश्वर जोइ जोइ जाता. न० ३

एवां एवां वचन शुणी हरि हसिया.
नारसियाचा स्वामी मारा उर परच वशिया. न० ४

३०७. १. योवन. ३. जोई जोई. ४. शुणि. नारसीयाचा.

३०८. रामग्री

शेजडी शियालानी टाढी, नाथ विना कोण भीडे रे गाढी ? शे० १

आज, सखी, हेमालो रे आव्यो, अबला कायर काहावे.
अंग-चा शीतल ताप जणाए, वाला विना कोण शमावे रे ?
सजनी. शे० २

च्यार पोहोर च्यार ज्युग थइ लागा, फोकट शेजे तलाई.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, अबला अम्रत पाई.
सजनी. शे० ३

३०८. १. शीयालानी. ३. थई. फाकट. नारसीयाचो.

३०९. रामग्री [शृं. ३५४]

निद्रलियें परवश कीधां, शेजडियें आव्या रे वालाजी-सुं
शांहिडां न लीधां. नि० १

शाशुडि छाना रे छाना में तो शणगार शजिया,
रुचि रुचि शेज शमारी.
जाण्यूं : मारा वाल्गजी-शुं रंगभरच रमशुं,
वेरण्य रजनि विहाणी रे. सजनी. नि० २

धिक धिक पडो आणी शेजडियें रे,
जेणे वालो कंठडे न लागो.
नारसियाचा स्वामी विना, बाइ रे,
विरह अगन्य थै लागो रे, सजनी. नि० ३

३०९. १. नीदूलीयें. शाहीटा. २ में. शजीया. रजनी. ३. धीक धीक ३ नारसीयाचा. बाई.

३१०. रामग्री

शुण्य, मारी सजनी रे, केणी परच रहिये ?
वालोजी निद्रालवा ए दुख केनें कहिये ? सु० १

मनमथ वेरी पीडे मारी देहा,
कहो रे, सखी, मारा अवगुण केवा. सु० २

सिगुंएक नमणो, सिगुंएक दमणो,
निरगुण नाहोलियो मारे दुखे शींचे फडवो. सु० ३

सुखभरि शेज्यें हेन्यें रे शूती,
च्यार पोहोर निद्रा खरी रे, वगूती. सु० ४

चार ज्याम भरचा वाटडी रे जोई,
नारसियाचा स्वामी विना रजनी रे खोही. सु० ५

३१०. १ रहीये. दूष ३. पिवु–. पिवु नाहोलीयो. छीचे. ४. सुषभरी छुती परी. वगुती. ५ ज्याम. नारसीयाचा. षोही.

३११　　　रामग्री

सायंकाल सुहागी, हरख विचार करेवा लागी, [सजनी. सा० १]
आज माहारे मन्य आनंद अति छे, मानिनी महानिध्य पामी.
मंदिर माहे हरख उलट-शुं वात करे बहु छानी रे, सजनी. सा० २
सनमुख्य उभा कंठ बांहोडी धरी, मुख मुख अंतर टाली.
हास सुखाली गूझ करतां न सक्या आप सभाली रे, सजनी. सा० ३
विवश होइ रह्या भवन-आधारें, चित्र लख्या शांभाव्या.
अंक भरी आशवाग दईनें लइ मदिरमां पधराव्या रे, सजनी. सा० ४
भुजबल भीडी पोढ्या सुखशेज्या, अगचपलता पार्खे.
भणे नारसियो : मारी वाण न चाले, सुदरी वारही नाखे रे. सजनी ०५

३११ २. माननी. ३ सनमुष्य बाहोडी मुष मुष गुझ ४ होई लई ५. पाषें नारसीयो सुदरी नाषे

३१२　　　रामग्री

सुणो, सखी, आजूनी राते
सुरत रम्यो रे वालोजी नाना रे भाते. सु० १
अति रग कीधो, अधुर-रस पीधो,
पछे मारा वालाजीने उर पर लीधो. सु० २

फाम-गेहेलो कानजी कामी,
शेजडियें शामलियो सुंदरवर पामी. सु० ३
मा मा करतां मुके न घडी रे,
हींचे रे हींडोळे वालो चढी चडी रे. सु० ४
सकल संयोगे वाले परच परच पीडी,
नारसियाचो स्वामी रह्यो रे अंग मीडी. सु० ५

३१२. ३. अधूर– ४. वाला. ५. नारसीयाचो.

३१३. रामग्री

पियुजियें मुझनें बोलावी, माझम राते वाले शेज्ये रे आवी. सजनी० १
अशनपणे कांइ नव्य जाण्युं, रुशणिये रे हूंती.
नयण-शङ्गो शामलियो रे, ते संगम हुं शूती रे, सजनी० २
भलुं थियुं हवे मूदरच भेटी, अंतर टाळी मलियो.
नारसियाचो स्वामी छे शपराणो भगत कारण अवतरियो. सजनी० ३

३१३. १. पीयुजीयें २. कांइ. रूशणीये. शुती. ३. भुंदरच. मलीयो. नारसीयाचो. अवतरीयो.

३१४. रामग्री

अंबोडलो छूटो नें रे छव वाधी, जाणे कांइ मधुकर रह्या रे आराधी. १
बार वरशनी रे अबला रे वाली, केश रह्या रे पाय रलता.
वदन वालेनि जोयुं निहाली, झोगी दाडीमां शलवलता रे. अंबो० २
पासे जइ हि परशोत्तम पेखे, पंथ रह्या पायें पलता.
शोभा सुंदरीनी सी सम दाखूं ? अंग अमीरसे ढलता रे हेली. अंबो० ३

हेज हकारी गति विस्तारी, हास तणी शोहे जुगता.
नारसियांचा स्वामी नयणे नोतरिया: वेला पधारो चटता रे, हेली. अ० ४

३१४. १. छुटो. काई. २. जोयु. शाडीमा. ३. पेचे. दापू.
४. जुगता. नारसीयाचा. नोतरीया.

३१५. रामग्री

आलिंगन एणी परच लीजे, अथिर ज्योवननी लाहो लीजे. आ०
नयग नयग पर, अधुर अधुर पर, कुच ऊपरच कुच दीजे. आ० १
क्षण अथक्षण एवो भाव धरीजे तो माहारुं मन रीझे. आ० २
रसभरि शेजें पधारचा कामी, भगतवछल मल्यो नारसीचो स्वामी. आ० ३

३१५. १. योवननो. २. रसभरी.

३१६. रामग्री [पृ. १७]

कंठडानुं भूषण, सजनी,
अलगो न मेलुं वालाजीनें दिवस ने रजनी. [कंठ० १]
वदन अवलोकुं, अधुर-रस चाखुं.
रदया शरीशो वालाजीनें भीडी भीडी राखुं. कं० २
ए रे भूषण मारे अंतरज्यामी,
भगतवछल मलियो नारसीचो स्वामी. कंठ० ३

३१६. १. न रजनो. २ चापूं. रापू ३ भुषण.

३१७. रामग्री

आलिंगन लियो, नाथ, गाढुं, ज्यम मारा रदयामां थाए टाढुं रे. १
आलिंगन लियो तो कोमल अंग आपूं,
संगम आवो तो, वाला, थिर करि थापूं. आ० २

ऊपरवाडे शाद शांभळी भाणे भोजन भावे रे,
मुखडानो श्रा रह्यो मुख मांहे, वालो एम-थी ऊठी आवे रे. स० २

आणे मारग्य अमे आवतां ने जातां, कानुडो पालव ताणे रे.
नारसियाचो स्वामी जुगतुं जोइनें रमण रगीलडो माणे रे. स० ३

३२१. १ रासनेही. २. उपरवाडे. माहे. उठी ३ नारसीयाचो. जूगतु जोइने.

३२२. रामग्री

मारा वाळाजी, ओरा आवोनी, तमने आपूं अनोपम सार.
अनेक जुग गया अनुभवतां, तारो कोणे न लाधो पार रे. ओरा० १

में दीठुं ते तमने देखाडुं, ते कोणे नथ्य दीठुं.
तमारा शम जो तम विना मुझनें नथी लागतुं मीठुं रे. ओरा० २

अम्रत पांए छे अतिघणूं मीठुं, ते जोयुं छे चाखी.
अवर शहुने अजर थयुं छे, हुं ज रही छुं राखी रे. ओरा० ३

ए रे विद्यामा अति परवीण छूं, कोक-कळा जे का[हा]वे.
नारसियाचा स्वामी, कहुं तुझने, मुझ विना कोण शिखावे रे. ओरा० ४

३२२, १. जूग. २. मे. देषाडु. ३. पाणे. जोयु. चाषी थयु. हू राषी. ४. विद्यामा अती नारसीयाचा. कहु. शीषावे.

३२३. रामग्री

मारी बाइ रे, कामण ते ज भलुं, जेणे मारो वालोजी वश थाय रे.
ज्योग ज्यग्न्य जप तप व्रश नावे, कामण ऊपरच रीझे रे. का० १

कामणनु कारण छे सवळ, जे कामण करीजे —
अनेक उपाय करो जो बीजा, अवर कशे नव राझे रे का० २
कामण छे नारीना नयणा, मोहण कीकी माहे
नारसियाचो स्वामी कामण-वश, निगम नेति नेति गाय रे का० ३

३२३ १ वाइ उपरय २ शवळ. करी जाणे ३ नारीना नयणा माहे नारसीयाचो

३२४ रामग्री

हरिरस कोएक जाणे, बीजा मन्य गहु अभिमान आणे सज० हरि० १
वैष्णव ते जे स्नेहमारगी हरि शु खरो अभिलाख
मरजादा जाणे ने प्रीछे, नदिक लाखोलाख रे सज० हरि० २
हरि वाला तो जाणवा रे, जो होए हरिजन वाला,
नहितो पाखड जाणज्यो रे, शरम करे ते ठाला [सज०] हरि० ३
ज्याहा हरिजन सुख पामशे रे त्याहा सुखिया श्रीगोपाल
नारसियाचा स्वामीनी निश्चल लीला बीजू सरवे आलपपाल रे
सज० हरि० ४

३२४ १ अभिमान २ खरो अभिलाष ३ हरीजन पापड ४ ज्याहा हरीजन पामशे त्याहा नारसीयाचा

३२५ रामग्री

परणाम माने रे, मारो परणाम माने रे
गना काटडा मशे नमि जाउ रे, मारो परणाम माने
ज्ञानी ज्ञानी वात कहू रे, कानजी शमझावू शाने रे. मारो० १

जातां जातां हूं गई रे, में नव्य जाणी वात.
नंद तणे नानडिये, वाइ रे, आवीनें म्हो मारो हाथ रे. ग्रं.० २
एटला रे दाढा भर्मे न जाणतां जे नव्य कीधी क्रीडा.
ते भरज्योवन एल्य गयो रे, मारा रही रदयामां पीडचा रे. ग्रं० ३
शाशु नणदी मलीनें विचारयुं : वहुआरुनें व्याप्युं.
नारसियाचा स्वामी-शुं रमतां अखंड एवातण आप्युं रे. ग्रं० ४

३२९ १ रुडु रमता रुडु रमता २. जाता जाता. वाई.
३. भरयोवन.

३३०.　　रामग्री

तुं हरि भज्य खिणुं खिणुं प्रत्य रे, तो तारे दीवाली. तो० १
जो कर प्रीत्य साधुनी संगत्य, कृष्णनाम-शुं ताली रे, तो० २
विषेवासना शुं करे तेनें, जेनुं नाम जपमाली रे ?
साधन बीजां शून्य, नारसिया, तुं थानी हरिनो हाली रे. तो०

३३०. १ हरी पिणुं पिणु ३. शुन्य नारसीया तु

३३१.　　रामग्री

क्यांहां थकी आव्यां रे, सखी, तमे क्यांहां क्यां थकी आव्यां रे,
हेली, मारे मंदिर शुहाव्यां रे. सखी० १
सुललित वचन बोले शामलडी : अमे वशियें नंदिगाम्य.
अति उरइयां गहियरनें मलवा, दीवाली मुझ नाम रे. सखी० २
एवां वचन शुणीनें आघां मंदिरमां पधराव्यां.
नारसियाचा स्वामीनें मलिनें दंपति दुखडां वाम्यां रे. सखी० ३

३३१. १. आव्या. क्याहा. आव्या. शुहाव्या. २. शुललित.
उरइया. ३. एवा. पधराव्या. नारसीयाचा स्वामीनें. दुपडां वाम्या.

३३२. रामग्री

दीवाळी दीवाली रे, आज मारे दीवाली दीवाळी,
मारे घेरच आव्या वनमाली रे. आ० १
घणा गे दिवसनो ताप निवारचो, मुनें प्रेमें-शुं बोलावी रे. आ० २
जलहल मलहल करो रे दीवडा, मोतीडे चोक पुरावो.
माननियां मलि मंगळ गाओ, ढोलदमामा वाहो रे. आ० ३
मस्तक पाय पीतांबर ओढें, चांपां चोशर लेहेके.
भरचा तंबोल गल शिथिल झलके, चूआ चदन वेहेके रे. आ० ४
सनाथ कीधां, स्वामी माहारा, ताहारा गुग श्या कहिए ?
नारसियांचो स्वामी भळे मलियो, मारे मंदिर थकी नव्य जैये रे. आ० ५

३३२. ३ दिवडा पूरावो. माननीया ४. चुआ. ५. शनाथ कीधा. नारसीयाचो.

३३३ रामग्री [शृं १४३]

पधारचा हरि कुंकुमनें पगले रे,
मशमशता मोहनजी आव्या डगमगते डगले रे. पधा० १
मस्तक्य पाघ पीतांबर शोहे, नीलांबर बदले,
मुख ऊपरय श्रमजलनां मोती दिठडे मन हरि ल्ये रे. पधा० २
दुधे वुठा मेह नारसियाने आंगणडे सघले.
शाकर केरा करा पड्या रे, रस जाम्यो ढगले रे. पधा० ३

३३३. १. कुकमनें. २. मुष उपरय. दीठडे. ३. वूठा. नारसीयाने आगणडे शघले

३३४. रामग्री [मूं. २८]

शोहागण्य दीवडो जाल्य रे, सखी, आपणा मंदिर मांहे रे.
अलव थकी ओलवडे राखे, ज्यम वानी लेहर न लागे रे. दीवडो० १

तां-लगें अवला करच अजवालुं, जां-लगे पियुजी जागे.
निरमल ज्योति धरे म्रगानयणी, जां रयणी तां राखे. दीवडो० २

अनेक हास विलास विविध परि रमतां वालोजी राखे.
नारसियाचा स्वामी-संग्य रमता दुरिजन कोए म दाखे रे. दीवडो० ३

३३४ १. माहे. रापे. २. ता-. जा-. पीयुजी. योति रापे. ३. रापे. नारसीयाचा. दूरिजन. दापे.

३३५. रामग्री

निरमलि ज्योत्य धरे रे, हो दीवा,
शेजडियें आव्यो वालो शांहिडुं लेवा. निर० १

कुडि कुडि कसण म मोडिश झीणी,
नहि रे भोयंगम, मोरे शिरच वेणी. निर० २

कां रे, दीपकर, रह्यो चित चोरी,
नहि रे दिवाकर, राखडी रे मोरी. निर० ३

दीवडो देखीने सुंदरी सुख पामी,
भगतवछल मलियो नारसीचो स्वामी. निर० ४

३३५. १. नीरमलि योत्य. २. कुडी कुडी. माडीश. ३. दिपकर. ४. देषीने सुदरी सुप.

३३६. रामग्री

फूली लावे नाक शोहंती, हो वाला, फूली लावे नाक शोहंती. फूली० १
शहु तणे नाकें नकवेशर, मारे नाकें छे वाली.
शही शमाणीमां रंगभरच रमतां मेगां देइ देइ मारी. फूली० २
वालानी तमे मानी हूंती, कह्युं'तुं : घडाविश छानी.
यांहां-लगे बोली नहि, वाला, जां-लगें हूती नानी. फूली० ३
वालाजीराते दातें, रामाजीरीशाणी, फूली नाक सारु आणी.
नारसियाचा स्वामी-संग्य रमतां जुग सचराचरच जाणी रे. फूली० ४

३३६. १. (१.२) फुली. २. देई देई. ३ मांनी. त्याहा-. नही. जा-. ४. फुली. शारूं. नारसीयाचा.– दरेक कडीने अंते बीजी कडीथी 'सा०' लख्यु छे. आ पदमां 'सा०'थी शरू थतो कोई ध्रुव-शब्द नथी.

३३७. रामग्री

नेणे लागो मोहो रे, गोरी, तारे नेणें लागो मोह;
हां रे केनी, तुं के जन शामुं जो रे? गो० १
कामीजन कटाक्षें वेध्या मारच्या मनमथ जोर. गो० २
भागे सुर ब्रह्मादिक शरखा ते पण जीत्या नारी.
मोटा मुनिजन-ध्यान छेटाव्यां, तो कोण मात्र संसारी रे! गो० ३
अनंगबाण अवश्यानां नेणां प्रगट पाराधी नारी.
नारसियाचा स्वामी, पुरुष एक तुं, अवर पुरुष सव नारी रे. गो० ४

३३७. १. हा रे. ३. ब्रह्मादिक शरपा. झीत्या. ध्यांन. ४. नारसीयाचा. (१–२) पूरष. श्रव.

३३८. रामग्री

लोचन रेखालां रे ते शांती शे चालो ?
कायरनी गत्य म करो, वाला, आलिंगन आलो रे. लो० १
बीहो छो तेम बीहीक घणेरी, न टले एक लगारच.
परा परेरा शे थाओ छो ? ओरा आवोनी आर. लो० २
शहियर सुदर देखंता रे शोभंती चोली.
नारसियाचा स्वामी, मंदिर पधारो, नेणां पर घोलीं रे. लो० ३

३३८ १. शाती ३ सुदेर दखता नारसीयाचा. नेणा

३३९. रामग्री

पराभरच उभलो आधार, निगम न जाणे जेनो पार रे. प० १
ब्रह्मादिक जेनो पार न पामे, कमला वंछे विहार.
ते वालो तोरे पाय लगाडुं, ओरी आव्य आ वार. प० २
रती तणे रुगणिये रे शुं रीसावी, गेहेली ?
भज भूदर, आव्यो घेरच बेठां, ले आलिं[ग]न पियु पेहेलीरे. सजनी० ३
मन मलियुं रे मुख ना नाशुं बोले, सुदरीनां लोचन हशियां.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, नित्य प्रत्य ए वेहु रगिया. स० ४

३३९. १. ब्रह्मादिक. ३. रुगणिये सुदर पीयु, ४ सुदरीना. नारसीयाचो स्वामी.

३४०. रामग्री

गेहेली, एम न कीजे, आपणा वालाजीने मनावीनें लीजे. गे० १

रुपणियुं रस मांहे अति रूडुं, कोरुं नहि काई.
भगत्य करी भोळविये पियुने, प्रेमे लेनी शाही रे. सजनी० गे० २

रस विविधे रमरथ शामलियो, एवो शाचो चतुर न कोय.
नारसियाचा स्वामी संग्य रमतां पुनरपि जन्म न होए रे.सजनी० गे० ३

३४०. २ रूपणियु माहे. रुडु नही काई. पीयुने. ३ नारसीयाचा. पूनरपि

३४१. रामग्री

कुचफल थापग तोरी, ते केने आप्यां न जाए रे, हो वाला० १

एकवारका रे मोरे घेरच आवो तो रसिया करी जाणुं.
जातुं ज्योवन आवां न दीजें, तो कोण पुरशनें माणुं रे? वाला० २

मूतंल रशिया विविध परच जोया, पण तुं शरखो नव दीठो.
नारसियाचा सामी, कहु तमने, अम्रत पाय लागो मीठो रे. वाला० ३

३४१ १. आप्या २. रसीया करी योवन आवा. पूरशनें. ३ भुतल शरखो. नारसीयाचा. कहु

३४२ रामग्री

कुचफल आप्यां न जाए, हइडे थयां शुं शलाय रे, हो वाला. कु० १

उर थकी रे अधिक सुख आपे, दूर गियां दुख लागे.
जाचक-श्यो जे मरम न जाणे, वण-अवसर आवी मागे रे, वाला. कु० २
अबला-चे अंग एह ज भूषण, ते, कहो, केणी पेरच आपूं?

नारसियाचा स्वामी, मोर मंदिर पधारो,
तो उरमां थिर करी थापूं रे, प्रभुजी. क्रु० ३

३४२. १. आव्या. हईडे थया. २. गीया. जाणे. –अमदार. ३. भुषण नारसीयाचो. थापू.

३४३ रामग्री

शोणुं केवलि शाचुं रे, वाड, शोणुं कवलि शाचुं.
नंदनंदन शुं रगभरय रमता अतरगत्य राचु रे. वाइ रे० १
सकल शहियरमा वाले मुझनें बोलावी मरकलडो कीयो.
नाहोलिया शु नेह बंधाणो, अधर-अम्रतरस पीधो. मारी वाइ रे० २
अबोलडा टाऱ्या मारे वाले, मानेती मुने कीधी.
नारसियाचा स्वामी-सग्य रमतां ह्दया भीतर लीधी रे. वाइ रे० ३

३४३ १ शोणु शाचु वाई राचु २ शहीयरमा. वालावी. बधाणो ३. नारसीयाचा.

३४४. रामग्री

सामळिये अम शामुं जोयुं साझ तणी वेला रे.
भावसमे में मज्जन कीधुं, हूती शी वेला [२] सा० १
गोफणडे घूघरडी घमके, नेपुर रयां रणझणतां.
मरकलडे मुख वाली जोयुं, शहियर देखंतां. सा० २
धन्य धन्य रे ज्योवननाडा, धन धन्य भोगविलास.
नारसियाचो स्वामी [भ]ले मळियो, पूरी मारा मनडानी आश. सा० ३

३४४. १. शामु. शाझ मे हुती शो वेला. २. घुघरडी. नेपूर रया. मुप. देषतां

३४५ रामग्री

जोग्यो बाइ, शामलिये अम शासुं जोईनें मरकलडो कीधो.
मंदिर आवी मल्वानो वाले बोलडो दीधो. जोग्यो० १
धाती नें उजाती आवी अबला बाली,
कुंकुम काजल टीलां टबकां आंजी आंख्य अणियाली. जोग्यो० २
धन्य धन्य रे आजुनी रजनी रंगें विहाणी.
नारसियाचा स्वामी सग्य रमतां जाती न जाणी. जोग्यो० ३

३४५ १ जोयो बाई जाईने २ ककम. आष्य ३ आजूनी.

३४६. रामग्री

म कहिश वाली वाली, तारे शुं नथी अम टाली ?
अधुर तणो रस तुजने रे जोयें, अमे अबला ते नहि बाली. १
अम अबला तणुं अंग उघाडिश तो तमने देशुं गाली.
मारा वाला, म कहिश वाली रे वाली. २
आडी मीटडियें म जोइश. हुं नहीं ते वाली.
आलिंगन लेवा नहि दिउं, देवा, तम गरखी थाउं काली. मारा वाला० ३
एवां वचन शुणी हरि हशिया, हशि हशि धे कर ताली.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, कंठडे बांहोडली वाली. ४

३४६ १. कहीश वाली वालि. नही २. उघाडीश कहीश ३ मीटडीयें. जोईश. नही. नही दीयु दवा. ४. नारसीयाचो. बाहोडलो.

३४७   रामग्री

मागुं, मारा वाल्हाजी, मोरे संगम आवो,
तमे मारा मनमां रूडा रे भावो. १
आ उर ऊपरय रहो निरंतर, तो थाए रदया टाढुं.
अधुर-अम्रतरस तो पीजे, जो शाहिडुं ल्यो मुनें गाढुं. मारा० २
सासु नणंदनी लाज तजीने भजवा नंदकुमार.
नारसियाचा स्वामी, छेह म देशो, ज्यम शोभे शणगार. मारा० ३

३४७ १. मागु. २ ऊपरय नीनीरंतर शाहिडु. ३. नणदनी. नारसीयाचा.

३४८.   रामग्री

धन्य ते ज्योवननी बन्यहारी, धन्य ते कामशालुणी नारी. ध० १
कामीनुं ज्योवन ज्यम ज्यम विलसे, जोतां मुनिजननां मन तरशे. ध० २
एवो ज्योवन जावा न दीजे, नारसियाचा स्वामीशुं रंगभरय रमीजे. ध० ३

३४८. १. योवननी. शलुणी २. योवन. -जनना. नारसीयाचा. रमिजे

३४९.   रामग्री

चोलियां-चा कशण म छोडिश, कुचफल नहि तम ज्योग्य रे. वाला० १
नवज्योवन कांइ अनंग न जागे, रति विना रंग न लागे रे. वाला० २
एवां एवां वचन शुणी श्यामानां, रदया भीतर लीधी रे.
नारसियाचो स्वामी प्रथम समागम विविधपरें क्रीडा कीधी रे. वाला० ३

३४९ १. नही. २. योवन. कांई ३. एवा एवा. श्यामाना. नारसीयाचो.

३५०. रामग्री

एणि परच में वश आण्यो, विपरी[त] सुरत विनाणो रे. सजनी. १

ना ना करतां ने नाशी जातां, मा मा करतां लीधो,
नयण नयण-रस, अधुर अधुर-शूं अम्रतनी परच पीधो रे. वालो० २

एक समे में उर परच लीधो, ज्यम कहुं त्यम माण्यो रे.
नारसियाचा स्वामी संग्य रमतां ससार जातो न जाण्योरे. ए० ३

३५० ३ नारसीयाचा

३५१. रामग्री [के द ध्रुव]

हां रे मनमथ, पीडिश मां मोरी देहा, नहि हर हूं, हरणाखी रे. मन०
वेरभाव तो रे शंकर शार्थे, अम अबलाना अवगुण किहा रे ? मन० १

मस्तक वेण जटा म म जाणे, नोहे रे मुगट, ए फूल.
नोहे रे गरल, म्रगमद छे माहारे, भोलपणे का भून्य रे ? मन० २

नोहे रे विभूय, चंदन छे माहारे, नोहे रे नाग, ए हार.
नोहे गजचरम, प्रांगण ए पटोली, जो तुं रदये विचारी रे. मन० ३

कामबाण म मेलिश, बलिया, अमे छु अनला वाली.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, आवागमन निवारी रे. मन० ४

३५१. १. हरणाषी. २. नोहे र. भुल्य ३ विभुत्य ४ काम-. नारसीयाचो

३५२ रामग्री

सजनी, शी कहियें ए वात ? में जाण्युं : कां हवूं परभात. स० १
मनना कोड रह्या मन माहि, धबक विहाणी रात्य रे. स० २

शनमुख्य थैने शामलियो रे रमे नानाविधि भात्य.
अंगोअंग आलिंगन देतां जाणे उमग्या रसपात्य रे. स० ३
शररता शग्खू तो मळे, जो छुठो होय त्रिपुरार.
नारसियाचो स्वामी भलें मलियो, भवोभव्य तुं भरथार रे. स० ४

३५२. २. माहे ३. आंणे ४. शरपाशरपू नारसीयाचो. भरतापार.

३५५.　　　　रामग्री

कोये मारा मनडानी वात न जाणे,
　　　　लोक जाणे छल भेद थयो रे. सजनी. को० १
आज, सखी, कृष्णजी तोरे वश थाशे,
　　　　एणी परच रजनी नाशे रे. सजनी. को० २
शासु शशरो कांइ पूछ पुछावे, जोशीडा वैद तेडावे,
नारसियाचा स्वामी संगम आवे. वालोजी ताप शमावे रे. सजनी. को० ३

३५५. ३ फाई. पूछावे. नारसीयाचा.

३५६.　　　　रामग्री

वालो मारो शेजडी तणो रे शणगार, ज्योवन शींचणहार रे. सजनी. १
वालाजी कारण हूं हार न पेहेरुं, जाणे रखे अंतर थाए.
गाढे भीडे उर-शुं रे वालो, अधर दसी कुच शाहे रे. सजनी. वा०२
स्नेह तणो रस कुंअर नंदनो, प्रेमे आलिंगन दीज्ये.
नारसियाचा स्वामी-शुं रमतां एणि पर लाहो लीजे रे. स०वा०३

३५६ १. योवन. शीचणहार ३. कुअर. –गन लीये. नारसीयाचा.

३५७.　　　　रामग्री

वालाजी रे, नहि बोलुं तम-शुं. तमे कांइ भली न कीधी अम-शुं.
तमे तमा[रे] घ्येरच राज करो, अमे एकलडां रमशुं. वा० १
मात पिता सुत–लाज मेलीने तम-शुं कीधी सगाई.
चार पोहोर हुं विरहें व्यापी, नयणें निद्रा गमाई रे. वा० २

तम-शुं अमारां चितडां बंधाणां, खिणुएक अलगां न रेवाये.

नारसियाचा स्वामी. कहुं तमने, वारंवार कां वाहो रे! वा० ३

३७३. १. नदी काई. एकलडा. ३ विणु-. अलगा. नारसीयाचा. वहु.

३५८.　　　　रामग्री

मारा वालाजीनी केटी केही किपा रे शंमारुं!

पान्यां पाल्यां लाड अमारां रे, सजनी.

गोकुल राख्युं, गोवरधन धरिओ, इंद्र तणो मद शेहेज्ये रे हरियो. मा० १

वृंदावनमां वाले रास रमाडयां,

सकल सुंदरीमां वाले भलां रे भवाडयां,

मारा वालाजी.

करत विनोद मांहोमांहे हाशी, नारसियाचो स्वामी लील-विलासी.

मा० २

३५८ १. शमारु पाल्या पाल्यां. अमारा. राग्यु. धरीओ. ईद्र. २. सुदरीमां. भला. माहोमाहे नारसीयाचो.

३५९　　　　रामग्री　　　　[सृं. ४४५]

दुघले वूठा मेह, शाकरनां ढीम जाम्यां रे. सजनी. १

आज मारो वालोजी मोरे मंदिर पधारया, प्रेमे आलिंगन लीधुं.

मीठी मीठी कीधी वाले वातलडी रे, मननुं गमतुं कीधुं रे. सजनी.

दुघले वूठा रे मेह. २

च्यार पोहोर निशि गइ अनुभवतां, शांमळ्य रे तुं, वेहेनी.

नारसियाचो स्वामी मोरी पत्य माणे, कर जोडी दासी थाउं तेहनी रे.
सजनी. ३

३५९. १. सुख. जाम्या. २. बुठा. ३. शाभत्य. तु. नारसीयाचो. थाउ.

३६०. रामग्री [रा. १४८]

मारा वालाजीमां कुसुम-चो भार नहीं रे, ते कहो कवण विचार,
रे सजनी. १

शात शाख्वर नें नवखंड प्रथवी, मेर-शिखरच मुख मांहे.
एटला शेहेत वालाजीने उर पर लीधो. ममर कमल जिम रह्यो रे. स० २

दिव्य वस्त्र में शिर परच ओढ्यां, ते मुनें लागे दुलारां.
ज्यारे शामलियो मोरे संगम्य आवे, उर ऊपरच करे चकचालां रे. स० ३

ता-चा गुण लख्मीवर जाणे, ज्येणे वाले शहियल निपायो.
नारसियाचो सामी भले मलियो, सुखनिध गोकुलरायो रे. मा० ४

३६०. १. कुसमचो. २. माहे. ३. मे. दुलारा. उपरच. चकचाला. ४. लषमीवर. नारसीयाचो. गोकलरायो.

३६१. रामग्री

जाणोवाणो थियो रे, बाइ, मारे जाणो थियो रे.
मारी नणदिये समाचार लह्यो रे, तेणे मारी शाशु समाचार लह्यो रे,
तेणे मारे लोकवेद धर्म गयो रे. बाइ० १

वार वे वार वारयो तुनें, विठला, मारग मीट न दीजें.
अंतरगतनी अंतर राखूं; दुरिजन देखाडी न दीजे रे. बाइ० २

परनारी-शुं प्रीत्य करे रे, चाले म्हाडुं जोई.
शनेह सुभाव ते नयण जणाए, जाणे जे विरलो कोई. वाड० ३
देह जाग्यो, पण शनेह म जाग्यो, जो हरि हृयडे वशिया.
भणे नारसियो : भूतन्य थोडा कृष्णकथाना रशिया. वाइ० ४

३६१. १. थीयो. वाई. थीयो. २ अतरगतनी. रापु देपाई ३. ४. (१-२) जायो. नारसीयो भुतल्य.

३६२ रामग्री

छोड, छोगाळी, घूंघटो; तारुं वदन निहाळे वीठलो.
तारुं वदनकमल उदे हवुं, जाणे शोल कलानो चांदलो. १
तारे अंग प्रेमल अगर जगो, ते गिरिधारीनें मन वशो.
कामीजन काम व्यापी रह्यो, कांइ ए रस माणे नारसियो. २

३६२. १. घुघटो. तारु. विठलो. तारु. चादलो. २. काई नारसीयो.

३६३. रामग्री

प्रीतडी बंधाणी ते में जाणीं. आंखडी अमियें भराणी. मारा० १
एकवारका घेरच आवो, मारा वाला, रजनि रंगभरि रमिये.
विषयी जननें दोहेला दाडा, ते आनंदें नीगमिये. वा० प्रीत्य० २
एवां एवां वचन शुणी श्यामानां हशिया अंतरज्यामी.
नारसियाचो स्वामी भलें मळियो, विरहवेदना वामी रे. प्रीत्य० ३

३६३. १. आपडी २. -भरी. रमीये. विषई. नीगमीये. ३. एवा एवा. नारसीयाचो.

३६४. रामग्री

भूतल अवतारनुं फल एह, जो मारा वालाजीशुं धरियें सनेह. भू० १

जप तप तीरथ देहडी न दमिये, निशदिन वालाजीशुं रगभरच रमिये. भू० २

मुगत गरीखी जेनें घेरच दासी, तो शुं कीजे बीजा अवर उपाशी ? भू० ३

जनमजनम तोरी दासी थाशुं, नारसियाचा स्वामीनी लीला गाशुं. भू० ४

३६४. १ भुतल धरीये. २ दमीये. रमीये. ३ गरीपी शु. ४. दाशी. नारसीयाचा

३६५ रामग्री

अंजन नोहे मारा करनुं, जुठडुं म बोल्य रे, सुरिजन लंपट. अं० १

सुरिजन, तोरी आंखलडी रे रेखा कोणे रे कीधी ?
तुं घर नोहोती, खरखरनी हूती, में मारे घर कीधी रे. अं० २

माहारा अंजनमां माणक मोती कस्तूरीमां भलियुं.
नारसियाचो स्वामी चतुर-शिरोमण्य, कोण दीठे चित चलियुं रे ? अं० ३

३६५ १. सुरीजन २ सुरीजन आपलडी रेपा. तु मे ३. कस्तूरीमा. नारसीयाचो चत

३६६ रामग्री

एक वार शामुं जुओ, शङ्कगा, मोह लागो मदनपति.
पुरुष तणे मन ईछा थाए, पण अबला-नेह न जाए. ए० १

आपणा पियुनें परहरि आव्या रगभरि रास रमेवा रे.
मन-चा भावमां नयग-मेलावो, अम-शुं कांय रिशाव्या रे ? ए० २

सुंदर वदन विकाशीने [हरि] हशिया चपल विशाल रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, सुफित जनम अमारुं रे. ए० ३

३६६ १ शकुणा. पूरप २. पीयुने –भरी काय. थाशे रीशाव्या.
३. नारसीयाचो. मलयो अमारु

३६७   रामग्री

नयणे नयण मली गयां, हूं छुं माहा सती रे.
धीरज्य मारुं नव्य रहे, विशरी देह गति रे. न० १
नयणां ऊपरय अमी ठरयां, वालोजी आवी मल्यो रे.
आलिंगन लीधुं वाले प्रेम शुं, तननो ताप टल्यो रे. न० २
पियुजी प्रगट पधारिया, सघले जाणे वात.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो, धन्य धन्य आजुनी रात्य. न० ३

३६७. १. गया. छु. वीशरी २ नयणा ऊपरय. ठरया॰ मल्या.
आलिगन. ३. पीयुजी. पधारया. शघले नारसीयाचो.

३६८.   रामग्री

दीवडो डोल्यो रे, मारो पियुजी न बोल्यो,
जो रे, बाइ, में नाथ घंघोड्यो. [सजनी.] १
हांउं हांउं हवे जाणी रह्या रे, कोये केनी पीडय न जाणे.
घंघोडी घंघोडीने हुंअ ज थाकी, अणदीधी सौख लागी रे. सजनी. २
अबळा-ची गत्य लीधी मारे वाले, मौन धरीने शूतो.
नारसियाचो स्वामी तो ज मले रे, जो रदयाभीतर हूतो रे. सजनी. ३

राग रामग्रीनां कीर्तन ८०

३६८. १. डोल्या पीयुजी. बाई मे. २. हाउ हाउ. जाणे. सोष.
३. शुतो. नारसीयाचो. हुतो.

[राग केदारानां पद]

३६९ राग केदारो [शृ. ३२७]

चांदलो शोहे रे ललाटे, कर अवलंबी रह्यो रे कपाटें. १
गिर पर गोहें राखडली रे, उर पर लेहेके हार रे.
गोफणडे घूघरडी घमके, नमि रहि ज्योवन भार रे. २
करत मनोरथ मोहन मलवा, शेज्या रची रसाली रे.
नारसियाचो स्वामी तेणी वेला कंठडे बांहोडली वाली रे. ३

३६९. १. चादलो. २ राघडली. घुघरडी. नमी रही. ३. नारसीयाचो.

३७०. केदारो [शृ. ३२८]

चांदलो शोहे म्रगानयणी, वालाजी-शुं रगभरच रमियें रेणी. १
टीली कीधी कुंकुम केरी, झान्य झबूके काने,
प्रेम धरीनें वदन निहालुं कंठ वलगी काने रे. २
नाना भाव धरुं पियु शार्थे करती केलिविलास रे.
नारसियाचो सामी भले मलियो, पूरी मारा मनडानी आश रे. ३

३७०. १. चादलो. रमीयें. २. कुकम. झबूके. ३. करत.

३७१. केदारो [शृ. ३२९]

चांदलो घूंघटडामां झलके, ते जोइने पियुनुं मन चलके. १
कंठ धरी वेहु बांहोडली रे, दरपण मांहे निहालुं रे.
ज्यम ज्यम रीझे शामलियो रे, त्यम त्यम संगे मालुं रे. २

शेजडियें सुदरवर पामी, वामी वेदना भारी रे.
नारसियाचो स्वामी शेय शुहाव्यो, राखिश उर पर धारी रे   ३

३७१ १ चादलो घुघटडामा जोईने पीयुनु २ वेला वाह्योडली माहे माछ ३. नारसीयाचो राखीश

३७२.   केदारो   [शृ ३३०]

चादलो चतुर चित चालो, दीपकनु अजवालु रे. चा० १
मरकलडो करि पियु-मुख जूए त्यम त्यम हरख न माए रे
शामलिया-शु नेह-झड लागी, जाणे रखे रेणी विहाय रे चा० २
धन्य ए रयणी, धन्य ए ज्योवन, धन्य किधला शणगार रे.
नारसियाचो स्वामी सुरत-शनेही, धन्य धन्य करत विहार रे. चा० ३

३७२. १. चादलो. करी जुए ३ कीधला नारसीयाचो

३७३.   केदारो

चादलो विनता वदननो पूरे मनोरथ मननो रे. चा० १
जाण्युं काइ काड थाय रे, वेनी, जाण्यु रदेथी न मेलुं रे.
सगम रमतां कर मनगमता, अंगोअंगे अंग मेलु रे. चां० २
कुरकटा, तुज कर्ने मान मागु, वालोजी रगमा रातो रे.
नारसियाचो स्वामी उर परच माले, रखे तुं वयण उचरतो रे. चा० ३

३७३. १. चादलो. २. काई काई बेनि मेउ. ३ मान. ३ नारसीयाचो रंगे.

२७४ [शृ ३३१]

चादलो कामाए कर करियो, जाणे शशि उपरच दिनकर धरियो चा० १
रुरुकण नेपुरिया वाजे, झाझरनो झमकार रे
सुरतसग्राम माहा रस वाध्यो, विलस्या प्राण आधार रे चा० २
हयिया उपरच हार हलरावी, नयणे नयण मेलावी रे,
नारसियाचो स्वामी मननो मोहन भजता पियु-मन्य भावी रे चा० ३

२७४ १ चादलो करीयो २ झाझरनो ३ मेलावि नारसीयाचो भजता पीयु–

२७५ केदारो [शृ ३३२]

चादलो भामिनीनो भावे, निरखता वालो प्रेम जणावे चा० १
मुख ऊपरच मुख धरा रही रे करता अमि-रस पान रे
वालेजी वान्य जणाव्यू मुझनें, तणे करि वाध्यु मान रे. चा० २
रातडली रढियाली कीधी, वालोजी सगम्य शोहे रे
नारसियाचो स्वामी माहारु जीवन, मरकलडे मन मोहे रे चा० ३

२७५ १ चादलो निरखतां २ मुख उपरच मुख अमी –पान करी मान ३ नारसीयाचो स्वामी

२७६ राग केदारो [शृ ३३३]

चादलो सकल गुणवतो, रग भरि रमता पियु मन्य गमतो चा० १
नयण सुफल वाला वदन निहाळु करता वात रसाली रे
अगोअग्य मारे अमि रस ठरियो, रगनी रेलमा माली रे चा० २

शेज सफल पियुजी उर लीधो, सफल थयो शणगार रे.
भणे नारसियो : सफल आ रजनी, सफल थयो अवतार रे. चां० ३

३७६. १. चादलो. २. अमी–. ठरयो. रेल्मा. ३. पीयुजी. सफल. नारसीयाचो.

३७७.	राग केदारो	[शृ ३३४]

चांदलो पियुजी-मनरंजन, श्यां सुख कहियें मारां, मोहन ! चां० १
कंद्रप कोटि शरीशो सुंदर, ते माहारे मन्य वशियो रे.
नयणें नयण निहाली रही रे. भाव धरी में भजियो रे. चां० २
सकल-कला-शशि शामलियो रे, सुरत-समे रस पीधो रे.
भणे नारसियो : फुली रह्या बहु, मननो मनोरथ कीधो रे. चां० ३

३७७. १ चादलो २. कदप. मे भजयो. ३. नारसीयो

३७८.	केदारो	[शृ. ३३५]

चांदलो शुहागी करचो, वालोजी जोइनें उर पर धरचो. चां० १
नयण सलूणो शामलियो रे, मरकलडे मन मोह्युं रे.
विह्वल थइनें कंठ वलगी, धीरज्य माहारुं न रयुं रे. चां० २
उदियो दिवाकर में नथ्य जाण्यो, सुरत-समे रस पीधो रे.
नारसियाचो स्वामी सुखनी लेहेरे, मननो मनोरथ कीधो रे. चास ३

३७८. १. चादलो. जोईने २ –सलुणो. थईने कठे. ३. उदयो. मे - नारसीयाचो.

३७९.	केदारो	[परि. २.२६]

इंदु, ऊतावलो था रखे आकुलो,
आजनी रात्य करच प्रात मोडुं.

हेज जाणी पियू शेज आव्या मोरी,
ईम कहुं छुं [हुं] जे चाल्य थोडुं. इं० १
निरमली ज्योति तुं प्रगट करच, दीवडा,
दीन जाणी दया नाथ कीधी.
आजुनी रजनी सफल धन्य माहरे,
नाथ[नी] बाथ उर मांहे लीधी. इं० २
कुरकुटा, तुं रखे शब्द मुख ऊचरे, अंग उछरंग मांहे रंग वाध्यो.
परच परचे पियुजिनें वश करी राखवा,
नव नवी भांत्यनो संग साध्यो. इं० ३
अंग लचको थयो, रंग रमियां बहु,
. मगन थइ प्रेमरससिंधु चाख्यो.
भणे नारसियो : त्रपत्य पामे नहीं,
अंक-भरि नाथ उर मांहे राख्यो. इं० ४

३७९. १. इंदु उतावलो. पीयु २ निरमलि योति. माहे. ३. मुष. उचरे माहे. पीयुजीने नवी नवी. ४. रमया थई. नारसीयो. पामे

३८०. केदारो

थिर थिर, चांदला, म करिश वेणु, प्राणजीवन घेरच आव्या रे.
वालि वालि अवतार धरीनें पूरण पुण्ये पाम्यां रे. थि० १
चांदो शोहे चांदरणियें रे, ज्यम तरोवर शोहें वेल्य रे.
गोविंदो शोहे गोरणिये, ज्यम हंसागवनी हेल्य रे. थि० २

वापइडो पियु पियू करे रे, कोयल मधुरो वाशे रे.
हुं तुजने वारुं, कुरकुटडा रे, रखे तुं वयण प्रकाशे रे. थि० ३
शाह्यर शोहे लेहरगडियें रे, लेहेरें लेहेर-तुरंगा रे.
नारसियाचो स्वामी भले मलियो गोपीश्वर गोविंदा रे. थि० ४

३८०. १. चादला. वाली वाली. पुण्ये पाम्या. २. चाद्दो. चाद्रणियें. ३. वापइडो पीयु पीयु रथे. ४ लेहेरडीये. नारसीयाचो

## ३८१.		केदारो

रेहे रेहे रे, चांदला, मान मागुं, आपी कर तणो कंकण पाये लागुं. [रहे०]१
राख्य राख्य रे, कुरकुटा, शब्द तोरो,
चण्य आपुं मोतीनो हार मोरो. रेहे०२
वारुं रे, वायस, म बोलिश प्रालें, रंग रमवा आवियो नाथ रात्यें.
उठो रे, नाहोलिया, निद्रा न कीजे, नारसियाचा स्वामी, रंगे रमीजे. रेहे० ३

३८१. १. चादला. ३ वायश. बोलीश. निद्रा. नारसीयाचा.

## ३८२.		केदारो		[रा. १०१]

प्राणनो प्राण ते आज मुझनें मल्यो,
तेणे करी मोरे रदे हरख वाध्यो.
पियु तणी शेज ते कुसुम-शुं में रची,
नवि नवी भात्यनो संग साध्यो. प्राण० १
नयण अंजन करी, निरखिया श्रीहरि,
प्रेम-शुं आविनें शांहि लीधुं.

अधुर चुंबन करी कुचफल [कर] ग्रहीं,
शनेहीं शामल मुख दीधुं. प्राग० २
धन्य ते धन्य ते आजुनी रात्यडी,
कृष्ण शर्थे रमी लाज लोपी.
नारसियाचो स्वामी विने वश आणियो,
शुं करे शाशुडी अधिक कोपी? प्राण० ३

३८२. १. दरप. मे. २. निरपीया गीहरी. शांही.

३८३. केदारो

क्रिम आवुं? मारां नेपुर वाजे, शाशू नणदी जाणे रे.
वालाजी-शुं विलास करंतां मनमथ-ची पिड ताणे रे. क्रिम० १
मारग जातां प्रेमल परागचो, ते क्यम रारवूं चोरी रे?
कोटिक भाण उदे थया रे, एवी राखडी मोरी रे. क्रिम० २
भमर गुंजारव करता दीठे, जाणे मदननी भेरी रे.
वालाजी-शुं वात करंतां दुरिजन रूंधी शेरी रे. क्रिम० ३
ज्यांहां तमे त्यांहां आवूं. मारा वाला, सार तणुं सुख मोटुं रे.
नारसियाचा स्वामी, कहुं तमने, मारे नथी कांइ खोटुं रे. क्रिम० ४

३८३. १. पयम्म. २. क्यम राषू रापवी. ३. गुंजारव. दूरिजन रुंधी ४. ज्याहा नारसीयाचा. काई षोटु.

३८४ केदारो [शृ. ३५८]

शांहिडुं लीधुं रंगभर रजनी शामलिया-संग्य रमतां रे.
मन तणा मनोरथ पूरत्या, सुख पाम्यां डर घर धरतां. शां० १

शान करी मारो शणगट टान्यो, सुरत-समे चाले लोपी ल्याज.
अधुर-अमृतरसपान करतां शारया मारां सघला काज. शां० २

याश शायें प्रीत बंधाणी, शुं करशे दुरिजन नें तात ?
ज्ये रस ब्रह्मादिकने दुर्लभ ते नारसियो जाणे वात. शा० ३

३८४. १ शाहीडु. २ अम्रत– –पान शारया शघला ३. ब्रह्मादिकने नारसीयो.

३८५. केदारो

वींटचो नजपति कामकटकदल आकडो,
सुभट सुंदर शार करच शंभाली.
हार शणगारनें पेहरवूं रतु वली,
रुणित कंकणी तुझ [पाग्य] धारी वीं० १
मत्त मानिनि सदा, मदन चडतो रंगे,
अग चित्र-शोभा वेध साध्यो.
मारी दोवट करु, अनंग-भूषण धर,
नाथ उर परच करुं, वचन गाजे. वीं० २
नारसियाचो स्वामी एकलो रडवडचो,
वेहु वल विना त्रिगुणक न चाले.
वेदवेदानमा अंतरगवगगे वश्या, [सन] सुग [चतु]र तेह ज माले. वीं० ३

३८५ १. वीटयो शमाली २ माननी चीत्र– –भुषण ३ नारसीयाचो स्वामी वेहु

३८६.　　केदारो　　[शृ ४२५]

जुवति-वदन चंद, कमोद कमलापति,
　　जडित चिंतामणि हेम रतने.
शेज पर शेजडी विलसे वालो वली,
　　रतिरणधीर मल्या बहु रे जतनें. जुवति० १
मानसर नाभ ने मराल मुगतावली,
　　चकित चकोर बहु शशिनि सगें.
उदधिल्हेरच ज्यारे नीरद उपरच् वली,
　　(त्यवारे) त्रपत्य त्रैलोक्य ते तेने रगे. जुवति० २
चपल चंपाकली वेण्य चो[क]ल भली,
　　झाल्य झबूकती मकर-मीटें.
कविवल [किम] कहे, (जेनी) दृष्टिगोचर नहीं,
　　नारसियो नाहोना पर्लग हेठे जुवति० ३

३८६. १. जुवती- -मणी. २ शिशिनी-. वलि. त्रईलो. ३ -कलि झबुकती नही नारसीयो.

३८७　　केदारो

रस तणी वात कहु, गाभलो, श्रीहरि,
　　आज मुझ मदिर आव्य चाली.
अवर बीजूं नथी, रारच कोये नव्य गुणे,
　　अंगोअंग भीडझु बाह झाली रस० १

कुसुम-चा हार ते कंठि भूपण धरी,
नयण काजल तणी रेख दीधी.
श्रगमशी श्रीहरि शामी चाली [जदा],
तेणे [समे] शामले शान कीधी. रस० २
ताणियो घूंघटो, वालियो ग्रणगटो,
चोलिया-ची कश कशी शनेह पोठी.
पियुनुं प्राक्रम कशुं, मन मा[धवे] वशुं,
अंगोअंग्य भीडतां रजनि चूठी. रस० ३
मे[ल] रढ रढिया, तुं कशुं, जाणे ?
त्येम अबला तणुं मंन हीशे.
जीवना जीवनप्राण तुं माह्रे,
रजनि-चा भोग ते प्रेम दीशे. रस० ४
आदि लीला भणी वात जे रस तणी
इम क[र]नां थकां दिवस टलियो.
दीपक-ज्योत्य ते शेज शामी शोहे,
आविने वालोजी अंग भलियो. रस० ५
लई आलिंगन अधुररस चुंबन,
कुच करें भीडिया, भोग कीधो.
त्रिपत थइ नारसियानाथ-सु नेह धर्यो,
मंन मान्या पछी बोल [दीधो]. रस० ६

३८७. १ श्रीहरी. वाइ. २ भुपण धरि. श्रीहरी ३. पीयुनुं रजनी. ४. रढीया ५. थका टलयो. आवीने भलयो ६ त्रीपत थई नारसीया–

३८८. केदारो [शृ. ३७६]

वात करतां वालम आव्यो, शांभल्य रे तुं, मोरी शही.
अंग मोडी आलिंगन लीधुं, चोलियां-कश त्रूटी गई वात० १
सुंदर वालो शामलियो रे, हुं माहारे मन्य गोरी रे.
रजनियें मुने रंग्य रमाडी, मनमथ-ईछा पूरी रे. वात० २
पुरशोत्तम शुं प्रीत्य बँधाणी, जेनें जर्णावे ते जाणे रे.
नारसियाचा स्वामी, दरशण दुलभ,मन्य मोटाइ न आणे रे. वात० ३

३८८. १. शाभल्य. चोलीया–. त्रुटी २. रजनीयें. पुरी. ३ बधाणो. नारसीयाचा. दुलभ मोटाई.

३८९. केदारो [शृ. ४२६]

-कोटि कंदर्पनुं दर्प हरवा हरि
भूतलें: भोगिनुं रूप लीधूं.
कामिनी-केल्य कीधां कलि-कालमां,
अधम जननें अभेदान दीधूं. कोटि० १
च्यार ज्युगनें विखे मुगत्य नहि नारचनें,
युग[ल-श्रु]ति सम्रन्य एम बोले.
तेह ज नारच विभचार-भावें भजे,
रंग-राती सदा संग डोले. कोटि० २
सारमां सार शणगार रस कीधलो,
तेह तणी जाण थइ मुख मोडे.
ए रस शुकदेव जेदेवे चाखियो,
नाथ लखमी तणो हाथ जोडे. कोटि० ३

अधम उद्धारवा प्रगटिया श्रीहरि,
पर्वू जाणी जे कोण गान करशे,
तेह तणी चरणनी रेण मांहे [रम्या]
नारसिया ज्येवा कंइ कोटि तरशे. कोटि० ४

३८९. १. हरी. भागीनु रुप. -दान. विपे. नही. ३. चाखयो. ४. प्रगटीया. श्रीहरी. नारसीया. कई.

३९०. केदारो

(तारा) चरणनी रेण छौं, इम कहे श्रीहरि,
प्रेम-भरचो पियू एम बोले.
जीवनो जीवन तुं छो रे, [हो] तारुणी,
त्रिभोवन पटंतरे नहीं तोले. तारा० १
पाय लागी प्रणीपय करी वीनवे,
वदन वदतो नाथ एम वाणी :
दोन दश आंगली लिंयु रे वलि वली,
ग्राहे थाओ मुज दान जाणी. तारा० २
एवां कायर वचन शुणिने हशियां,
लीधो उर पर वालो, प्रेम पीधो.
नारसियाचो स्वामी अति आतुर सदा
व्रजनारिये गिरधारी वश कीधो. तारा० ३

राग केदारानां कीर्तन २२

इति श्रीविष्णुपद समाप्त ॥

२९०. १. इम. पीयु. त्रीभोवन. नही २. एम. लोयु. वलि वलि. ३. एवा. शुणिने. नारसीयाचो. वृजनारीयें गीरधारी. ईति समाप्तः.

परिशिष्ट १ : अल्पपरिचित शब्दो

(आपेला अंक पदक्रम अने ते ते पदनी कडीना छे.)

अईसा ५-२ (सं ईदश-) : आवा 'इशा' पण मळे छे.

अधरास २२८-२ (सं. अधिरास) : रासलीलामां

अबूके २४३-३ : धबकारा करे

अलझी ३१९-१ : लोकोनी ओछी आव-जावाळी (शेरी)

अलवे ५८-२ वगेरे (दे. प्रा. अल्ल = नमवु; *अल्पद > प्रा. अल्लव-अभिनयपूर्ण रीते नमीने भरेलुं डगलु —ए उपरथी) : सौंदर्ययुक्त रीतना अभिनयात्मक भावथी

अविगत १-१ (सं. अव्यक्त) : अव्यक्त

अव्य १८५-३ (स. अथवा > अप. अहवइ > म. गु हवइ —हवि-नो विकल्प) : हवे

अशानपणे ३१३-२ (सं. असंज्ञ- > प्रा असन्न-) : अज्ञानथी, अजाणतां

अशावो १९७-३ (अरबी. असबाब) : सरसामान; अलकार

आख्य-पाख्य १५५-२ (सं. पार्श्व > प्रा. पस्स-ना द्वि-र्भावथी) : आसपास, फरते

आणिभाली २२८-२ (!) : बाजुए मूकी

आलंभे १४९-२ (सं. उपालम्भ- > म गु. ओलभ-) : ओळमे, ठपकामा

उघरेटी २१९-१ (दे. प्रा. उघ -निद्रा लेवी) : ऊंघवाळी, निद्रालु, ऊघथी भरेली

उजाती ३४५-२ (सं. उद्+या = कूदवुं; वर्त. कृ.) : कूदती —ठेकती

उपखाणा ३२६-३ (सं. उपाख्यान- > प्रा. उवक्खाण-) : उखाणा, समस्या

उमग्यो २२-१० (सं. उन्मग्न- > प्रा. उम्मग्ग-) : ऊभरायो, ऊलट्यो

उरझ्यां ३३१-२ (सं. *उरोध्यात- > प्रा. *उरज्झाय) : आतुर (ब. व., नारी.)

ओलग १६७–२ (सं. अव-लग्- सेवा करवी >प्रा ओलग्ग–) : सेवाचाकरी. **ओलग्यो** १६७ –१ : सेवायेलो

ओलवडे ३३४–१ (दे. प्रा. उल्हव = बुझावुं. ओलववु) : आडु वस्त्र राखीने

ओलवियो २२८–२ (सं. उद्-लप् = कहेवु) : कह्युं

करसे २१४–३ (सं क्रप्): मर्चे.

कशण ३३–३ (सं क्रप्): काप-डानी कस-दोरी (नान्य.)

खाखरय ३४३–१ : खणखोदथी, खेदाथी, ईर्ष्याथी

गाठा १९०–२ (सं. ग्रथ्-, ग्रन्थित– >प्रा. गट्ठिअ–) : गठिया, लुच्चा

गूह्य २३०-१ (सं. गुह्य– >प्रा गुज्झ) : गुह्य छानु (छानी वात)

गोडी १६२–२ (सं. गुटिका> प्रा. गुडिआ) : पाणीनी गोळी, चरवी

गोदी १७२-४ : आंगळां घोंचीने घुकलावी

घंटावल्य २१४–२ (सं. घण्टा-वली) : हाथीनी झूलनी घंटडीओनी पंक्ति

घाघली ३६०–२ : विह्वळ

घाटरवाल्यें १६९–२ : शिकारने लोभाववा करवामां आवती वाद्योनी मांडणी

चलु १५६–४ (सं. चुलुक = एक हथेलीनो संपुटाकार) : एक हथे-ळीथी मोढु धोवानी किया, चलु

उद्य १२१–२ (सं. वक्षस्) : कापडां-चोळीनो एक अंश

चोक २३४–३ (सं. चतुष्क– > प्रा. चउक्क–) : स्त्रीओनु मस्तकनु एक घरेणुं

जंबीर २१६-२ : (?) बजार

ज्यदिप २०३–२ (सं. यद्यपि) : जोके

जस १७–२ (सं. यस्य> अप-जस्सु) : जेनो

ताचा २५४–२ (सं. तथ्य– > प्रा. तच्च–) : साचो

तासी १९०–३ (सं त्रासित– > प्रा. तासिअ–): त्रास पामेला

दुलारां ३६०–३ (स. दुर्लभ–, प्रा. दुल्लह–) मनगमतां, वहालां

दोवट ३८५-२ (स. द्वि-वृत्ति- > प्रा. दुव्वट्टि-) : मनने फेरववानी वृत्ति
द्राहि ७७-२ (स दृष्टि- >अप. द्रहि) : दृष्टि, नजर
धीयडी २३६-४ (स. दुहिता- > प्रा. दुहिया > म. धु धिय) : दीकरी
धूमड २८१-३ (स. धूम्र-एक राक्षस) धाडपाडु
धेडी ८०-१ (मीली शब्द) : धेनु, गाय
ज्योवन-नाडा ३४४-३ (सं. यौवन-नाटक- > प्रा. ०णा-डअ) : जुवानीना चाळा-खेल
निमख ११७-२ (स निमिष) : पळ, क्षण, आखनु मटकुं मारवा जेटलो समय
न्यवहुं २१६-४ (स. नि-वह्) : छु
पनई २२२-६ पगनु एक घरेणु (पुरुषोनु)
परचरी २१४-४ (स. प्र-चरित) प्रचरी, प्रसरी, फेलाई
परवे २१३-२ (स. परवश, भी-ली उचार) : परवश, पराधीन, विवश
परालें १०६-३ : राते
पाखले ८-२ (स. पक्ष-) : चोगम चारे बाजु
प्रघल २४-१४ : पुष्कळ
प्रेमल ३६२-२ (स. परिमल) : परिमल, सौरभ
फूली ३३६१ (स. फुल्ल-) : नाकनी फूलना आकारनी चूनी
बांघोस ७-१ : हु बांधीश (भ-विष्य काळनु जूनु एक रूप)
बेला ३७१-२ (स. द्वि- > प्रा. बि-) : बे
भवाड्यां ३५८-२ (सं. भू धातु उपरथी सीधु प्रेरक रूप) : बनाव्यां, कर्यां
माह्यवर १०७-१ (!) सौभाग्य
मुसी २२८-३ वगेरे (?) (सं.मातृ-स्वसा > प्रा. माउस्सिआ) : मासी
मोंहरघ १९७-३ : मोरली
रावल ८१-१ : (स. राजकुल- > प्रा. राअउल-) : राजानु फरियाद लेनारुं थाणुं
लाबरहुं ९३-३ : (लक्ष्यार्थ) लोथपोथ

ल्हाहोले ७७-३ : सं. नाथ- > प्रा. नाह-) : नाहोलिये नाथे-व्हालाए

लीलज ४३-२ (सं.निर्लज्ज) : निर्लज्ज, बेशरम

वतां २२५-२ : चौथेला काम

वारही ३११-५ : अटकाववा-वारवानी क्रिया

विरोलवूं ८-४ : (दे. प्रा. विरोल-) : वलोववु

विभचारयां १४४-२ (स. व्यभिचरित-) : व्यभिचार करनारा (साथे)

वीनाणीनें २४७-३ (सं.विज्ञान- > प्रा. विन्नाण-) : चतर-मतर करीने

वेशंती २६२-१ (सं. वेशवती) : वेश्या, गणिका

शलाय ३४२-१ (स. शल्या-यते) शल्यरूप थाय खूचे

शह्यियल ३६०-४ : (?) मित्रता

शिथिल ३३२-४ (स. स्थल) : स्थल (कंठनु स्थान-गलस्थल)

शुरतकार २९७-३ : (सं. स्वर) : स्वर, सूर

सनेवट २४७-७ (सं. स्नेह-वृत्ति) : स्नेहसबंध

समदाप १४-४ (सं. समुदाय) : समूहमां

समल २१४-४ : (?) स्थळ (रण-समल = रणभूमि)

सहिं २-४ (सं. सिंह) : सिंह

साविज ९-२ (स. श्रावक- > प्रा. सावय-) : पशीना वधा

सोकं ७-१ (सं. सपत्नी >-प्रा सउक्की) : शोक्यो (ब. व. नो नपु. आ प्रत्यय)

हावज्यो २२३-४ (सं भूयास्त- प्रा. हुवेज्जहु) : होजो

हेलडी २२८-२ : हेल पाणी लाववाना वासणनी माडणी

परिशिष्ट २ : पदोनो अकारादि क्रम

(आपेला अंक पदना मुद्रित क्रमना छे. *फूदडीवाळां २०८ पदो आ पूर्वे छपायेलां जाणवामां नथी आव्यां.)

लाद्दोले ७७–३ : सं. नाथ– > प्रा. नाह –) : नाहोलिये नाथे–वहालाए

लीलज ४३–२ (स.निर्लज्ज) : निर्लज्ज, बेशरम

वतां ३२५–२ : चोंधरां काम

वारही ३११–५ : अटकचवा–वारवानी क्रिया

विरोलवूं ८–४ : (दे. प्रा. विरोल –) : वलोववु

विवचारव्यां १४४–२ (स. व्यभिचरित–) : व्यभिचार करनारा (साथे)

वीनाणीनें २४७–३ (सं.विज्ञान– > प्रा. विन्नाण–) : धतर-मतर करीने

वेशंती २६२–१ (सं. वेशवती) : वेश्या, गणिका

शलाय ३४२–१ (सं. शल्यायते) शल्यरूप थाय खूचे

शहियल ३६०–४ : (?) मित्रता

शिथिल ३३२–४ (सं. स्थल): स्थल (कंठनु स्थान–गलस्थल)

शुरतकार २९७–२ : (सं. स्वर) : स्वर, सूर

सनेवट २४७–७ (सं. स्नेह-वृत्ति) : स्नेहसंबंध

समदाय १४–४ (सं. समुदाय): समूहमां

समल ३१४–४ : (?) स्थळ (रण-समल = रणभूमि)

सहि २–४ (सं. सिंह) : सिंह

साविज ९–२ (स. श्रावक– > प्रा. सावय–) : पक्षीनां वधा

सोकं ७–१ (सं सपत्नी > प्रा. सउक्की) : शोक्यो (ब व. नो नपु. आं प्रत्यय)

हुवज्यो २२३–४ (सं भूयास्त– प्रा. हुवेज्जहु) : होजो

हेलडी २३८–२ : हेल पाणी लाववानां वासणनी मांडणी

परिशिष्ट २ : पदोनो अकारादि क्रम

(आपेला अंक पदना मुद्रित क्रमना छे. *फूदडीवाळां २०८ पदो आ पूर्वे छपायेलां जाणवामां नथी आव्यां.)

